# स्तवनावली

रचनाकार

स्वर्गीय महासती श्री जडावकंवरजी महाराज

प्रकाशक

महिला मण्डल, जयपुर

मूल्य सवा रुपया

# महासती जड़ावजी पर एक नजर

भूतपूर्व रत्नवंश सम्प्रदाय में अनेकों प्रभाव शालिनी सतिया हुई हैं। जिन में सती रम्भाजी प्रमुख हैं, उनकी कतिपय शिष्याओं में जड़ावजी का एक महत्व पूर्ण स्थान है। आप सेठों की रीयां में ब्याही गयी थीं, जहा बाल्य काल में ही पति के देहान्त हो जाने से, आपका संसार-सम्बन्ध टूट गया। वि० सं० १९२२ मे २४ वर्ष की अवस्था में आपने संयम-ग्रहण किया। आपका जन्म १८९८ में हुआ था।

आपका शारीरिक कद लम्बा, वर्ण गौर और व्यक्तित्व प्रभावशाली एव आकर्षक था। अध्ययन एव चिन्तन मनन भी गहनतम था। आप में सहज कवित्व शक्ति थी जो नर जीवन में दुर्लभ कही गयी है। इस तरह एक विदुषी महासती के सभी गुण आप में मौजूद थे।

आपने विभिन्न राग रागिनियों एव पदों की रचना की। ये रचनाए उपदेशात्मक, स्तवनात्मक कथात्मक एव आध्यात्मिक भागों में बांटी जा सकती हैं। "जैन समाचार" के सम्पादक श्री वाडीलाल मोतीलाल शाह की देख रेख में "जैन स्तवनावली" नाम से आपकी कुछ रचनाए प्रकाशित हुई थीं जिसकी पृष्ठ संख्या २०० तथा पद संख्या १५४ है। इसमें १९३२ से १९६६ तक की रचनाए संकलित हैं।

आपके विहार क्षेत्र मुख्यत जोधपुर, बीकानेर, अजमेर और जयपुर रहे। भोपालगढ में अपनी गुरुणी के स्वर्गवास के पश्चात् स० १९५० में आप जयपुर पधारीं और नेत्र की ज्योति क्षीण हो जाने से मोतीसिंह भोमिया के रास्ते पर सेठ सौभागमलजी ढड्ढा के मकान में २२ वर्ष तक स्थिरवास के रूप में रहीं। जहां क्रमश तपस्वी श्री बालचन्दजी म०, आचार्य श्री विनयचन्दजी म० शास्त्र विशारद मुनि श्री चन्दनमलजी म० प० मुनि श्री देवीलालजी म० पूज्य

श्री श्रीलालजी म० तथा श्री माधव मुनिजी म० बाबाजी पूर्णमलजी म० और पंजाब केशरी श्री मयारामजी म० आदि संतवृन्द की सेवा का लाभ आपको मिलता रहा ।

आप प्राय: ग्रीष्मकाल में दाह ज्वर की प्रबल वेदना से पीड़ित हो जाती थी । वि० सं० १६७१ में आपकी वेदना प्रबलतम हो गई । वि० सं० १६७२ के ज्येष्ठ कृष्ण १४ में दिनके २ बजे आपने अपनी जीवन लीला समाप्त की । आपका संयमकाल ५० वर्षों का था तथा आपकी कुल आयु ७४ वर्ष की थी । आपकी रचनाओं के रसास्वादन के लिए प्रकाशित 'जैन स्तवनावली' द्रष्टव्य है । अप्रकाशित रचनाओं के बारे में तो अभी कुछ कहना कठिन है, जब तक कि वे प्रकाश-पथ पर नहीं आ जाती । फिर भी यह तो मानना ही पड़ेगा कि जड़ावजी जैन कवयियों में आदर्श एवं मूर्धन्य थीं । आपका जीवन साधन और भावना का संगम-स्थल था, जहां मनको सच्ची शान्ति और आध्यात्मिक सुख की प्राप्ति होती है ।

दीक्षा दिवस सं २०२०,
माह सुद २
लाल भवन, जयपुर ।

मुनि लक्ष्मी चन्द्रजी महाराज
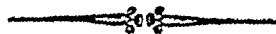
# गुरुणी तथा शिष्या परम्परा

१ श्री रुक्माजी महाराज

↓

२ श्री चन्दूजी म० स्वर्गवास वि० १६००

↓

३ श्री रानकुवरजी म० स्व० वि० १६२०

|

४ श्री रम्भाजी म० जन्म वि० १८७७, दीक्षा १८६६, स्व० १६४६

जडावजी म० | छोगाजी म० | पानकुवरजी म०

(जडावजी म० की शिष्याएँ:)

जतनकुवरजी म० | तेजकुवरजी म० (स्व० १६७५) | सिरेकवरजी म० (स्व० १६७८) | सूरजकुवरजी म०

(तेजकुवरजी म० की शिष्याएँ:)

केशरकवरजी म० | राजकुवरजी म० | सुगनकुवरजी म० | हुलासकुवरजी म० (दीक्षा १६६४, स्व०२०१६)

(हुलासकुवरजी म० की शिष्याएँ:)

श्री सुवाजी महाराज (दीक्षा १६७६) | श्री मैनाजी महाराज (दीक्षा १६२१) | श्री फूलकुवरजी महाराज (दीक्षा १६६४)

# विषयानुक्रमणिका

## सं २०२० का जयपुर का अभूत-पूर्व चातुर्मास

इस वर्ष महान् भाग्योदयसे श्रमण संघ के सरताज उपाध्याय १००८ हस्तीमलजी महाराजसा. की आज्ञानुवर्तिनी सुशिष्या श्री बदनकंवरजी महाराज सा मधुर व्याख्यानी श्री लाडकंवरजी म० परम विदुषी मधुर व्याख्यानी बाल ब्रह्मचारीणीजी श्री मैना सुन्दरीजी महाराजसा आदि ठाणा ६. का अभूत पूर्व चातुर्मास एवं निर्मला कुमारीजी की दीक्षा की खुशी के उपलक्ष में महिला मंडल ने जडावजी महाराजसा की प्राचीन संग्रहित ढाल चौपाई एवं भजनो को प्रकाशित कर स्तवनावली नामक पुस्तक के द्वारा आप के कर कमलों को स्नेह पूर्वक सुशोभित किया।

सुभाकांक्षी

मल्लि भगवती महिला मंडल

बारह गणगोर, जयपुर

# ग्रंथ प्रारंभ

ॐ नम ॥ श्री वितरागायनम ॥ श्रीपार्श्वनाथायनम ॥ अथ श्री नवकार मत्र लिख्यते ॥ णमोअरिहंताण ॥ णमोसिद्धाण ॥ णमोआयरियाण ॥ णमोउवज्झायाण ॥ नमो लोए सव्वसाहूण ॥ एसोपचणमोकारो- ॥ सव्व पावपणासणो॥ मगलाणच । सव्वेसींग ॥ पढमहवइमगल॥इति॥ श्री साधुजी महाराज श्री १००८ पूज्य रत्नचद्रजी महाराज ॥ तस पाट पूज्य श्री हमीरमलजी ॥ तस पाट पूज्य श्री कजोड़ीमलजी ॥ तस पाट पूज्य श्री श्रीनेचदजी महाराज ॥ तत्प्रसादात् ॥ साध्वी श्री जडावकु वरकृत । दुहा । कवित । छंद ॥ श्लोक कु डलिया । सवैया । ढाला । चोढलियो । सप्तढालीयो । सलोको । लावणी । पद डोडीया ॥ उपदेसी ॥ श्रावक जगन्नाथ वारणा करी ।

# श्री जैन धर्म उपदेशमाला

"जीवरे तू सील तणो कर सग, "यह राग,

जीवरे तूं जाप जपो नवकार॥ और मंत्र सव देखतांरे मंत्र वडो नवकार। भाव सहित भवीयण भजोरे चवदै पूरवरो सार ॥ जीव॰ १ ॥ और रग पतगनारे एह किर्माची रंग । गुण अनेक वखाणियारे । ग्यानी पांचमे अंग ॥ जीव० २ ॥ सिवकुवर समपत लईरे ॥ सीलवती सुरसाल ॥ सूधै मन समरण कीयोरे ॥ सर्प थइ फुल-माल ॥जी. ३॥ अगनी जल गज सींघनोरे ॥ भूत प्रेत भय जाए ॥ दुसमण से सज्जन हुवेरे । विष अमरत सम थाय॥४॥ रोग सोग भय आपदारे । दूर टले ततकाल ॥ निछडिया वाला मिलेरे ॥ वछत भोग रसाल ॥ जी.५ ॥ भणतां गुणतां सीखतारे । आतम उजल थाए । तूटै वसु कर्म बंधनारे । अजर अमर

पद पाए ॥जी. ६॥ इण लोकै सुख संपदारै ॥ परभव देव बिमाण । उत्कृष्टी भगति करै तो । पावै पद निरवाण ॥जी.७॥ इत्यादिक गुण छै गणारै । कया कठालग जाए । गावै निज मुख सरस्वतीरै ॥ तोपिण पार न पाए ॥ जी० ८ ॥ १६ सै ६३ भलोरै ॥ जैपर में वरसाल ॥ जाप जपै जडावजीरै । कातिक दीपकसाल ॥ जी. ६ ॥ इति ॥

## चोवीसी का २४ पद

दोहा ॥ अरिहंत सिद्ध समरुं सदा । आचारज उवझाय । गुण गाऊं जिनराजना । विघन हरो महाराज ॥ १ ॥ ढाल ॥ रसीयाना गीतनीः ॥ पद १ ॥अंतरजामी हो आद जिणंद तूं, तो सम अवर न कोय हो ॥ सोभागी ॥ तूं सिवदाता हो भिरातां जगतैमै द्रीज्यो दर्शण मोय हो । सो. । अं: २ ॥ आकडीः मा मरुदेवा रो ओदर उपन्या । नाभि रायजीरा नंद हो । सो० । जुगल निवारण जननी तारैवा । प्रगट्या पूनम चंद हो । सो० । अं: २ ॥ कंचनवरणी हो धनुष्य पांचसौ । दिप २ करती देह हो ॥ सो: ॥ लाखचौरासी रो पूरव आउखो । जांणै देखे तेह हो ॥ सो० ॥ अं. ३॥ प्रथम परण्या हो पद्मणि प्रेमसूं । प्रथम वैठा राज हो ॥ सो. ॥ एकसौ पुत्र दोए पुत्री भली । सार्या आतम काज हो ॥ सो. ॥ अं. ४ ॥ भोग तजीनै हो संजम आदर्यो । कीनो पर उपगार हो । सो. । आद करी जिन धर्म दीपावियो ॥ तीरथ थाप्या चार हो० । सो. ॥ अं. ॥ ५ ॥ वीस हजार हो मुनि मुगतै गया ॥ समणी सैंस चालीस हो । सो:

केवल लेने हो कारज सीध कर्या । जग तारण जगदीस हो ।। सोभाः अंतरः ६ ।। चोत्रीस अतिशय हो । वाणी ३५ सें ।। द्वादश गुण भरपूर हो । सो. । नित २ होज्यो हमारी दणा । पोह उगते सूर हो । सो. अंतरः ७ ।। प्रथम राजा हो प्रथम मुनिवर । इणहीज भरत मोझार हो ।।सो.।। प्रथम तीर्थंकर प्रथम केवली । खोल्या मुगत दुवार हो ।। सो. ।। अंतरः ८ ।। समत १९ सैं हो । माहा सुध १३ नैं । जैपुर सेपकाल हो ।। सो. ।। वे कर जोडी हो वदैं जडावजी । करज्यो हमारी सार हो ।। सो. ।। अंतर ९ ।। इति ।।

## ।। पद २ ।।

जम्बूद्वीप रा भरतमें ।। अजोध्या विख्यात।। अजत नमो जितसत्रू राय तुंमे पिता । विजियादे तुंम मात । अजः आकडीः १ ।। तीन ग्यान साथे लिया ।। उदरवस्या नव मासें । जीत करी जननी तणी । नरपत दीस्या वासैः ।। अजः २ ।। जनम थयो जिनराजनो । अजतं दीयो तस्रं नामें ।। अ. ।। भोग तजी संजमें लियो । पोहोत्या अविचल ठांमें ।। अजः ३ ।। सुखदाइ साथे हुवा । लारैं रया दुखदाए । अ. ।। धर्मीनें धन सूंपियो । पापी दिया छिटकाय ।। अजः ४ ।। तुंम सरीखा मोए टालसी । तो कुंण तारणहार ।। अ. ।। विरद विचारी आपरो । मारी वेगीज्योसार ।। ।। अ. ५ ।। कै म्हलायत मांपडी कै मुज कर्म कठोर । अ. छिवडा ज्यो अवसर नहीं । तो राखीज्यो थोडीसी ठोर ।। अ. ६ ।। भविएछूं अथवा नहीं । सो तुम देवो बताय ।। अ. धीरज धर करणी करु । मनको भ्रम मिटाय ।। अ. ७ । तीरथंकर हीरटा

नहीं । इण दुषमी आरा मांय ॥ अ. अतिसै नाणी छै नही । मैं किणनै पूछू जाय ॥ अ. ८ ॥ १९ सै बरसे ५३ नै ॥ बद पक्ष फागण मास ॥ अ. ॥ जैपुर मांए जडावजी ॥ एम करै अरदास ॥ ॥ अज ॥ ९ ॥

## पद ३ ॥ राग पिचकारी नी

रे जिन संभव सांचो ॥ वा प्रभूकूं अब जांचोरै ॥ जी. आ. १ ॥ लेवो सरण मरण नहीं आवै किम नट थइने नाचोरे ॥ जि. २ ॥ नरप जितारथ । सैंन्या राणी । तस सुत चरण चित राचोरै ॥ जिं. ३ ॥ इंद्र जालरा ख्याल जगतमै ॥ ते किम जाण्यो सांचोरै ॥जि. ४ ॥ अलप दिनाकी है जिनग्यांनी ॥ क्याने करमरस पाचोरै ॥ जि. ५ ॥ सब स्वारथ के न्याती गोती ॥ मोए ममत मत माचोरै ॥ जि० ६ ॥ असी जाण आंण मन समता छोड़ कूटंमको लांचोरै ॥ जि. ७ ॥ तज अग्यान नैत्रसूं ॥ करम कागद तुम वांचोरै ॥ जि. ८ ॥ अब ही चेत देत गरु हेला ॥ जांण जगत सुख काचोरै ॥ जि. ९ ॥ ५३ नै साल जडाव जैपुर में । प्रभूजी मुज कर वांचोरै ॥ जि. १० ॥ इति ॥

## पद ४ ॥ लावणी

धन ४ जंबूकवरजी जोवन में समता । नगरी अजोध्या भलो विराजै । कंचन कोटकी ओट सही । सुंदर मंदिर बाग बावड़ी । चौरासी बाजार कही ॥ सम्बर राजा इदकदीवाजा ॥ सिधारथ पटनार भइ । श्री अभिनंदण नाथ निरंजण । भव दुख भंजण आप सही ॥ आकडी. १ ॥ तसूं कूंखै तुम आण

उपन्या तीन ग्यान ले लार सही ॥ चउदे सुपना रजनी अंते देखी जननी हरष भई ॥ तेडाया पंडित परभाते ॥ सुपन अर्थ सब बात कही ॥ श्री. २ ॥ तुम कुल मंडण अरिकुल खडण ॥ अष्ट कर्मकूं जीत सही ॥ राज काज कर संजम लेसी ॥ डेरा देसी मुगत मई ॥ सुण सुख पाया गीत बधाया ॥ दान मान दे साख दई ॥ श्री. ३ ॥ गरभ अवद पूरा कर जन्मा ॥ सुभ वेला शुभ वार सही ॥ चोसठ इंद्र छपन कुंवारी ॥ हिल मिल मंगल गाय रही ॥ पांच रुपकर मेरु ऊपर ॥ जिगमिग जोती लाग रही ॥ श्री. ४ ॥ बाल ख्याल कर जोबन वयमें, परण्या पदमण नार सही ॥ राज पाट विलसी जग लीला, भोग रोग सम जाण लई ॥ कर डिढताइ रीध छीटकाई ॥ एक वरस लग दान दई ॥ श्री.५॥ चोथे ग्यान लियो जब संजम ॥ भ्रम भरम होए करम दई ॥ केवल ग्यान ने केवल दर्शण ॥ लोकालोक प्रकास भई ॥ तीरथ थाप्या कर्मने काप्या ॥ जन्म जरा कोई मरण नहीं ॥ श्री. ६ ॥ ३४ स अतिशय पेंतीस वाणी तुम सम नाणी आर नहीं । सशय छेद कियो चित निरमल । समकित जोत प्रकाम भई । केई भनारी पार उतारी कारज सारी मुगत्त लई ॥ श्री. ७ ॥ उपगार तार निज आतम ॥ साध साधवी लार लइ मुगत्त पधार्या कारज सार्या । अजर अमर पद थान सही । तीन लोक के मस्तक ऊपर । जोत में जोत प्रकास भई ॥ श्री. ८ ॥ समत १६ से वरस ५३ नें । । प्रभू महिमा गुण पार नहीं ॥ पिण लवलेस देस जैपुर में ॥ जोड लावणी जडाव कइ । फागण वद १२ स रविवारें । दर्शन दीजो आप सही ॥ श्री. ८ ॥

## पद ॥ ५ ॥ देसी सहेल्यांए आंबो मोडींयो

श्री सुमत जिनेसर वंदीए। कर जोड़ी हो नीचो कर सीस कै- विघन टलै समपत मिलै। सुखसाता हो पामै सूं जगीस कै ॥ सु. १ ॥ आंकड़ी ॥ कुसलपुरी नगरी भली तिहां सोभै हो मेघ- रथ राजान कै। आंण अखंडत तेहनी। प्रजा पालै हो। निज पूत्र मान के ॥ सू. २ ॥ तस राणी मंगलावती, जिन जायो हो त्रिलोकी नाथ कै। सुरनर नित पाए पड़ै। अंग मोड़ी हो जोड़ी दोए हाथ कै ॥ सू. ३ ॥ दिन उगै हरष बधावणा ज्यारै सायकहो। श्री सुमत जिणंदके। दूजा देव मनावैतां। किम भटको हो मूर्ख मतिमंद कै ॥ सू. ४ ॥ आगै कदे देख्या नहीं। जो देष्यां तो नहीं पायो मर्म कै ॥ सुगुरुसे डरतो रयो कुगुरु घाल्यो हो। मिथ्यात्वरो भ्रम कै ॥ सू. ५ ॥ काल अनंता भटकतां ॥ अबकै मिलिया हो। तूं साचो देव कै। चर्ण समीपे राखज्यो। कर जोड़ी हो सारु नीतसेव कै ॥सू ६॥ जगतना देव डरावणा। केइ बैठा हो स्त्री ले संग कै ॥ शस्त्र विविध प्रकारना। रुंठा टूंठा हो कर रंग विरंग क ॥ सू ७ ॥ जोग मुद्रा प्रभू आपरी। भवि पामै हो देख्या वैराग कै ॥ राग द्वेष जिणमें नहीं। सांचा जाण्या हो। सोइ बीतराग कै ॥ सू. ८। १६ सै वरसै ५३ नै। जैपुर मांइ हो। फागण वद बीजकै ॥ दीज्यो दर्शन जडावनै ॥ भरपाइ होए मोटीरीज कै ॥ सू ६ ॥

## पद ॥ ६ देशीं जवाइ मानै प्यारां लागोजी

कुसुमपुरी नगरी भली। प्रभूजी हो श्रीधर राए उदारोरै।

पदमप्रभू प्राण अधारोरै । होजी मांनै जिम जाणो तिम तारोरै । आंकडी. १ ॥ सुसमादे पटराणी । प्र । तम कुले अवतारोरै ॥ प. २ ॥ जग सुख जाणया कारमा । प्र. । लीनो संजम भारोरै ॥ पद ३ ॥ अजर अमर पदवी लइ । प्र. । सफल कियो अवतारोरै ॥ पद ४ ॥ सिवरमणीरा सायबा ॥ प्र ॥ अविचल प्रीत नधारोरै ॥ पद ५ ॥ तुम माता तुम ही पिता । प्र. । तुम ही भ्रात हमारोरै ॥ पद ६ ॥ खाना जात गुलामनै । प्र. । जिम जाणो तिम तारोरै । पद ७ । जैपुर मांए जडावैरी । प्र. । विनतडी अवधारोरै ॥ पद ८ ॥

## पद ७ ॥ देसी रीडमलरी

वाणारसी नगरी वखांण । जी प्रभूजी । प्रतिसैण राय सुजाण । हे राणी पोमावती माता तुमै तणीए । हाए । देव निरजणोए । भव दुख भंजणोए । सुपार्श्वनाथ आकडी १ ॥ रूलियो मै तो काल अनंत । जी० । अजेय न आयो भव अंत । हे म्हेर करीनै सनमुख गकज्योए । हाएं ॥ २ ॥ तूंही निरंजण दीनदयाल । जी । मेटो मारी भवदुख जाल । हे सेवक जाणीनै । सरणे राखज्योए । हाएं ॥ ३ ॥ हूंछूं अनादि अधम अनाथ जी । दुरबल जाणी राखो निज साथ । हे चर्ण लागीने करस्यूं चाकरीए । हाए चाकरीए । हाऐ ॥ ४ ॥ पाउं दर्शण अवर न चाए । जी० । पुदगल भरमै मिटाए । हे ल्हर उतारो मोह मद छाकरीए । हाऐ ॥ ५ ॥ आतम अनुभै चितै समाध । जी० । दर्शन चारित्र ग्यानै अराध । हे हुकम हुवै तो हाजर होवस्यूं ऐ । हाऐ । ६ । म्हा सरीसा

नहीं आवै थांकी दाए। जी०। तोपीण थांरीठोरै वताए। हे दूर रही ने सनमुख जोवस्यूं ए। हाऐ ॥ ७ ॥कुधातु कनक सम थाए ।जी०। पथर पारस नाम धराए। हे हूतो साख्यापत। पारस ध्यावस्यूं ए। हाऐ ॥ ८ ॥ १६ सै ५२ नै। सुखकार। जी०। साहा सुद जैपुर १२ स रविवार ॥ हे पार्सस्र प्रसन्न थावो जडावस्यूं ए। हाऐ ॥ ६ ॥

## पद ८, देसी डफकीं

चंदा प्रभू। चंदा प्रभू। सरण होज्यो तेरो। चं०। आंकड़ी। ॥ १ ॥ लोक एकमैं तपत जोतकी। सकल प्रकास चंद केरो। चं०। ॥ २ ॥ म्हासीणराए लिखमा पटनारी। अंगजात तूं तिणकेरो। चं०। ॥ ३ ॥ नाम लियां नवनिधि घर आवै। भजन कियां मिटै भवफेरो। चं० ॥ ४ ॥ सरप सिंघ अगनी जल केरो। भूत-पिसाच टलै चैरो। चं० ॥ ५ ॥ सात बीसन अरु पाप अठारा। करकै भजन तीरै तेरो। चं० ॥ ६ ॥ संकटमांहे सरण तियारो। जो तुम नाम जपै गैरो। चं० ॥ ७ ॥ माए मनोरथ चंद पीवणरो। पग लंछण चंदः केरो ॥ चं ॥ ८ ॥ तिणथी नाम चंदजिण थाप्यो। जनक जात मिल सब तेरो। चं० ॥ ६ ॥ १६ स ५३ न तेरस नै। म्सीवार सुद पत्त केरो। चं० ॥ १० ॥ जैपरमांए जडाव कहत है। अब तो न्याव करो मेरो। चं० ॥ ११ ॥

## पद ६, देशी भींलारीं

प्रभू जी नवमा सुरग थकी चव नरभव पायो हो। श्री सुवध जिणंद। तीन ग्यांन ले जननी कूंखे आयाहो। जिणंद। आंकडी० ॥ १ ॥ प्र० काकंदी सुगरीवधराधिप राया हो। श्री०।

चनदै सुपना देख रामा सुत जांया हो। जि० ॥ २ ॥ प्र० । चौसट इन्द्र मिल कर म्होछव आया हो। श्री० । छपन कुंवारी हस २ मंगल गायाहो। जि० ॥ ३ ॥ प्र० । धनुष्य एकसौ काया। उजल-नरणी हो। श्री० संजम लेनै कीनी उत्तम करणी हो। जि० ४ ॥ प्र० ॥ मनडो मारो मिलजानै । उमायोहो । श्री० । तन मन भ्रमै । पिण आयो नहीं जावैहो ॥ जि० ॥ प्र० ॥ दीज्यो दर्शण ओर कछु नहीं आउं हो। श्री० महल स्हल कर। फिर पाछी नही आउंहो। जि० ॥ ६॥ । प्र० । सुनध सुवध दाता जगजीनन मिरात हो ॥ श्री०॥ जे तुम ध्याता ते पावै सुखमाताहो। जि० ७ । प्र० । माहा सुद पुनम ५२ ने । जैपुर वासो हो। श्री । जिनगुण गाया । पाम्या परम हुलासोहो। जि० ८ । प्र० । वे कर जोड जडाव कहै। मोए तारो हो। श्री. भवसागरमे भटकत पार उतारो हो ॥ जि. ९ ॥

## पद । १० । सीतलजिन २ सार करो मेरी

डीडसिण राय नंदा पटराणी। हाजी प्रभू जन्म दीयो धन मा तेरी ॥ सी. १ ॥ तपत मिटाई जनक तन केरी। हां. । गर्भ थकां मा कर फेरी ॥ सी. २ ॥ तिणथी नाम सीतल जिन थाप्यो । हा. ॥ गुणने पंसो भै भारी ॥ सी. ३ ॥ जनम मरण की लाय बुझानो ॥ हा. ॥ वेग मिट मुज मन फेरी ॥ सी. ४ ॥ सात कर्म की सीन्यां सजीनै। हाजी : मोहमहिपत मोए लियो गेरी ॥ सी. ५ ॥ मैं बलहीन मोहमहिपत व्होत दुख पाऊं । हा. । तुम लग आण न दै वैरी ॥ सी. ६ ॥ १९ सै ५२न तेरस नै

। हा. । अबीर गुलाल उडै वैरी ॥ सी. ७ ॥ चावत दर्शन जड़ाव जैग्रमैं । हा. नहींतो वतावो । मुक्तिकी सेरी ॥ सी० ८ ॥ इतनी अर्ज गरजमै कीनी । हा. कै राखो चरणारी चेरी ॥ सी० ६ ॥

## पद ॥ ११ । देसी मोत्यांरो गजरो मूली

सिहपूरी सुखकारो । विनराज । विनय दिनारों । सुभ वेला सुभ वारो । तसूं कूंप लियो अवतारो । सूंणो भव प्राणी श्री हंस भजो वरनांणी । आंकड़ीः १ ॥ मात पिता सुख पाया । सुभ सुपन विलोकी जाया । इंद्र चोस्ट मिल आया । इंद राण्यां मंगल गाया । सु. २ ॥ आतम अनुभव चीनो । तज भोग जोग तुम लीनो । समग सुधारस पीनो । लियो केवल ग्यान नवीनो सुभ ३ ॥ लोकालोक उजासो । कियो घाती कर्मनो नासो । जोतमें जोत प्रकासो । तिहां देखो जगत तमासो । सु. ४ ॥ तूं देवन को देवो । एक चीत करुं तुम सेवो । निज चरणामें लेवो । मुजै मुगतरीजमै देवो । सु. ५ ॥ कुगुरूको भरमायो । मन हिंसा धर्म वतायो । काल अनंत गमायो । अजू तुम दर्शन नहीं पायो । सु. ६ ॥ पुदगलको रस पाको । मैं तो जन्म मरण कर थाको । दर्शन होसी थांको । जद मिटसी रुलवो माको । सु. ७ ॥ थें छो पर उपगारी । अव राखो लाज हमारी । चाउं सेव तुमारी । मैं तो भर पाइरीजवारी । सु. ८ ॥ १६ से ५३ नै वद फागण १४ से दिनै । कवे जड़ाव ते धनै । तुम ध्यान धरै एक मनै । सु. ६ ॥

## पद ॥ १२ । राग मोटी जगमे सौवणी

वासपुज्य जिन वंदीए । जीकांइ कर जोड़ी हो उठी प्रभात ।

दर्शन ज्यारा दिल बसै । अब दीज्योहो किरपा कर नाथ आकडी ॥ १ तुम मात तुम ही पिता । जीकां, तुम भ्राता हो । मुज प्राण आधार । तुम जिन देव न दूसरो । इण जगमें हो काट तारण हार ॥ वामः २ ॥ कामधेन चिंतामणि ॥ जीकां, मनवंछीत हो पूरें पुनजोग ॥ तेतो सुख ससारना ॥ थां त्रूठां हो सुधरै परलोग ॥वा० ३॥ भवसागर मे भटकता । दर्शन करहो देखीजो मोए। नाच किया मैं नवानवा ॥ नटवा जिम हो रीजावा तोए ॥ वा. ४ ॥ ज्यों सुप माह्यवा ॥ जीकां देपीनें हो मुंज नाटक नाच ॥ तो तुम राखो तुम कनें ॥ नित रहस्यूं हो चरणामैं राच ॥ वा.६ ॥ कै दुख पाया देपनें ॥ जीका.॥ तो कह दोहो तू अब मत नाच ॥ रीज खीज दोन्यू भली । नहीं नाचू हो मानू तुम वाच ॥ वा.६ ॥ पुन्यहीण करणी विना ॥ मै गूंथी हो मनोरथ माल । पिण तुम विरद वीन्यारनें । पूरीज्यो हो सही दीनदयाल ॥ वा. ७ ॥ तारें निश्चै आतमा ॥ जीका जिन करणी हो कुण तारण हार ॥ कीनी इतनी विनती ॥ तुम आगें हो माज्यो त्रिवहार ॥ वा. ८ ॥ १६ से ५३ न ॥ भलो ॥ जीका. दिन दसमी हो वद फागण मास ॥ जैपुरमाए जडावनें ॥ राखीज्यो हो चरणारी दास ॥वा. ६ ॥ इति.

## ॥ पद ॥ १३ ॥ देसी चडघर ताल लागीरै ॥

विमल मत दीजिएजी कर किरपा मुज माम ॥ घटै नही थुंथ आपरी ॥ जस लेना न लागै दाम ॥ विमल जिन देवें हमारोरें लागें प्राणज्यु प्यारोरें ॥ आ. १ ॥ करमदवेमोम-

णीजी। लग रहे तणोताण ॥ किण वीद साजू हाजरी ॥ मानै नहीं आवै अवसाण ॥ वी० २ ॥ चाकर मांगे चाकरीनी ॥ ठाकर मांगे काम विना रुजगारनी चाकरी ॥ तुम क्युनी कराओ स्याम ॥वी० ३॥ गुणवंतानै तारस्योजी । तो कांइ आसान । पापी पलै पलै लागियो अब आपै वधाओ मान ॥ वी. ४ ॥ धनमैं धन सब कूडताजी ॥ ए जगमैं वीवहार ॥ निरधनळूं नेह दाखवो ए उतम वर आचार ॥ वी. ५ ॥ दिया अछता ओलंभाजी ॥ खमज्यो वारमवार ॥ सेवट तारैं आतमा । पिण आप छो साखीदार ॥ वी. ६ ॥ सुण सुख पाया सांमजी ॥ तो मुकत करोरीजवार ॥ खीज्या तो खिज मतै करो ॥ कैकाडो संसारळू वारैं ॥वी.॥ कीनी इतनी विनतीजी । भावै जाणमजाण॥१९सै ५२ नैं भलोजी ॥ जैपुर सेषै काल ॥ फागण वद १ मै दीनै । प्रभू नामैं मंगल माल ॥ वी. ६ ॥

## पद ॥ १४ ॥ देसीनगरी काकंदी हो मुनीसर आइए

जसवंती राणी हो ॥ जिनेसर ॥ माता तुमै पीता ॥ सिंहरथ नामै भूपाल ॥ सुण सुखदाता हो जगत विख्याता हो ॥ श्री० जिन ॥ अनंत जिणंद तु ॥ आ. १॥ तुम सम ग्याता हो ॥ श्री० नहीं इण भरतमें दुषमी पंचम काल ॥ सु० ॥ २ ॥ मनमें उमावो हो । श्री० नित पासै रहूँ । पिण मुज कर्म कठोर ॥ सु० ३ ॥ सलाहा करता हो श्री० थाळूं मिलणेरी ॥ विच २ कर रैया जोड ॥ सु० ४ ॥ सगत अनंती हो ॥ श्री० ॥ तुम हम सारैषी ॥ अंतर मेरू समान ॥ ॥ सु० ५ ॥ इचरज मोटो हो ॥ श्री० टोटो भज

तैम ॥ रूम रया भगवान ॥ सु०६ ॥ मैं अपराधी हो ॥ श्री० ॥ नाथी दुपै सया । नहीं पडी समकित सूज ॥ सु० ७॥ माफ करीजे हो ॥ अविनय असातना ॥ जाण अग्यानी अबूज ॥ सु० ८ ॥ समत १६ से हो ॥ श्री ॥ वद अमावस्या ॥ ५३ नै । फागण मास ॥ सु० ६ ॥ जैपुर मांए हो श्री. जाण जडावनै ॥ निज चरणारी जी दास ॥ सु० १० ॥

## पद ॥ १५ ॥ देसी आज सहरमै जीहजामारूंसीप:

धर्म जिनेसर मुंज हीवडै वसो ॥ भूलूं नही खीए मात । सूरी- जिन उठत बैठन सूवत जागैतां ॥ याद करूं दिनरात ॥ श्री ॥ ध० आंकडी ॥ १ ॥ पुदगल वैरी ओ मुंज केडै पडयो ॥ मीठो ठग दुख-दाय ॥ सूं० मानीधकारी हो ॥ तुंम सरीखा हुवै । तो देउं दूरे हटाय ॥ सू ॥ ध० २ ॥ जिण तिण आगै हो । करीए कूसामदी । पेट भराइ काज । सूं । गरज न सारी हो निज गुण भूलियो ॥ ते दुख खटकै आज ॥ सूं ॥ ध० ३ ॥ राग ने धेक दोनु पोलिया । चौकी चारै कपाय ॥ सूं ॥ आठ करमरो ओ घेरो लागीयो ॥ मिलण न दै म्हाराय ॥ सूं० ॥ धर्मजी० ४ ॥ तन मन तरसैहो ॥ दर्शन देखवा ॥ वरस रया मुंज नैण ॥ सू ॥ लगदवीवा तो हम पासै नहीं ॥ किण विध आउं सैण ॥ सूं ॥ ध० ५ ॥ चद चकोरा ओ मोरा मोहयजूं ॥ पतिवरता पति जेम ॥ सू ॥ इण विद चाउं ओ दर्शण आपरो ॥ पिण आइजे केम ॥ सू ॥ ध० ६ ॥ कीना विलाप ओ विनध पेर तुम कनै ॥ कर करूणा कीरपाल ॥ सूं ॥ दीजे दर्शण परसन

होयनै ॥ सेवग सामो जांण ॥ सू ॥ ध० ७ ॥ तुंम विरहे दिन दोरा नाथजी ॥ खीण जावै छै मास ॥ सू ॥ पतलीचालै ओ पाणी खमै नहीं निस दिन जाय उदास ॥ सू ॥ ध० ८ ॥ समत १६ से ओ वरस ५३ न भलो । फागण सुध पख वीज ॥ सू ॥ जैपुर माए ओ जोड़ी जड़ावजी ॥ सुंण लीज्यो धर रीज ॥ सू ॥ ध० ६ ॥

## ॥ पद १६ ॥ राग पंथीडा वात कहूं धुर छेहनैरे ॥

सरणो हो सरणो संत जिणंदनोरे ॥ दीज्यो भव २ मांयरे॥ कीजे हो २ किरपानाथजीरे ॥ लीज्यो चरणा मांयरै ॥ सरणो. आंकड़ी. १ ॥ नगरी हो नागपुरी रलीयामणीरे ॥ वसुसेण भोपालरे ॥ अचलारे २ तसू पटरागणीरे ॥ सुंदीर रूप रसालरे ॥ स. २ ॥ स्वारथरे २ सीध विमाणथीरे ॥ विलसी सुर सुखसारहे ॥ चवनैरे आया मानव लोकैमेरे ॥ तीन ग्यांन ले लाररे ॥ सुखभररे २ सूथी सेजमैरे ॥ जननी पाछली रातरे ॥ सुपनारे २ चवदै देखीयारे ॥ फल पूछयों प्रभातरै ॥ स. ४ ॥ भाखेरे २ वांणी अमी समीरे ॥ होसी पुत्र उदाररे ॥ उभयरे २ कुल उजवालैणोरे ॥ निज पर तारणहाररे ॥ स. ५ ॥ जनमतरे संत हुई निज देसमेरे ॥ मिरगीमार निवाररे ॥ सूतकरे २ कारज सहूकियोरे ॥ मिल कर छपन-कुंवाररे ॥ स. ६ ॥ चोसटरे २ इंद्र पदारियारे ॥ ले गया मेरु मजाररे उछवरे २ वहु विद साचव्योरे ॥ जनीता जनक अपाररे ॥ सर. ॥ पोषीरै २ निज अवारनैरे ॥ पूरी मन की खंतरे ॥ सउ

मिलरे २ कीधी निच्यारणारे ॥ नाम दियो श्री मंतरे ॥ म ८ ॥ बालकरे बालपणै लीला करीरे ॥ बरस २५ स हजाररे ॥ सीख्यारे २ कला बोहतररे ॥ परण्यां पदम्म नाररे ॥ स. ९॥ थाप्यारे २ पाट पिता तणारे ॥ पदवी पाट ठोएरे ॥ च्यारजरे च्यार मिल्या छ हो नमीरे ॥ लीज्यों आगम जोयरे ॥ स. १० ॥ निलमीरे २ सुख संसारनारे ॥ मिलै लोकंतिक देवरै ॥ बोलेरे २ ये कर जोडनेरे ॥ ल्यो संजम सै मेवरै ॥ म. ॥ ११ ॥ बरसीरे २ दांनज दे करीरै ॥ जोग लीयो जगनाथरे ॥ चौथोरे २ ग्यान लेइ करीरै वडो पुत्र निज साथरै ॥ स. १२ ॥ तपजप रे २ करी मलेखणारे ॥ धायो निरमल ध्यानरे ॥ घातीरे २ करम खपायनेरे ॥ पाया केवल ग्यानरे ॥ स. १३ ॥ केवलरे २ प्रज्या पालनेरे ॥ बरस २५ स हजाररे ॥ तीर्थरे २ सुध वरतानियारे ॥ पोल्या सुगत मझाररे ॥ म. १४ ॥ संवतरे १९ से ५३ भलोरे। जैपुर शहरे मझाररे ॥ मतज रे २ जपै जडावजीरे ॥ नमंत पचम मनवाररे ॥ मर. १५ ॥

## पद १७. राग बेगे पदारो मेलथी

कुंथ जिनेसर नित नमूं । ज्यामे गुण अनंत । गावै निज मुख सरस्वती । तोइ न आवै अंत ॥ कुं. आंकडी १ ॥ मवद रूप रस गंध नहीं । नहीं क्रम नही भेद । देखण रचना आपरी । म्हो मन अधिक उमेद ॥ कुं. २ ॥ ग्यान दीपक घटमें नहीं । नहीं इण खेत्र ममान । तुम सरीखो करणी नहीं । किण विध देखूं आय ॥ कुं. ३ ॥ राग घेख दोनु नहीं । मोए करम लियो जीव

। जावै सो आवै नहीं । असी लगावो प्रीत ॥ कुं. ४ ॥ ओपत आपरै सांवठी । खरच नही एक रंच । लोभी कहू कै लालची । लग रइ खंचाखंच ॥ कुं. ५ । लिख न सकै काइ तुंम दसा । अलख अरुपी जोत । जे देखै ते जाणसी । प्रगटो परम उद्योत ॥ कुं. ६ ॥ आवणारी आसा घणी ॥ जाणै श्री जगदीस ॥ दाय उपाए कई करुं । मिलणो वीसवा वीस ॥ कुं ७ ॥ एह मनोरथ मायरा । सेखसली जिम जोय । आंगण बावै आकडो । ते आंबा किम होय ॥ कुं ८ ॥ १६ से ५२ न भलो । जैपुर फागण मास । जिम तिम राखो जड़ावनै । निज चरणारी दास ॥ कुं ८ ॥

## पद १८. राग काफीरी छै

अरी नाथ अनंत गुणधारी । ज्यांरो समरण साताकारी ।अ०। एरीए राय सुदर्शण तात तुमारा । श्रीदेवी म्हा थांरी । रतनकूंख धारक सा जननी । ज्यां आप लियो अवतारी कै । धन २ जननी तुमारी ॥ अ. १ ॥ एरीए अनंत ग्यान दर्शण चरित्र ले । पैंतीस वाणी उचारी । आप आपणी भाषा मांइ । समजत न्यारी न्यारी । कै वारै पूरषदा सारी ॥ अ. २ ॥ एरीए अतसै च्यार । ले संजम । फेर इग्यारै धारी । १६ सै संजम लेतां प्रगटी । ए चोतीसूंइ सांरी । कै सम्पूरण अतसै ज्यारी । अरीना. ३ ॥ एरीए सोवन कोट रतनकी सीखा । फिटक सिंघासण धारी । भामंडल झलकै पूठ पाछै । चउदीस वदन निहारी । कै पुरषदा विगसत सारी ॥ अ. ४ ॥ एरीए बीरख अशोक छाजै सिर ऊपर । षट ऋतुना सुख भारी । रोग सोग व्यापे नहीं कवहूं । पाखंडी

मदगारी । क वाद कर जानत हारी ॥ अ० ५ ॥ एरीए ओपमा-रहित अनोपम देही । सुभ पुदगल बीसतारी । असा पुत्र जणै कोइ जननी ॥ सुर नर सुर तय्यारी । कै देखतां आनंदकारी ॥ अ० ६ ॥ एरीए आगम एम पिछाणै प्रभूगुण । अलप कियो नीसतारी । बुध ओछी तुम महिमा मोटी । ते किण विध आवै पारी । कै सरस्वती जानत हारी ॥ अ. ७ ॥ एरीए कर उपगार । तार निज आतम । पोता मुगत मोजारी । वे कर जोड जडाव कहत है । जैपुर सहर मोजारी । कै अब तो वारी हमारी ॥ अ० ८ ॥ एरीए १० से ५२ न । मुखकारी । फागण सुदी उजियारी । तीजनै रीज करी मुज पर । राखो दासै तुम्हारी । कै एही अरज हमारी ॥ अ० ९ ॥

## पद १९. देसी जीलारी.

महिलापुरी नो महीपतिजी । कुंभ नाम राजन । प्रभावती पटरागनीजी नरपने जीव समान, मलजिन माएरो । मन मोहनगारोरे । दर्सण जिनराजनो । मानै लागैछे प्यारोरे । आंकडी ॥१॥ अपराजित विमाणथीरे । च्यवीने दीनदीयाल । जननी कुंखे अवतर्याजी । पुत्रीपणै गुणमाल ॥ मल० २ ॥ गरभ प्रभावै मातनैजी । मालती कुसमरी माल । वंछा मनमै उपनी दियो मली नाम रसाल । मल० ३ ॥ जनम वधाइ मांगताजी । मूं नकरी मायतात । हूवो अछेरो भरतमैजी । इचरज वाली बात ॥मल० ४॥पट मीत्री पूरव भवजी तप कर तोडया करम । न्यारा २ देसमै जी पालै निज २ धर्म । मल० ५ ॥ मली महिमा सांभलीजी । मोया छउ राजान । मम काले सजी आवीयाजी । कर २मोटी जान । मल० ६ ॥ कुंभराय

सुण कोपियोजी । किण तेडाया भूपाल । जावो निज २ थानकां जी । नहीं प्रणाउं मारी बाल । मल० ७ ॥ मानभंग नृप चींतवैजी । मणारा कर दिया सेर । महीला पुरी तिण अवसरेजी । घेर लीवी चौफेर । मल० ८ ॥आवण जावण रोकीयाजी । चिन्तातुर राजान । दी धीरज निज तातनै जी । उदै महाबलवान । मल० ९ ॥ निज अकारे पुतलीजी । कंचनमय रच लीन । भोजन सरस भरी हूतीजी । ऊपरसूं ढकदीन । मल० १० ॥ न्यारा २ तेडियाजी । चोज करी राजान । झाल सहित चित्रसालमैंजी । बैठाया दे सनमान । मल० ११ ॥ सिणगारी सा पूतलीजी । देखी विस्मय थाय । एवी नही कोइ असतरीजी । तीन लोकरे मांय । मल० १२ ॥ अति आसक्त जाणी करीजी । दूर कियौ ते दाट । निकसी दूरगंध आकरीजी । तुरत गयो मन फाट ॥ मल० १३ ॥ प्रतिबोध्या श्री मुख थकीजी । अवसर देखी ताम । मत राचो इण रूपमैंजी नार नरकनो ठांम । मल० १४ ॥ वैरागी संजम लीयोजी । मुक्त गया जिन संग । जैपुर मांय जड़ावनैजी । थांरा दर्शणरो उछरंग । मल० १५ ॥ १९ स वरस ५३नजी । फागण सुदी पखमांय । गुण गाया जिन राजनाजी । सुणता सिवसुख थाय ॥ मल० १६ ॥

## पद २०

राग अबकै पीयर जाउं थांरै कडाकड़ तीलाउं रे खटमल सुवादै । राजगिरी सुखकारी । गढमिंद्र पोलैप्रकारी । मलडा सेरारे हारे म . सुं सो व्रत जिन भेरा । मुनी । तुम टालो भव २ फेरा । मुनी० ॥ १ ॥ सुमित्ररायकुलटीको । पोमाकोलंनणनीको

॥ म० २ ॥ न्यांन अनत प्रकासो । तुम देखो जगत तमासो ॥ म० ३ ॥ तुं देवनको देवा । मै चाउ चरणकी सेवा । म० ४ ॥ म्हो मन मिलण उमानो । मे ध्यान धरुं सुख भानो ॥ म०५ ॥ मार करो हिव मागी । मेपांनात तुं मागी ॥ म०६ ॥ मै तुंमन नहीं ए पिछाएनो । मै पन कुमस्तो तांण्यो ॥ म ॥ म० ७ ॥ १८ न सुपनानो । जेपुर मे प्रम हुलासो ॥ म० ८ ॥ ५३न फागण मासो । जडाव करी अरदासो ॥ म०६ ॥

## पद २६. देशी कर हांरे नीरुं नागरवेल.

श्रीजेरथ राजा तुंम पिताजी । काइ सिजियादे तुम मात । चवदै सुपना देखनेजी । काइ । जाया तिरलोकी नाथ । जीमुखकारी मारा नमिए जीणद जिथान वाधा होए आणद । आकडी ॥ १ ॥ तू तारक तिहु लोकमेंजी । काइ तुंम सम अवर न कोए । अद्भुत रचना आपरीजी काट । मुणतां इचरजमोए । जी० २ ॥ मन अंगे मिलवा भणीजी काइ । दमण देखण नेण । किम अमाने मोभणी ॥ जी काइ । मिलकर मांचामेंण । जी० ॥ ३ मोए मिथ्यात अग्यानतणी काइ । माग निजगुण दिया छिपाय । परगुणमाये फसगयि ॥ जि ॥ मोख आयो किण दिद जाय ॥ जी० ४ ॥ अनत न्यान दमण करी । जि काइ । देख रया जग भान । मरजी जिम मांए फर्मीजी ॥ मानें अब तो वेग निकाल ॥जी० ५॥ करुणाकर प्राकम हूं रयाँ । जि काइ । करुणाकर आपने माज ॥ तारुमरण नहीं म्हार । जी । मही मींजे वछन काज ॥ ज० ६ ॥ एह मनोरथ माहरा । जी रांइ । गीगन

छत्रिकुंड नगरी सुखकारी ॥ राय सिधारथ तिसला नारी ॥ पीतमसे प्यारी ॥उ०॥ रतन कूंख तसू धारणी । जस जगत मोस्कारीरे ॥वीर॥२॥ सुख सेजा सुभ पवनज कोलै ॥ पीतम साथे कर रंग रोलै ॥ चाकर दासी चवर ढोलें ॥उ०॥ कइ सूती कइ जागती निज खाट हींडोलैरे ॥वीर॥३॥ दसमा सुरग थकी चव आया ॥ सुपन चत्र दस जननी पाया ॥ सुण सिधारथ हरष सवाया ॥उ०॥ पींडत मुख म्हारायजी ॥ सब अरथ करायारे ॥वीर॥४॥ सुभ वेला सुभ मोरथ जाया ॥ चौष्ट इन्द्र मिल कर आया ॥ छपन कुंवरी मंगल गाया ॥उ०॥ पंच रूप कर देवजी । मेरूं पर लायारे ॥वीर॥५॥ भर २ कलस सरस वरसावै । इन्द्र मन अनुकंपा ल्यावै ॥ बालक मैं प्रभूजी दुख पावै ॥उ०॥ अवध ज्ञान जग भाण जांण निज सगत दीखावैरे: ॥वीर॥६॥ अनन्तवली अंगूठो चंपे ॥ थर २ थर मेरुगीर कंपे ॥ महावीर सूरपत मुख भंपैः जोडै दोन्यूं हाथ नाथ कर किरपा हमपैरे ॥वीर॥७॥ वरस २८स रया गिरचारी ॥ दोय वरस निरलेप विच्यारी ॥ भोग रोग से मनसा टारी । उ० । मात पिता सुरगत गया । लियो संजम धारीरे ॥वीर॥८॥ तीन ग्यान वरसे संग ल्याया ॥ मनभजे संजम ले पाया । म्हो राजासे जंग मचाया ॥उ०॥ तपस्या कर महावीरजी सब करम खपाया ॥वीर॥९॥ केवल ले तीरथ वरताया ॥ चवदै संस भये मुनिराया ॥ गौत्तम मनका भरम मिटाया ॥ मुगत्त गया वीरदमानजी ॥ सासण वरताया रे ॥वीर॥१०॥ १९स ५३न सुखदाइ ॥ प्रथम जेष्ट जैपुर कै मांइ ॥ बाल मुनि चौमासो ठाइ ॥उ०॥ जोड़ लावणी

वीरकी जडाव सुणाइरे ॥ वीर ॥ ११ ॥

कलस ॥ अवतार सार चोवीस माइ । सामण तेनो जाणीए ॥ पम्पराए सुंण सवद भाख्यो ॥ अरथ पाठ परमाणए ॥१॥ श्री मिथनायक ग्यानदायक ॥ पूज जीने म्हाराजए ॥ कान मुनी रिप मेव पाटे ॥ बालचंद रीप रायए ॥२॥ पूज रतन ममुदाय माए ॥ रंभाजी हूवा दिनमणी ॥ तास सिसणी जडाव जंपे ॥ ढाल चोवीसे भणी २ ॥३॥ बुध ओछी नही सोची ॥ बालक ज्यूं कर ख्याल ए ॥ रस्व दीर्घ विच्यार नही ॥ थइ जोड करण उजमालए ॥ ४ ॥ टाल मिलती नहीं मिलती अधिक नून समाव्हए ॥ आयो होय तो काड दीज्यो ॥ मत कीज्यो उपहांसए ॥५॥ समत श्री १८स कइए॥ ऊपर ५३न जोयए॥ इधक ओछो कवि सोचो ॥ मिछ्यादुकड मोयए ॥ ६ ॥ हाथ जोडी मान मोडी ॥ नयन धरूं निज सीसए ॥ चौइम जिनवरूं ॥ कवि विचारके ॥ गुंनो करो वगसीसए ॥ ७ ॥

## ॥ देसी गरणाइ हो हाली जा थारी भागडली ॥

रिपभ अजित संभव अभिनंदण ॥ सुमत पदम प्रभू प्यारा हो ॥ जिणंद मारी विनतडी ॥ सूंण लीज्यो प्रभूजी मारी ॥वी.॥वी.॥ मारी नित २ जेलो ॥ दुरगत दूरी ठेलो हो ॥जि० वि०॥ म्हानै अव मती आगा मेलो हो ॥जि० वि० १॥सुपार्सचंद सुवध सीतल ॥ श्रीहंस वासपूज माराहो जि मासूं ग्यान चोपड हॅस खेलो हो ॥जि० वि० २॥ विमल अणत श्रीधर्म सत जी ॥ सत करी सुख पाया हो जि०॥ मान निज चरणामें लेल्योहो ॥ जि.

अरी मल्ली ... सुव्रतजी ॥ भवजीनारें मन भाया

नमीए नेम पार्स महावीरजी । लाभस सुध वतायाहो । जि० वि० ॥ ५ ॥ वहरसान गुण थंरं गुणमाला । जपतां पाप पूलावेहो । जि. वी० ॥६॥ १९ से ६१ ट एकादसी । दूजे जेठ वदी गुण गाया हो ॥ जी. वी. ॥७॥ वे कर जोड़ जड़ाव जेपुरमें ॥ चरणां सीस नमाया हो जि. वी. ॥ ८ ॥

## छंद छपनी लीखंतै सवैया इगतीसा ॥

प्रथम श्री अरिहंत नमूं । गुण द्वादसधारी । सिध सकल भगवंत । अष्ट गुण सोवै भारी । आचारज उवझाय । दो दो पदवी पाई । साधू सरव महंत । विचारें दीप अढाई । विहरमान वंदू सदा । गुणधर गुणकी माल ॥ ग्यांन दरसण चारीत्रनो सरणो होज्यो त्रिकाल ॥ १ ॥ पहला जाणो वरण । दूसरे मात्रा लीजे । तीजे सुध उच्चार । चतुर्थे पद गण लीजे । पांचव भारी हस्व । छटै चाल चलीजे । जैसो होय समास । तैसो आंण धरीजे । ए सांतू जाण्यां विना कविता करसी कोय । कहत जड़ाव जगतमें । लोक हसाइ होय ॥ २ ॥ दोहा । इतना तो जाणौ नहीं । जोड करण उजमाल । किण विध थई जड़ाव तूं । कविता करो संभाल ॥ ३ ॥ छंद छन्य । नावा चालै ले चलै । अपनी सकति नाय । विनै बैल घोडा विनै । पाणी साज तिराय ॥ ४ ॥ ग्यानी छोडी गरव । गुरुनै सीस नमावै: विधसूं लेवै ग्यान ॥ गुरुसूं गुर वण जावे । देस प्रदेसा जाय जठेइ आदर पावै । भरी सभामें वैठ सवको मन रीजावै । ग्यांन सरयां गुण छै घणा । साधुको सिणगार । जड़ाव कहै तिण कारणे । उवसरो अधिकार ॥ ५ ॥ देतां दूणो वधै । लेतां सोसा पावै । खरच्या खूटे नाय ।

धरतां काठ न आवें । लारा लेनो लार भार भाड़ो नहीं लागें ॥ देस प्रदेसां जाय जठः रेवे सागे । चोर ठगारा न लगे । गुपत खजानो सार । जडाव कहे । घटमें ढीयो । कर सतुगुरु उपगार ॥ ६ ॥ सवैया तेइसा । रथ फेर चले । हमसें न मिले । पसु बदण देखत तोड टटा । रही जान खडी हलकार पडी । सब जादूके मन होत खटा । हरी लार फीरे तूं कांइ करें । अब नेल चढी वज जाय कटा । जडाव कहै सति राजल बोलत । होउं वैरागन खोल जटा ॥ ७ ॥ छंदत्रिभंगी । सखी कहे सुण राजमती । ऐसी बात करो कहां जाय पति । फिर आवत है जरा धीर धरो । नहीं आवंगे तो और वरो ॥ ८ ॥ सोच विच्यार सती इम बोलें । और पुरुष सब बंधव तोलें । मुख कुं नहीं केहूं साची । ऐसी बात कहै मत पाछी ॥ ९ ॥ एक छमछर दान ज दीनों । सैस पुरुष साथे व्रत लीनों । चढ गिरनारी । ध्यान ज कीनो । केवल द्रसण ग्यान नवीनो ॥१०॥ राजल सुण समता रस पीनो । छोड़ गयो मुन नेम नगीनो । अकल जनागे । अब नहीं हारुं । दो अग्यां मुज कारज मारुं ॥ ११ ॥ संजम ले पालै सुध खंती । पीव पैलाइ मुगत पहूंती जडाव कहै धन २ सतवती । अविछल नेह कीयो मनखंती ॥ १२ ॥ सवैया इतिसा । आलस आवै अंग संग । महीलाकुं मोयो । निनै रहित ले ग्यांन ॥ जनम प्रमादे खोयो । क्रोध उपनो नास । रोग तन ओषध धोयो । अपजस जानै जस । मान मदिरा में सोयो । डरतो भागै दूरथी धर्म न आवै दाय । मन चंचल निद्रा गणी । ममतामें खून जाय ॥१३॥ दोहा । एहीज तेरै काठीया । देत जबर भक जोर । जड़ाव देस मेवाड़में ।

कह काठीया चोर ॥ १४ ॥ प्रथम खिम्या धरम । दूसरै लोभ न राखे । होवे सरल समाव । मान मद दूरा नाखै । हलको द्रवै झूठ मुखह्नं नहीं भाखै । तप संजम सुध ग्यान । सील इमरत रस चाखै । ए दस धर्म अराधसी । ते गुरु लीज्यो धार । जड़ाव निस्ते जाणीए ॥ तिरै सो तारणहार ॥१५॥ जात तणो अंकार । गरब कुल वल को तोलै । लाभ हूवा चढे द्रप । पढीनै वांको वोलै । सोपै लेवो ग्यान । हारो मत जन्म अमोलै । ठकुराइमै जिल रयो । मद छकीयो नगरूर । जडाव कहै सुण जीवड़ा । सिवसुख होसी दूर ॥१६॥ एक करै अणखोड़ । दूसरी लड़ै लड़ाई । तीजी लेवै नींद । चउथी करै बड़ाई । अदविच उठै कोय । पूठ फेरीनै वैसे । सुणै तो सरध नाय । समभावै कैसे । घरको धंधो छोड़नै । भली हुई च्यार । जड़ाव कहै थे आयनै । कांइ काडयो सार ॥१७॥

छंद कुंडलियां । वखाणकी त्यारी हुइ । भेली मिल कर च्यार । भाया वांणी झेलसी अब वाताको तांर । अब करै केइ छाने छानै । केइ होय निसंक बरजै तोई न मानै । सतगुरु वाणी वागरै । गावै गलोज तांण । जड़ाव कहे समझाय नै भाया सुणो वखाण ॥१८॥ चैला चेली देखनै । कीज्यो चत्र पिछाण । जिस्या तिस्यानै मूडतां । रहसी खांचातांण ॥१९॥ पछै नहीं लागै कारी । उपजावै असमाध । आतमा होसी भारी । भेख लजासी लोक मै । होय गूंणारी हाण । जड़ाव कहै सुख पासी करसी चत्र पिछाण ॥१६॥ पहली जोए विच्यारनै । ममत करसी कोय । आद अंत निपजावसी तो सुख साता होय ।

दोनू दोयको मन मिल जावै। पूछे सुख दुख बात। खावै अरु खुलावै। नेह बिनै मिंत्री कीस्यो। जैसो भीपण छार। जडाव कहै सोभे नहीं। बिन पगडी सिणगार ॥२०॥ विरोध मत करो कोय। प्रथम फजीती होय। बिगाडै दोन्यूं लोय। घरमें उजाडरे। बेठो कोई आवे नांय। बैठ सब दूर जाय। छेड्या विस फांसी खाय। बोडे ग्हाडरे। लोक केट करै हास। तप जप होय नास। नरकमें थाय वास। जम काटै नाडरे। जगमै जडाव आव। मिनख जनम पाय। बैठो अन गम खाय। मत करो राडरे ॥२१॥ मान करो मत मानवी। जीती गयो न कोय। रावण सरीसो गजबी। बैठो लंका खोय। बैठो। लोकमें भट फजीती। मदोदरसी सती। बातसुख माखी दती। बडा २ भैया हुइ तो दूजा दुख भात। तीन खटको अधिपति। मरयो पगाबे हाय ॥२२॥ मान धर्म माया बुरी। डानै खाय लगार। गुण सगला भसमी हुवे। चोट दीखै नार। चो। बुकैया करे अगनी। बडा २ नेबन किया। ऐसी माया ठगणी। सुख मीठी हीरदे कठण। निखविसमें मिल जाय। जडाव कह अनजर्त। चोडे दीखेनार ॥

सवैया ३१ सा ॥ लोभथी लाज जाय। लोभथी मरजाद जाय। लोभथी कुजस थाय। भूटा रेती हारनी। वधाइमें थाय। सारो दीन करै हाय हाय। मोटी २ रोटी खाय। रान्यूं पड पारनी। सजनसू करे वोडे। हरामीसूं हाथ जोडे। फोननके आग दौडे। मरनी कूं मारनी। जगमाय धन जेट। माया प्रनाक खेह। परत जडाव तेह निरखी रे नारसी ॥२४॥ मर्म

कर आतमा । भजो प्रमातमा । वंदो देवगरु वेइ । भवजल तारसी । अतिचार याद कर । पाप प्रदूर प्ररहर । प्रभवसेती डर लाग्यो दोप टारसी । कावगै आवसगै । पांचमेसु चित्त कर । छटै आवसगै । आगे पछखाण धारसी । आवसग कालो । काल कमाइ जाया लाल । कहत जड़ाव तेइ जनम सुधारसी ॥२५॥

॥छंद धनाश्री॥ छाने चौडे लागे पाप । पछे करे पश्चाताप । हाय २ मेतो जन्म विगाडोरे । गुरुपे आलोवे दोप । इण भव जावे मोक्ष । सणगारा पाघे थोक । संका न लीगाररे । वैद गुरु एक सार । साचा वाल्या काढे वार । वैद रोग हारे । गुरु आतमा उधारेरे । द्रवसल एक सूम । भाव साले रुम रुम । कहत जड़ाव हीइडा सुख साररे ॥२६॥

॥सवैया २३ सा । कहै लगुभी रात । सुणो तुम नाथ । करी कहां बात । महा दुःखकारी । जगसे भोर मच्यो हे सोर । वज्यो तूं चोर तकै पर नारी । कांहां गइ वुध, रही नहीं सुध । करेंगे जुध । लहेरी धसारी । कहत जड़ाव । अखमण व.लत । नहीं सिटे जगसे होवण हारी ॥२७॥ रावणराय कहे समभाय । मत गवराय ए भील भिखारी । अपणो राज स्हाज सब आपणो । अपणो इलस कर ले कर लारी । आए खड़े रिण भूम धणी वण । लागत है ए भोड हमारी । देख करूं वमसाय ॥ अणी प्रराखुं सीत करुं पटनारी । कहत जड़ाव भभीषण बोलत । कहां गइ बंधव अकल तारी ॥२८॥ कर आंख्यां लाल । फुलावत गाल । तिरसुं लो भाल चढ़ाकर बोले । रे कंगाल देउ क्या गाल । बके ज्यूं स्याल । वीर नहीं तूं शत्रु तोले । है क्या माल करुपे

माले । देखाउं ख्याल । जादू काल इनुनके ओले । कहत जडाव भभीपण बोलत । साच कया मा भारत डोलै ॥२६॥ लंकपति कर जोड कहे । तुम राम सुणो अरज हमारी । ज्यो सबसाज । करो एह राज । वरो तुम आज ही वाल हमारी । ए मुज बाण करो परमाण । खुले सुख खाण । मिले रिध भारी । मीतकी बार फिरो मतलार । ए वांतां मोए लागत खारी ॥३०॥ लिछमण राम कहे । सुण रावण । क्यूं कर बेठो खांचा ताणी । हुं नर क्रोड हजार करे ज्यों ॥ तोये न छोडूं सीत शाणी । लंपट लाज नहीं वेअकल । वात कहे तूं निपट अयाणी । कहत जड़ाव सबी समजावे । मत खेंचो अब टूटत ताणी ॥३१॥ रणभोम पड्यो पत देख मनोदर । जाय पडी जीम चंवरू डाला । सुध न रही तन भूखण की । टूट गई मोतनकी माला । खिण एक अतर चेत भयो जब । नेणामे नीर वहे परनाला । थिरग पड्यो संसार समुदर । डूबत हे नर मोवत वाला ॥३२॥ रहे गये धाम निकल गये साम । पडे रहे काम अरु राज रसाला । सालतसाल उठे तन झाल । भया क्या ख्याल । झुरे सब वाला । हाहा गई सब वात । रही नही ओथ । भया मुख काला । कहत जडाव सती इम बोले । लेउ वैराग तजुं जंजाला ॥३३॥ तनकी तिसना तनक । भोगसें निरपत थावे ॥ मनकी ममता बोत निकारो अंत न आवे ॥ लपटे पज २ भाव ग्यान बिन थाग न पावे । हे कोई जगमें जन रगनर जो मन समजावे । पांख बिने उड जात हे । पूछे कोडा कीम । फिर फिर फेरा खात हे । ऐसा मन वेहोम ॥३५॥ बिना बिचार्या वचन । सजनक कदी मत

आलरे । पिसुन पराइ नाद । वोले परपरावाद । रीत अरित वदै । होय सुखमालरे । माया मोसो मिथ्या जेल । ग्रै वचन देवे ठेल । कहत जड़ाव । पाप दूरी देवो टालरे ॥ ४४ ॥ धर्म धर्म कीनो । मर्म तो नही चीनो । फोगट जनम लीनो । खरे जिम पानरे । कुगुरुका लाग्या कान । छोटो जाणे आसमान । ज्यां न देवे दान मान । चावे वीडां पानरे । हिंस्या करी धर्म जाण । खोटो मत लियो ताण आगीयाने केवे भाण । लागी एक धुनरे । नरभव पाया सो तो । गिणती न आया माया । कहत जड़ाव जिम अंक विन सुनरे ॥ ४५ ॥ सारामें सिरदार सार । दोत तव कहीए । जीव अजीव पिछाण पूनथी सुरगत जइए । पाप अठारा छोड़ । आश्रवंथी भारी थैए । संम्बर पद निरवाण । निरजरा दोत्रिद होइए । बंध थकी ले ताण । मोख्सह सव सुख लइए । ए नव तत्व ओलखे । सोइ जंवरी भाण । जड़ावनीकानग जडों । खोटाथी नुकसाण ॥४६॥ करोधे खिम्या जाय । मान नरमांइ नासे । माया तोडे प्रीत । लोभ सव काज विणासे । ए चारु चंडाल । जाण मत राखो पासे । मीठा ठग दुख दाए । पून पूंजी ले जासे । चारु मिलकर चोगणा । नव फिर जासी लार जड़ाव कहे तूं एकलो । कुंण चढ़ला व्हार ॥ ४७ ॥ सचत द्रव बीगै । पनी तंबोल गणीजे । कुसम वाण सेण । वध मरजादा कीजे । वले पण बहू भेद । अभमरो ढालो दीजे । खट दीस नावण होए । भात पाणी लीजे । ए चवदा पछखाणने । जाण के करसी कोई । निरते जाण जड़ाव । परमपद लेसी सोई ॥ ४८ ॥ प्रथम साजे सून । दूसरे जावे उठी । और चलावे वात । कोढने करे अफूटी । नेण न

मेले मीट। द्रस्टी नीची कर आके। परख्' मांडे पीत। आपद्' रीत न राखे। सजन जैसा जाणने। मत जाचो वारंवार। जडाव कहे जग जाणीए। ए पांचूनाकार ॥४६॥ देखी सामो जाय। आया आसणथी उठे। नैणा बरसे नेह। आद्र दे सनमुख वेठै। खोल हीयारी गांठ। वोले मुख मीठी वाणी। पूछे सुख दुख वात। धायै भोजन अरु पाणी। सजन जैसा जाणनै। रहिए उनका दास जडाव कहे जन जाचती। पूरे मनकी आस ॥५०॥ तिररे२तिररे। कैसे तिररे। नर देह धरी करणी न करी। ममता न मरी। खाया खररे। गरु सग भइ। हित सीख दई। अम मान कइ। आया मररे। जैपुर मांय जडाव कहे। तिररे२यांसे तिररे ॥५१॥ धिगरे २ किणकू' धिगरे। नही दान दिया। अभिमान किया। मधुपान पीआ। खाया डीगरे। परपिराण लिया। राखी न दया। अम जाण भया। झूटा जगरे। जैंपुरमांय जड़ाव कहे। धिगरे २ तिणकू धिगरे ॥५२॥ धनरे२किणकू' धनरे। जिन दान दिया। नहीं मान किया। प्रभु नाम लिया। तार्या तनरे। उपगार किया। जग जस लिया। सम रस पीया। मार्यो मनरे। जैपुरमांए जडाव कहे। धनरे २ उणकू' धनरे ॥५३॥ लडरे२किणसू' लड़रे। करमनका घेर लिया। चौ फेर लिया। समसेर सज्या सररे। वणो अवसेर। करो मत देर। लेनो सन हेर। चला कररे। जैपुरमांए जडाव कहे। लडरे २ इणसं लड़रे ॥५४॥ सांजकू' अवाय भाय। रात दूध पेडा खाय। सु'तो सुख सेजमांय। परभाते लागी भूखडी। निरद भोजन आण। पीरस्या वहु पकवान। गंगा-जल पीवो छाण। दो फेरा आने सुखडी। खाय कीयो मीठो

थूंक । पान बीडा चावे मुख अजुये न भागी भूख जरा आइ ढूकड़ी । मनुप जनम पाय । खोय दियो खाय खाय । कइत जड़ाव तोइ । सूखे काया लूकड़ी ॥ ५५ ॥

॥ छंद कुंडलिया । व्याव मत कर वावला खोड़े पड़सी पाव । खीली देसी खांचने । न्हास कडीने जाय । ना आय कर दोल्या । फीरसी लेसी लाटो लूंट । जाय दुख कीणने कैसी । पहेला कह्यो न मानियो । अब बेठो पिछताय । जड़ाव कहे मणो मती । खोड़े पड़सी पाय ॥ ५६ ॥ पांचू वैरण जीवकी । पुन खजानो खावै । नवो न संचे नीच । कीचमैं रतन गमावे । ठाली होय नहीं ठोट होठ बैठो । लपकावे । देख प्राया लाड । मूढ मनमें पिसतावे । रोयां गरज सरे नहीं । चेत सके तो चेत । जड़ाव कहे सूतो किस्यूं । चिड़िया चुग गई खेत ॥ ५७ ॥

॥ दोहा ॥ छंद छपनीएहमें । प्रसतावीक उपदेश । नून इदक अणसोभतो । कवि जिन कीज्यो खेस ॥ ५८ ॥ पूज बीनेचंद पाटवी । रतन मुनी समदाय । रंभाजी हुवा गुण मणि । मरुधर मंडलमांय ॥५९॥ तासदास जड़ावजी । बोले बे कर जोड । विना समज कविता करुं । ए मुज मोटी खोड़ ॥ ६० ॥ अढ़ारसें अठावने । जैपुरमें चौमास । नथमलजीरा बागमें । एह कियो अभ्यास ॥ ६१ ॥

प्राणी पाप न किजीए । डरतो रइए दूर । हंस्यारा फल पाडवा । लागे हाथ हजूर । ला० । झूरसी परभोमांइ । सहसी घणो संताप । कदे नहीं मिलसी सांइ । जड़ाव कहे करुणा करे । सोई सांचा सूर । प्रा० प्राणी पाप करो मती । मनुष जमारो

पाय। निन भुगत्यां छूटे नहीं । पछे घणो पिसताय । होयगी घोत खरानी। रूइ लपेटी श्राग । तिका किम रह ला दाबी । दाबी दूबी न रहे । निसते प्रगट थाय । प्राणी पाप करो मती मनुष जमारे श्रांय ॥ २ ॥ इति छद छपनी समपूर्णः ।

## ॥ श्रावकारो चौढल्यो लीख्यते

। दोहा । अरिहंत सिध समरु सदा । आचारज उनझाय । श्री गुरुपद पंकज भणी । वंदू सीस नमाय ॥१॥ साधुने श्रावक तणा । सन गुण कहयानजाय । पिण किंचित नरणन करुं । कहेस्यूं ढाल वनाय ॥२॥

ढाल पहेली । देमी वेग पधारोरे महेलथी । तुग्या नगर सुहानणो । इंद्रपुरी सम भाख । लोक सहु सुखिया वसे । सूत्र भगवतीरी साख ॥ १ ॥ श्रावक कारणीरा धणी । आंकडी । वसै तिहां महा भाग । हाड–मीजी धर्मसुंरगी । देव गुरांसू राग । श्रा० ॥२॥ भवनादिक रीध सोभती ॥ रथ घोडा सुखपाल । धन्य धान धीणो घणों भोगवे भोग रसाल ॥श्रा० ॥३॥ नव तत्त्व निरखों कियो आगम अर्थ पिछाण । स्वमत परमत धारणा । स्हाणां चतुर सुजाण ॥ श्रा० ४ ॥ गिण माधण मामेजमा । इत्यादिक वोपार । निंदनीक जो लोकमें । तेह तणो परिहार ॥श्रा० ५ ॥ बारे वरते विवेकसूं । पाले निर अतिचार ॥छ पोसे करे मासमे । चनदा नेम चीतार । श्रा० ६ ॥ साधु साधर्मी तणी । ले नित सार संभाल । मातपिता सम दाखिया । चौथे ठाणे दयाल । श्रा० ॥ ७॥ समकितमें सेठां गणा । दीरग द्रष्टी बहु जाण। डिगाया डीगे नहीं । देव [illegible] आण। श्रा० ८ ॥ भात पाणी बहु [illegible] न दे[illegible]

वधे सो नाखे वारखे । काग कुत्ता पशु खाय । श्रा० ८ ॥ अभंग दुवार रहे सदा । प्रतिलाभे निरदोष । वैमुख जाय सके नहीं । पामें सर्व संतोक । श्रा० १०॥ गुण एकवीसे सोभता । बाराई विरदावमें । उपगारे धन वावरो । चूके नहीं जसदाव । श्रा० ११॥ गरू छे श्री विरधमानजी ।। ज्यारी आज्या प्रमाण । चाले सुध व्यवहारमें । छ अवसररा जाण । श्रा० १२ ।

ढाल दूजी। देसीजीलारीछे। तिण अवसर श्रीपासतणा रिखरायाहो सुखकारी मुनिराज। विचरत२ तिणहीज नगरी आयाहो। मुनी ।१। पंच सया प्रचार मुनि । गुण दरियाहो। सुं । फुफबइ उद्याने आय उत्तरिया हो । मू० २ । पंच महाव्रतधारी । सुध आहारी हो । सुं । सूरत प्यारी ज्यांरी । हूं बलिहारी हो । मू० ३॥ क्रोध मान माया सव ममता मारी हो । सुं । अभिग्रहधारी तपसी महा ब्रह्मचारी हो ॥ मू० ४ ॥ ग्यान दरसण चारित्र विविध । गुण भरिया हो । सुं । त्यागी वैरागी पाले । निरमल किरीया हो ॥ मू० ५ ॥ जातवंत कुलवंत । महा बलवंत हो । सुं । इत्यादिके गुण कहेतां न आवे अंत हो ॥ मू० ६ ॥ ससि जिम सीतल । रविजिम तेज सवायो हो । सुं । दरसण देखी भवी जिन । आणंद पायो हो ॥ मूं० ७ ॥

डाल तीजी । दोहा । हुइ वधाई सहेरमांहे हरख्यां बहु नरनारे । सबको थया उतावला । देखण गुरु दीदार ॥ १ ॥ रतनमुनी मारे मन वस्यां तथा जीदवारी । श्रावक मिलिया एकठा वोले वचन रसाल धन दीयाडो आजरो । फलीय मनोरथ माल । चालोरे श्रीगुरु वंदवा । आंकड़ी ॥ १ ॥ गुरु

धंगा पातक झरे । होवे परम किल्याण । जीवादिक नव बोलरी । थावे सर्व पिछाण ॥ चा० २ ॥ कामभोग संसारमे । दुरगतना दातार । संगत करता साधरी निरते देवो पार ॥ चा० ३ । टोले टोले नीसर्या । जाणेती जति वार । पंच अभिगम साचवी । वंदयां वारंवार ॥४ निरखोरे गुरु दीपारने । जाणे पूनमचंद । भवक चकोर निहालने । पाया परम आणंद ॥नी० ५॥ आगार नै अणागारना । धर्म तणा दोय भेद । भिन भिन भाव वखाणिया । सुणयां चित उमेद ॥नी० ६॥ हाथ जोड़ करे विनती । नीचो सीस नमाया । शू फल तप संजम तणो ॥ भाखो श्री मुनिराय ॥नी० ७॥ संजम रोके कर्म आवता । तप करपूर वहाण तो मरग जावे किम साधजी । भाखो एह विनाण ॥नी० ८॥ तप संजम सैरागथी ॥ पूरव कर्म वली संग । चितधर चार मुनीसरु । उतर दियो निसंक ॥नी० ९॥ भलो फुरमायो किरपा करी । समज गया मनमांय । दीनी तीन प्रदिक्षणा । आया जिण दीस जाय ॥नी० १०॥

ढाल चौथी ॥ देसी करहा चाले उतावलो । पगडे आई गणघोर । ग्राम नगर पूर विचरताजी । आया वीर जिणंद गोतम गणधर आद देजी । साथे मुनिवर वीरद । वीर पधारीयाजी । राजगरी उद्यान ॥आ० १॥ वेलारो छै पारणो । जी गोतमरे तिण दीन । अवसर उठा गोचरीजी । लोक कहे धन धन ॥वी० २॥ ऊंच नीच मिझम कुलेजी । फिरता घर घर बार । गली गली बेजारमे । जीहम बोले नरनार ॥नी० ३॥ तुंग्यां नगरीरा बागमे । जी पास तणा अणगार । श्रावक प्रसण पूछिया । जी भाख्यो सउ विसतार

आदरीजी । काम भोग फल छंउ । इणने मिलती छै । ध्यान खोल मुनीवर कहेजी । सांभल प्रथवीनाथ । रक्षा करणवालो नहीं रे । कोई मारे माथे नाथ हो राजींद्र सांभल पूरव वात ॥ आकडी । १ । तिण कारण संजम लियोरे । अब मैं हूवो सनाथ । सेणक सुंण विसम थयोरे । अहो २ इचरज वात हो ॥ रा० २ ॥ रूप संपदा कारमीरे । जननी मारी भार । इस्या पुरस दुखिया थयारे । भूल गयो किरतार हो ॥ रा० ३ ॥ दुख मेटू हीव एहनोरे । तो मारो सेणक नाम । नाथ होस्यूं में आपरोजी । पुरु सगली हांमसो मुनिवर चालो हमारी साथ ॥ ४ ॥ मात पिता सुत भारे ज्यारे दास दासी परिवार । खाणो खरची पूरस्युंरे कमीय न राखूं लीगार हो ॥ मूं०५॥ दुलभ नर भव पामियोजी । सफल करो मुनीराय । सुख बिलसो संसारनांजी । मारा छत्रनी छांय हो ॥ मूं० ६ ॥ वलता मुनीवर इम कहेरे । सांभल राजंन भात । नाथ होसी तुं केहनोरे । पोतइ आप अनाथ हो . राजींद्र बोलोनी बचन विचार ॥ ७ ॥ वचन अपूरब सांभल्योरे । दुख पायो महीपाल । रुप रुड़ो गुण वायरोरे । अलीक वदै पंपाल मू० ८ ॥ अथवा ए रीध माहरी रे । जाणे नही महा भाग । तो हीव एहने वतावस्यूंरे । तव वोल्या धर राग हो ॥ मू० ९॥ अहो मुनी मुज नवी ओलख्योरे । सेणक मारो नाम । देस मगधनो अधिपतिजी । एक कोड इकीतेर लाख गरामहो ॥ मू० १० ॥ तेतीस २ से सैनीजी । हयवर गयवर जोड़ । संगरामीके रथ एटलाजी । पायक तैंतीस कोड़ हो ॥ मूं० ११ ॥ अंतेवर प्रवारसुंजी । भाई बेटा जाण । मोटा मोटा महीपतिजी । आण

करे प्रमाण हो ॥ मृं० १२ ॥ गढमढ मंदिर सोभताजी । भरिया द्रवे भंडार । वाग वगीची वानडीजी नाटकना धूंकार हो ॥ मूं० १३ ॥ इण अनुमाने जाणजोजी । रीधतणो विसतार । मुजने अनाथ किम जाणियोजी । हुंतो प्रत्यच्छ देव अवतार हो ॥ मूं० १४ ॥ आपणां गुण निज मुख थकीजी । करतां आवेलाज । पिण रीध दिखाई आपनेजी । रखे जूठ लागे मुंनिराज हो ॥ मू० १५ ॥

॥ दोहा ॥ हंस कर बोल्या मुनिवरु । सांभल नर नाथा । अनाथपणो जाणे नहीं । किण विध होय-सनाथ ॥ १ ॥ तो माखो कीरपा करी । जोडया दोनूं हाथ सुंणसुं चित लगायने । इचरज वाली वात ॥ २ ॥

ढाल ३ जी । देसी चोपन चौमामारी । रतन मुनीसर मोटका । तव वलता मुनीसर कहे । जी कांइ तव. । तुं सांभल हो राय चतुर सुंजाण । रीध सपदा कारमी । कोइ राचेहो नर मूढ अयाण सुण सुण पूरव वारता ।आकडी ॥१॥कोसवी नगरी भली । जी कांइ कोसंवी० । पुर पाटण रीया भेटण हार । होड करे सुरलोकनी । तिहां कमला हो लीनो अवतार ॥सं० २॥ अन धन करने दीपतो । जी कांइ अन०। जस कीरत हो फैली अभिराम पिता वसे तिहां माहरो धन संचे हो गुणने पै नाम ॥ सुं० ३॥ भवनादिक रीध सोभतीजी कांइ भव० । रथ घोडा हो । वहु दासी दास । गज सके नहीं तेहने । सुख सपन हो कर भोग विलास ॥ सं० ४ ॥ थइ वेदना आंखमें । जी कांइ थइ० । अति करकस हो मासूं सहीए न जाय । रोम रोम अग पीडवी । कर्मनकी

हो गत कही न जाय ॥ सं० ५ ॥ वैरी बाप माई तणो । जी कांइ वैरी ० । कोई घाले हो मस्तकमें घाव । इंद्र वजर सम व्यापती । अति दारुण हो ग्यानी गम भाव ॥सं० ६॥ मात पिता चिंता करे॥ जी कांइ मात० ॥ बिल विलतां हो दुखमें दिन जाय । बेन भाई छोटा वड़ा कोई वेदन हो नहीं लीनी वटाय ॥ सं० ७॥ तिण कारण अनाथ छूं आंकड़ी फीरी छे। नारी प्यारी जीवसूं । जी कांइ नारी० ॥ नहीं न्यारी हो सदा रहेती हजूर । खानपान भूक्तण तज्या । छिण मात्र हो नहीं रहेती दूर ॥ ति० ८ ॥ नेण भरे आंसू झरे । जी कांइ नेण० उर सींचे हो जिम सुको बाग । अंजन मंजन सब तज्यां । मुज ऊपर हो पूरो अनुराग ॥ ति० ९ ॥ तो पण मारी वेदना । जी कांइ तो० । छिण मात्र हो नहीं लीनी तेह । तिण कारण अनाथ छुं । जगमां ए हो जूठो सनेह ॥ ति० १०॥ वैद विचित्तण आविया । जी कांइ वै० ॥ धन खरचे हो बहु किया उपाय । तिल भर गरज सरी नही । कर्मसूं हो कोई जोर न थाय ॥ ति० ११ ॥ मन फाटो संसारसूं । जी कांइ मन० दुखमां ए हो धर्मनो आधार । जो मुज वेदना उपसमे । रिध त्यागु हो पूछी परवार ॥ ति० १२ ॥ इम कहेतां वेदना गई । जी कांइ इम० । हुइ साता हो मुज आइ नींद । घरका देव मनावतां । हू वणियो हो वैरागी बींद ॥ ति० १३ ॥ हाथ जोड़ कहेतां तने । जी कांइ हाथ० । दो अग्या हो सुणी थया उदास । कुंटम सहु समझायने । व्रत लीनो हो तोड़ी मोहपास ॥ ति० १४ ॥ निज आतम निसतारवा । जी कांइ निज० । में हुवो हो छकायारो नाथ । अनाथपणो दूरो कियो । भावारथ हो समझो नर नाथ ॥ ति० १५॥

॥ दोहा ॥ समझ गयो हो म्हा मुनि । थें छो मारा नाथ । करी अनम्या आपरी । मैं मूर्ख साखात ॥१॥ कर कीरपा मुज ऊपरे । मेटो मारो भरम । षट दरसणमें कुणसो । तारक साचो धर्म ॥२॥

। ढाल चौथी । देसी घोड़ी आर थारा देसमें मारुजी । निज आतम निजरस करो । महाराजा । पर आतमकूं पिछाण हो । समता प्रमाद मत सेवणा । माहां धर्म दयामें आण हो गुणवंता । धर्म सुध ओलखो माहाराजा । आंकणी ॥१॥ देव निरागी जगत सुं । मा । नहीं मछर नहीं भेव हो । माहा । दोष अठारा जगाये नई ॥ माहा ॥ सोइ देव तूं सेव हो ॥ माहा ॥ धर्म० २ ॥ रिष सिवपुरमें सासता ॥ माहा ॥ जनम मरण दिया छेद हो माहा । जोतमे जोत बिराजिया ॥ माहा ॥ देखे जीवारी खेद हो ॥ माहा ॥ मिथ्या मत छोडद्यो ॥ माहा ॥धर्म० ३॥ ओलख जीव छ कायना ॥ आणो मन वैराग हो ॥ माहा ॥ न्यारा रहो प्रपंचथूं ॥ माहा ॥ देव गुरुथूं राग हो ॥ माहा धर्म० ४ ॥ ममता न कीजे राजनी ॥माहा॥ समता रस भर कुल हो । माहा । आगावंता पर जीवनी ॥ माहा ॥ ए ही धर्मगे मूल हो ॥ माहा ॥ धर्म० ५ ॥ निरखे देव गुरु आतमा । माहा लगावे निज करम फर्म हो ॥ धर्म० ५ ॥ तारे ट्रोवे आतमा ॥ माहा ॥ छोटी मिथ्यामत भर्म हो ॥ माहा ॥ ॥धर्म०६ ॥ नंनण [illegible] गांवजी । माहा । वैवर्णा कातधेगा हो । मे० । ७ [illegible] आतमा । महा । आप दरसण [illegible] हो । मे [illegible] देव मन अनजगं॥ [illegible] केवना मेद [illegible] । दूध गाय ने आपनों । [illegible] होए [illegible] धर्म० ८ ॥ नाथा

॥ २ ॥ देव रागी गुरु लालची । जीव हिंसामें धर्म । तीन करण तीन जोगसूं । छोडूं मिथ्या भर्म ॥ ३ ॥

## ॥ ढाल ७ मी ॥

देसी सेवग संभूनाथ कीरत कागद । धन मोटा मुनिराज । बुध थारी भारी हो । भलो दियो उपदेस । बड़े विसतारी हो ॥१ ॥ धन धन तुंमचा तात । मात थाने जाया हो । धन तुम छो अवतार । सफल करी काया हो ॥ २ ॥ छोडया छता भोग । जोग तुंम लीनो हो । दी संसारचाने पूठ । दया रस पीनो हो ॥ ३ ॥ तुंम हो दीनदयाल ॥ आसरो थारो हो । सतपुरुषांरी महेर भलो होय मारो हो ॥ ४ ॥ फसियो जग जंजाल । भोग नहीं छूटे हो । रहूं आपसे दूर । हियो मारो फुटे हो ॥ ५ ॥ पट, कायारा नाथ । तात मोए तारो हो । होज्यो भव भव मांए । सरण तुमारो हो ॥ ६ ॥ फिर फिर सेव्या देव । गुरु पिण पेख्या हो । आप सरीखा माहाराज । कठे नहीं देख्या हो ॥ ७ ॥ दीज्यो दरसन आप किरपाकर मांने हो । राखूं हीयारे वीच । भूलूं नहीं थाने हो ॥ ८ ॥ धारया धर्म अनेक । मर्म नहीं जाण्यो हो । सांचो धर्म महाराज । आजे पिछाण्यो हो ॥ ९ ॥ रोम रोम विगसाय ।हरख नहीं मावे हो । दे प्रदक्षणा तीन । अंग नमावे हो ॥ १० ॥ तूं मोटो जोगिंद । ध्यान रस लीनो हो । मैं मूर्ख मति हीण विघन थारे कीनो हो ॥ ११ ॥ निमत्या काम ने भोग । असातना कीनी हो । नाथपणारी बात । रती नहीं चीनी हो ॥ १२ ॥ खमो खमो अपराध । खिम्या धर्म थारो हो । पर उपगारी आप । बिरद विचारो हो ॥ १३ ॥ तुम गुण अनंत अपार । पार नहीं पाउ हो ।

मो मुख रमना एक। किमी निव गांऊ हो ॥ १४ ॥ सहु परवार समेथ अंजलिधर मांये हो। थाया जीया दीस जाय। थ्यंतेनर सांथे हो ॥ १५ ॥

॥कलस॥ महा मुनिमर माहा देमना। वांदी नीकर निसतारये। सेणक समक्तिधार हुवा। राजामें सिरदारए ॥ रा० १ ॥ सेणक बहु उपगार कीना। उतकृम्टी भक्ति करी। बीजो पिण भूनी केवली। होय कैसिव वंदूनरी। हो ॥ २ ॥ सात ढाल सर्बंध मुनिको। कीनो सूत्र जोयए। निरुद्ध तिणथी अधिक ओछो। मिछयादुकड मोयए। मिछया ॥ ३ ॥ बुध थोछी सुध नहीं। ह्रस्व दीर्घ विचार ए। महेर कीज्यो मूरख ऊपर। कविजन लीजो सुधारए। कवि ॥ ४ ॥ समतश्री १६ सें कहीए। ऊपर नावन माल ए। असाढ वद एकादसीने। करी जैपुर में मत ढाल ए ॥ ५ ॥ पूज्य रतन समुदायमांए। रभाजी हुवा गुणमणी। ताम सिस्यणी जडाव गूंथी। मूंनी गुणमाला भणी ॥ मु०६॥ प्रसाद श्री गुरुदेवजीको। गुणनतांरी दास ए। अकमर ढाल सनंव देखी। मत कीज्यो उपहास ए। म० ॥ ७ ॥ इति अनाथी मुनीराजरो सत ढाल्यो समाप्त।

## ॥ नव वाडकी लावणी लीखंते ॥

चालः—धन धन धन धन जंबुकमरजी। जोबनमें समता लीनी। परणी धरणी तजी ममाये। ए देमी। सीलनत सुध पालो प्राणी। निर दोपण थानक निरखो। पसुपंडक महीलाको बामो। ब्रह्मचारी राखे घटको। मूस मक्कारी जम विचारी। नाम करेला ब्रह्मव्रतको। सीलव्रत सुध पालो प्राणी। जेग मिले सुख

सिवपुरको । आंकणी ॥ १ ॥ बीजी वाड इणीपर कीजे । रस पीजे जिन वाणीको । एकली नारी पुरुष संघाथे । वात विगत चटको मटको । काम जगावे कंद्रप वढावे । दृष्टांत जाणो नींबूको ॥ सी० २ ॥ एकण आसण पुरुष अस्त्री । नहीं बैठे कोई ब्रह्मचारी बैठे सोबे वाड बीजोवै । गरम दोष पावे नारी । कांजी दूध विगाड़े देखो । वचन उथापे जिन-वरको ॥ सी० ३ ॥ चौथी वाड चतुर नर राखो । रस चाखो सिवरमणीको । भरररेखासें मत निरखो । ब्रह्मचारी अंग नारीको । काची कारी जे नरनारी । निरखे तेज जिम दिनकरको ॥ सी० ॥ ॥४॥ टाटी भींत अंचक अंतर । ज्यां सोवे भोगी प्राणी । सीलवंत रहे तिन थानक । घाज मोर दृष्टांत जाणी । विषय वचन जो पड़े कान में । मन विगाड़े मुनीजनको । सी० ५ ॥ काम भोग विलस्या जे पूरव । वार वार ज्यो चितारे । चार वटाउ बुडीया दृस्टंत । सील वटाउने मारे । छठी वाड़ करो मन डीडता । विषे जहर दूरो फेंको ॥ सी० ६॥ सरस आहार वरज्यो झरझरतो । नितको नित केवल नाणी । वाड भंग करे सीलव्रतकी । त्यागे ते उत्तम प्राणी । सनीपातमें पावे पय मिश्री अरु सरवत नारंगीको ॥ सी० ७ ॥ पुरुष केवल बतीस प्रमाणो ॥ अठाइस नारी जाणो । कुलंग कवल चोवीस प्रमाणो । हूंठ हूंठने नहीं खाणो । ओछो भाजन इदको उरे । फुट जाय मुख हंडाको ॥ सी० ८ ॥ वस्त्र भूषण अंजन मंजन । केसर ने चंदन चरचे । तेल फुलेल अरगजा लेपन । ब्रह्म-चारी करतोलरजे । विनै कारण जो करे सुश्रुषा । सीलव्रत थावे झांखो ॥ सी० ९॥ शब्द रूप रस गंध । फरस प्रमत विचरो ।

उतम प्राणीए अनाथी टेव जीनकी । छोडयां वैपद निरवाणी । राग रंग अरु नाटक चेटक । ए भी भरम है पुद्गलको ॥ सी० १० ॥ इंद्र चंद्र निरंद्र सुरासुर । मीलनंतके पाए पडे । सरप होय फुलनकी माला । भूत मित्र नहीं दखल करे । हरी अरी कुंजर दूर रहे सन । तेज वडो ब्रह्मचारीको ॥ सी० ११ ॥ गजसुखमाल अवंतो जंबु । नेमकवर राजुल नारी । बीजेकुवर अरु बीजीयाकंवरी । बालपणे थया ब्रह्मचारी । सेठ सुदर्शण सील प्रभावे । सिंघासण थयो सुलीको ॥ सी० १२ ॥ उतराधेन सोलमें भाखी । वाड नउइ तिण माखी । जैपुरमांए जडाव जोडने । निज आतम निज वस राखी ॥ १६ सें वावनके वरसे । जेठ सुदी दिन नोमीको । ॥ सी० १३ ॥

## २२ परिसा.

॥ दोहा ॥ पांच पद प्रणमू सदा । सरसती लागूं पाय । वाइस परिसा सूत्रथी । कहीस. ढाल बणाय ॥ १ ॥ चाल तेहीज । क्षुधा लगनें सबसे पूरी है । वडे वडेका मान गले । आदनाथके चार संस शिष्य । भूख लगी जन भाग चले । घन घन साधु सह परीसा । सुरवीर होए नाय डरे । तप तरवार भावका भाला । करम अरीहूं भंग करे । आंकडी ॥१॥ क्षुधा तिरखा अति तीखी । विन पाणी मुनि प्राण तजे । आधा कर्मी काचो पाणी मगजावे । पिण नाय भजे ॥ घन० २ ॥ सीतकालमें ठड सहे । अत नीरपत सें ठहे नंगे । जीरणवस्त्र अलप उपधी । ध्यान धरे चडते रंगे ॥ घन० ॥ ३ ॥ ग्रीष्म ऋतुमे घाम सहै । अंत पवन चले अरु लू वाजे । जलती वेलू लेवे अतापना । शीस तपे अरु पग दाजे ।

॥धन० ४॥ विरखा रितुमें डांस मसादिक। ज्युं गाकड़ देवे चटका। तिलभर धेक धरे नहीं तिण पर। समतारा पीवे गटका॥ धन० ५॥ एक सफेदी वसरत राखे। एक अंग कीमत जाणी। थोड़ा मिलिया नहीं सटावे। इधकाद्युं ममता ताणी॥ धन० ६॥ काग भोगमें रीत नहीं पासे। हित राखे संजम सेती। पुद्गल फंद रच्यो इण जगमें। मुगतीद्युं घाले छेती॥ धन० ७॥ भावभाव सिणगार स्त्रीके। सराग दृष्टिसे नहीं झांके॥ सील रतनको करे जापतो। मन मेंगल ताणी राखे॥धन०८॥ ग्राम नगर पुर पाटण फिरतां। कंकर अरूकांटा खुचे। पाय उवराणा चढे थाकलो। गाडी वेल नहीं वंछे॥ धन० ६॥ लेवे विसरामो वन मसाण। अथवा विरख तले वेसे। मन वचन काया वस राखे। स्वापद जीव नही त्रासे॥ धन० १०॥ सेज्या उंची नीची अवखी। दुखदाई असमाध करे। एक रातको जाणे परिसो। दिनमासी चौमास भरे॥धन० ११॥ कुवचन कान पडे कांटासा। आक्रोश केइ द्वेष करे। दूध पतासा सम कर पीवै। जाणे अनारज धीर धीरे॥ धन० १२॥ केइ अनाखी अवनी साथी। ले लकड़ीने लारफिरे। छूरी कटारी भाला बुरछी। वधे वंधन परिहार करे॥ धन० १३॥ करे जाचना केई पुद्गलकी। देवे पिण अपमान करे। आयो वापड़ो दीयो उदारो। पिण साधु नहीं मान धरे॥ धन० १४॥॥ उद्यम करतां नहीं मीले तो। छती वस्त पीण नट जावे। द्वेष धरे नहीं गृहस्थ ऊपर। अंतराय आड़ी आवे॥ धन० १५॥ आयो रोग सोग नहीं करणो। बांध्या-ते भुगते प्राणी। सहूकार सो करज चुकावे। कायर ते भागा जाणी॥ धन० १६॥ तृण घास के सुवे संथारे

चटक चटक देवे चटका। थोडा वस्त्र नींद न आवे । समतारा पीने गटका ॥ धन० १७ ॥ पीठी मरदन नहीं नानो धानो । जानजीन लगे नहीं करणो । होय पसीनो मेल गले जन । समतारो लेवे सरणो ॥ धन० १८ ॥ कोई चरणमें देवे मस्तक । वंदन थरु असतूती करे । कोई अग्यानी देवे ठोकर । दोयां नरम भाव धरे ।। धन० १९ ॥ भण्यां मोटी ग्यान अपूरव ॥ भणीयारो कांइ पार नहीं । अछरदाता गुरु कर जाणे ॥ ग्यान ध्यान वीपार सह ॥ धन० २० ॥ थोकाथोक करे बहु उदम । तोपीण ग्यान नहीं आवे । सम प्रणामें सह परीसो। धेक करे नहीं सीदाने ॥ धन० २१ ॥ खरी आसता जिन नचनांकी मिथ्या मतने खण्डन करे । अन्य मार्गनी महिमा पूजा । देखी वंछा नाए धरे ॥ धन० २२ ॥ अनूकूल इणमें मन गमता । सोभी सहना कठण भय । प्रतिकूल प्रतक दुखरासी । नडे नडे सो भाग गये ॥ धन० २३ ॥ परीसा पचवीसी जोडी । जडाव जेपुरके मांड । असाढ सुद १९ सें वावन । हरख लावणी मैं गाइ ॥ धन० २४ ॥ इति संपूर्णः

चाल तेहीज । धिग धिग जगमें कायर पूरमा । संजम ले चाले निवला । धन संसारमे उतम प्राणी । जो टाले दोपण सगला । धि० आकाडी ॥ १ ॥ हस्त कम्म नली मइथून सेवे । रात्रि भोजन प्राण हरे । आदाकरमी राजपींडते । डंग्राने उदमाद करे ॥ धि० २ क्रितगंडपमीचेअठीजे ॥ अणीमिट मामो आणयो । पच प्रकारे आहार भोगवे । मनलो ए छट्टो जाणयो ॥ धि० ३ ॥ वार वार पचखाण भागे तो । गुरवादीकनुं नहीं लाजे । छ महीना में मूल मींधाडो । छोडी बीजामे भाजे ॥ धि० ४ ॥ उदक लेप अरु माया

थानक। तीन तीन एक मास मधे। सेव्या सबलो दोषण लागे। जीवघात संसार वधे॥ धि० ५॥ जाणी हिंस्या जाणी मिरषा। अदत पराइ जाण गीरे। सचीत प्रथवी सनगंध जागा। सूवे बेठे पाव धरे॥ धि० ६॥ जीव सहत बाजोट पाटीया। कंदादी दस सचीत भखे। उदक लेप दस माया थानक। त्रस मघे नहीं सेव सखे॥ धि० ७॥ सचीत हाथ आहारादिक वेरे। इकीसइ सेवै सबला। कर्म प्रकृति डीडकर बांधे। संजम गुण थावे निमला॥ धि० ८॥ टाले सबला पाले संजम। सो पावे पद निरवाणी। जेपुरमांए जडाव कहत है। असाढ सुद नोमी जाणी॥ धि० ९॥

चाल लावणीरी छे। मत सेवो कोइ बीसैअस असादया थानक साधजी। आंकडी। दब दब करतो चाले साधु। नीचो नहीं निहाले॥ चउदीस कपडा उडे धजा जिम। बिन पूंज्यां पग ढाले। कठे पूजे कठे पग देवे। इरज्यांमें टोटो घालेजी॥ मत० १॥ मरजादा उपरंत भोगवे। पाट पाटीया कोय। बडा गुरांसु सामो बोले। संजम मांदो होय। थेवर इकंद्री घात चिन्तवे। खिणखिणमें करोधी होयजी॥ मत० २॥ निस्ते भाषा कलह-कारणी। गरुना ओगण बाद। बोलतो नहीं संके मूरख। बेठो करे उपाद। जूनो कलो उदेरै पाछो। ए बारे असमादजी॥ मत० ३॥ अकाले सज्झाय करे। सट काले बीगता बाद।। सचीत खरडया बिन पूंज्या पग। सुबे बेठे साध। पोर रात गया पछे गावे। घाढे घाढे सादजी॥ मत० ४॥ गछमें भेद पड़ावे पापी। अठी उठी मिलजाय। कलह करंतों मूल न लाजे। लोग हसाइ थाए। आप बले परने संतावे। दोनूं भव दुःखदायजी

॥ मत० ५ ॥ दीन उग्यायी आथण सुधी । आछो आछो लाय । । मत नहीं पञ्चराण न जाके । मन भावे ज्युं खाय । असुजतो अन जोवे सतो । जडामूलसु जायजी ॥ मत० ६ ॥ ए नीसुं टालज्यो सरे । संजम रुडो थाय ॥ १६ सें नरस वावनेसरे । जेपुरमांए जडाव । बोल थोकडो देखने भरे ॥ दीनी ढाल बणायजी ॥ मत० ७ ॥

## ॥ ३३ असातना लीखीए छिए. ॥

देसी । बीस जयातुं वाद न कीजे । थागे चाले आगे उबे । थागे वेठे थायजी । बरावर चाले बरावर उबे । बरावर आसण ठायजी ॥ १ ॥ मूर्ख करे असातना । केद अनछदा थरनीतजी । जमाली गोमालो देखो । हूवा गणा फजेतजी । आंकडी ॥ २ ॥ अनछदाने ग्यान न आवे । ग्यान बिने अंधारजी । मीख दिया सामा चड जावे । गरु काडे गछके वारजी ॥ मूर्ख० ३ ॥ तीन उबणरी । तीन वेठणरी जोयजी । अडतो चाले थडतो उबे वेठे । ए पूरी नव होएजी ॥ मूर्ख० ४ ॥ गुरु चेला दोय ठडील जावा पहेला सुच करायजी । इरीयावड पडीकम पहीला । कारन रासे कायजी ॥ मर्ख० ५ ॥ गुरुआदिकमुं प्रमण पूछे । कोई भाइ वाइ थायजी । पहेला उतर देवे तिणने । आप वडेरो थायजी ॥ मूर्ख० ६ ॥ गुण सुता कुण जागो भाइ । कोज्यो कारज थायजी । जागे पिण नहीं बोले उठे । जाणी नींद गुलायजी ॥ मूर्ख० ७ ॥ न्याय गोचरी छोटा आगे । आलोवे देखायजी । घामे देवे मन गमताने । ज्याम् मुवलन थाएजी ॥ मूर्ख० ८ ॥ गुरु चेला दोय मेला बेठे । गुरु गग्दा दात न

कायजी । आछो आछो वेगो वेगो । आप जाण षटकायजी ॥ मूर्ख० ९ ॥ गुरु बतलायां जवाब न देवे । घातामें लग जायजी आसण बैठो उतर देवे । सूं कहो कहो थायजी ॥ मूर्ख० १० ॥ रेकारा तुंकारा देवे । बोले खारो जहरजी । ध्यान न आवे अवछंदाने गुरुसुं राखे वेरजी ॥ मूर्ख० ११ ॥ गुरु सीखावण देवे आछी । सीखो भणो सुजाणजी ॥ थेइ सीखो थेइ बांचो । पाछो कहे अयाणजी ॥ मूर्ख० १२ ॥ गुरु कहे भाइ खोटू न बोलो । तुम ही खोट सीखायजी । साचो अरथ न आवे तुंमने । में कहूं जीम थायजी । ॥ मूर्ख० १३ ॥ गुरु गीतारथ देवे देसना । सुण राजी नहीं थायजी । भैंसा डोलो घाले बीचमें । रस कथारो थायजी मूर्ख० १४ ॥ हीवडा सुण कई हुवा राजी । फिर आज्यो भेला होयजी । अर्थ अपूर्व कहेस्यूं तुमने । कंठ कला मुज जोयजी ॥ मूर्ख० १५ ॥ तेइ देसना तेही वेला । तेइ पूरखदा मांयजी । घोट मठारी पाछो बांचे । मानभंग गुरु थायजी ॥ मूर्ख०१६ ॥ दिन माथे आयो नहीं सुजे । लांबी कथा वणायजी । थेतो बेठा हुकम चलावो । माल्रे खाणो लायजी ॥ मूर्ख० १७ ॥ गुरु संथारे सुवे बेठे । नहीं लाज मरजादी । ठोकर लाग्यां नहीं खमावे । उपजावे असमाधजी ॥ मूर्ख० १८ ॥ गुरुद्धं उंचो आसण बेठे । मद छकीयो मानीसजी । गुरु चेलारो नहीं कायदो । ये पूरी तैंतीसजी ॥ मूर्ख० १८ ॥ उत्तम प्राणी हित कर लेसी । नहीं आणो मन रीसजी । जैपुर मांए जड़ाव कहत है ।सीखो बीसवा बीसजी ॥ मूर्ख० २० ॥ सूत्र साखे ढाल वणाई । आगीपाछी कोयजी । ओछी इदकी आगम सेती । मिछयादुकडंमोयजी ॥ मूर्ख० २१ ॥ १९ से बावन

कटलामें। आसाढ सुद अस्टमी जाणजी। असातना इकवीसी सूंपने मत कोई लीज्यो ताणजी ॥ मूर्ख० २२ ॥ इति संपूर्णः ॥

## ॥ तीर्थंकर गोतरी ढाल लीख्यते ॥

निरमल जिन। सुध समगत पाई। वांके कुमी रही नहीं कांई। ए देसी। अरिहंत सिध आचारज उपाध्या। ज्यारा लीजे सरणा। पंच पदारा गुण गावंता। मेटे जामण मरणा ॥ १ ॥ बांधे गोत तीर्थंकर प्राणी। सेवे वीस बोल हित आणी। आंकडी। प्रवचन माता गुरु गुण गातां। थेवरना गुणग्रामे। बहुश्रुत तपसी गुण गातां। अनिचल पदवी पामे ॥ वां० २ ॥ भणीयो गुणीयो याद करंतो। समकित सुध पालंतो। सात प्रकारे विनय आराधे। पडीक्रमणो नित करतो ॥ वां० ३ ॥ सील आचार अरु व्रत पालंतो। तीजो चौथो ध्यांने। बारे भेदे तपस्या करतो। अभेदान सुपात्र दाने ॥ वां० ४ ॥ दस प्रकारे व्यावच करतो। सरव जीव समादे। ग्यान अपूरव भणतो गणतो। स्त्रनी भक्ति आराधे ॥ वां० ५ ॥ मिथ्यामतने दूर करंतो। जिन मारग दीपावे। ग्राम नगर पूर पाटण विचरे। तीर्थंकर पद पावे ॥ वां० ६ ॥ देख थोकडो ढाल बणाई। १६ सेने नानने। जैपुरमांए जबान कहत है। ते प्राणी धन धने ॥ वां० ७ ॥ इति संपूर्णः ॥

## ॥ पोसारा १८ रा दोंपरी ढाल लिख्यते ॥

वाणी श्री जिनराज तणी कांने पडी रे प्राणी ए देसी। दोप अठारा टाल पोषद कीजे सही। रे प्राणी द्रव खेत्र काल भाव देख चूके नहीं ॥ १ ॥ पहेले दिन सरस आहारे। कुसील न सेवणो।

रे प्राणी । नावो धोवो नाय । नख केस सवारणो ॥ २ ॥ पोसामें हाथ पावे । चंपावे जोपस्तू । रे प्राणी । होय वैठा निसंके । डरे नही दोपस्तूं ॥ ३ ॥ माला मोती हार । विलेपन चरचन्हो । रे प्राणी । लेवै दिनकी नींद । शब्दादिक वरजन्हो ॥ ४॥ विन पूंज्या खीणे खाज । उतारे मैलने । रे प्राणी । निद्या विगता विवाद । नजर चिपे रागमें ॥ ५ ॥ घरका सुधारे काम । भोलावे कुलाभणी । रे प्राणी । नहीं देणो सनमान । उभगरणा छूटा भणी ॥ ६ ॥ नहीं वंछे मनमांए । बुरो पेला तणो । रे प्राणी । जैपुरमांय जड़ाव । कयो मानो हमतणो ॥ ७ ॥ १६ से बावन । श्रावण वद बीजने । रे प्राणी । दीनी ढाल वणाय । भवि उपगारने ॥ ८ ॥ इति संपूर्णः ।

## ॥ बार भावनांरी ढाल लीख्यते ॥

देसी देवदानव तीर्थंकर । अनित्य पहेली असरण दूजी । तीजी संसारस्वरुपे । एकंते चौथी सिन । पांचमी देही असुचनो कूपे । रे प्राणी । भावना सुध मन भावो ॥ आकड़ी ॥ १ ॥ आस्वर भावे समवर कीजे । निरजरा करमनी पावे । लोक सरुपे वीचार करंता । धर्म ध्यान वध जावे ॥ रे प्राणी भा० २ ॥ बोध भावना वारमी भावे । समगत निरमल थावे । समगतथी संजम सुध होवे । संजमथी सिव पावे । रे प्राणी ॥ भा० ३ ॥ १६ से बावन जैपुर में । असाढ सुद तेरसे । कहत जड़ाव शुद्ध भावना भावो । अजर अमर पद पावो । रे प्राणी ॥भा० ४ ॥ इति संपूर्णः ।

## ॥ सम्कितरी ढाल लीख्यते ॥

देसी प्रीत मारी जिनवर से लागीरे प्रीत तथा कर्म रेख नहीं

ले । ओलख जीव छकायना मरे । अणुकंपा आणोरे । जीवकीग्र । देवगुरु नव तत्व पिछाणो । दया धर्म जाणो । जैनको मारग है बांकोरे । जैन । कठण खडगरी धार । विषम है सुईको नाको । आकडी ॥१॥ सवहीसै समभाव । चाव एक मुक्तिको राखोरे । चा० । जिन वचनारी प्रतीत । भोगरी वंछा मत राखो ॥ जैं० २ ॥ प्रथम हिंसा त्याग । झूठ कोइ मुखसे मति भाखोरे । झूठ । चोरी परस्त्री द्रव्यकी ममता मति राखो ॥ जै० ३ । पंच महाव्रत मूल । अनुव्रत श्रावकरा जाणोरे । अ० । तिनासु गुण होय । शिक्षा व्रत चारु पीछाणी ॥ जै० ॥ ४ ॥ ए समद्रष्टी जाण आण मन समता दृढ राखोरे ॥ ॥आ० ॥ कुटुंब कानिलो छोड ॥ विषय सुख फिर फिर मत भाको ॥ जै० ५ ॥ दान सील तप भाव । चारकी चोकी कर राखोरे ॥ आ० ॥ मन मांने सो माल ले जावो । शंका मत राखो ॥ जै० ६ ॥ एहइ जैन मत मर्म । धर्म एक खिम्या के मांइरे ।धर्म। ज्यो पाले भव उसीके । सिव-पुरकी साई ॥ जै० ७ ॥ १६ सें नावन । जेठमे जेपुरके मांडरे । समगत उपर जोड लावणी । जडावजी गाई ॥ जै० ८ ॥

## ॥ बालचंदजी माहाराजना गुण लिख्यते ॥

देसी रतन मुलनी लोकनीलारी । बालमुनि दरसण क्युं नहीं दिराया । माने त्रस त्रस त्रसाया । चवणमुनि दर्शण क्यूं नहीं दि-राया ॥ आकडी ॥ १ ॥ रसना नाम रट्यो मुनी थारो । मनडो गणोइ उमायो । नैणे दोए त्रसत है दर्सकुं । पावन छेह दिखायो ॥ वा० २ ॥ काहा करुं मे अन्ही पाइ । प्रवीने उडोह न जाइ ।

जंगाचारण विद्या न मोपे । सेवा सारुं सदाइ ॥ च० ३ ॥ धन वा धरती ज्यां पाव धरत है । मीथ्या अनड नमा हो । दीन दयाल कीरपाल कहीज्यों । तो माने कीम त्रसाहो ॥ वा० ४ ॥ ग्राम नगर पूर पाटण वीचरो । करते ग्यान उजीयारो । धन वा जननी जनम दीयो हे । धन थांरो अवतारो ॥ च० ५ ॥ धन वे श्रावक वाणी सुणत हे । प्रतलासै सुध आहारो । सेवा सारे अष्ट पोहोरकी । दरसन करत तुमारो ॥ वा० ६ ॥ दो दो वार नागोर जोध्याणै । वडलू फीर फीर जावो । पाली पीपाड पे कीरपा तुमारी । जेपुरमें चूक वताओ ॥ च० ७ ॥ सव श्रावक त्रसत है दरसकू । याद करे नर नारो । कव मुनि पाव धरे जेपुरसें । जीवन प्राण आधारो ॥ वा० ८ ॥ करता संभाल छे मास वरस में ॥ पूरण कीरपा तुंमारी । दोय वरस वीत गये तथापि । आ अंतराय हमारी ॥ च० ९ ॥ सुण ओलंभा खीज करो तो । कैद मुक्तके माइ । रीज करो तो सीव सुख दीज्यो । दोन्यूंइ मन भाइ ॥ वा० १० ॥ सव संतनसे एही अरज हे । मो पर महर करावो । करुणा सागर सेप काल में ।वीचरत जेपुर आवो ॥ च० ११ ॥ चुक हमारी कीरपा तुमारी । दोन्यूंइ एक सारो । जेपुरमांए जडाव जपत है । नाम मूनी एक थांरो ॥ वा० १२ ॥

## ॥ श्री सीमंधरजी ढाल लीख्यते ॥

॥ देसी ॥ गोरांदे वाइ आजे वसो न जी मारा देसमें । प्रभुजी खेत्र वीदेह वीराजीया । जठै वर्ते छे चोथो आरो । श्री मंधीर स्वामी । श्री हंस पीता तुम तणा । थांने संतकीमातमेलारो । श्री

मंधीरस्वामी माने आधार वो प्रभुजी आपरो ॥ आंकडी ॥ १ ॥ प्रभुजी लाखे चोरासी पूरव आउखो ॥ उंची पांच गो धनक थारी कायो ॥ श्री० ॥ कचन वरण सुहावणा । मारो दरसणने मनडो उमायो ॥ श्री २ ॥ प्र० कवरपणे ैरा लाडमे । पछे पिता गया परलोके ॥ श्री० ॥ वीस लाख पूरव पछे । पायो राज लीला सुख भोगे ॥ श्री० ३ ॥ प्र० लाख त्रे पठ पूरव लगे । थेतो शुभ वर्ताई नीते ॥ श्री० ॥ तीन ग्यान धरमे थका । थारी लागी मुगत सुं प्रीते ॥ श्री० ४ ॥ प्र० कामभोग जाणया कारमा । थेतो वोहत कीयो उपगारे ॥ श्री० ५ ॥ प्र० कर करणी केवल लीयो । थारा नाम थकी नीसतारे ॥ श्री० ॥ लाख पूरव चारित पालने । थेंतो जास्यो मुकत दवारे ॥ श्री० मी० ६ ॥ प्रभूजी मासे सावण । चोथे चानणी । समत १६ सें बावन वरसे । श्री मंधीरस्वामी । जेपुरमांए जडावजी । थारा दरसणने जीव घणी त्रसे ॥ श्री० ७ ॥

## ॥ पंचेंद्रीनी ढाल लीख्यते ॥

। देशी गेरो फुल्यो हो हजारी मेढा बागमेरे । प्राणी पंच इंद्री वस कीजीएजी। अरे अजर अमरपद लीजीएजी । उल्लालो । तिणसुं सुख अनंता पावे । फिर फिर गरभा वास न आवे । जिनसुं जनम मरण मीट जावे ॥ १ ॥ प्राः आकडी ॥ श्रोत्र इंद्री वस दुख भोगवेजी । मूरख मीरघा मरण लेहावे । पूंगी उपर सर्प वधावे । वरवस होटने बहु दुख पावे ॥ प्र० २ ॥ नेत्रां वस होय पतंगीयोजी । दीप सीखामे भसमी होवे ॥ प्र० ३ घाण इंद्री वस मंभ्रकर मरे जी । लोभी कुमपनमे फस जावे । रस मकरत लेइ सुख पावे । कुंजर कुतनमे गिट जावे ॥ प्रा० ४ ॥ रस इंद्री वसमारे माछलोजी ।

रस कस लेवाने उमावे । तुरत गले कांटो पस जावे । साधू संजम मूल गमावे । प्रा ० ५ ।। फर्स इंद्री वस होय मानवीजी । केइ प्राणी प्राण गमावे । लंपट लोकांमांय कहावे । कुंजर वूरे हवाल मरावे ।। प्रा० ६ । इंद्री अकेकी वस दुख सहजी । पांचाके वस केइए वीगूंतां । सुरनर इंद्र होय फजेतां । भन मुनीवर थे पांचूइ जीतां ।। प्रा० ७ ।। रुडा शब्द रुप रस गंधसे भलाजी । आछा पुरस थकी सुख पावे । सेज्या फुलनकी मन भावे । नकसी सर्प तुरत डस जावे ।। प्र० ८ ।। समत १६ सें तेपन भलोजी फागण सुद पख सातम जाणी । जेपुरमांए जडाव वखाणी । निज पर आतमने हीत आणी ।। प्रा० ६ ।।

## ।। करम रेखरी ढाल लीख्यते ।।

।। राग ।। कर्म रेख नहीं टले । करो कोइ लाखा चतुराइ । आंकड़ी ।। १ ।। धर कर धीरज ध्यान । ग्यान कर मनकुं समजाणारे ।। ग्यान.।। बीन भूगत्या नहीं होय छूटको । अबी चूका देणा । क-रज एक कर्मनका भाइरे ।। करज ।। क० २ ।। फेर कहु कर्मनकी वतकारे ।। फेर ।। वड़े बड़े सब चूक गक गये । रहे इतकाने उतका । मनुष्य भव बार वार नहीरे ।। मनु० ।। क० ३ ।। कर्मसें को न जबर भाइरे ।। कर ।। सतीया साध तिंर्थकर गुणधर । सरब हार खाइ । संजम लीयो मुक्तीके ताइरे ।। सं. ।। क० ४ ।। करमसें सीत भरीं बनमेंरे ।। क. ।। राजा रावण पकड मंगाइ । देव जोग छीनमें । धीरज कर जगमें जस पाइरे ।। धी ।। क० ५ ।। बीरने कर्म दीया झोलारे ।। बी० ।। काननमें खीली खटकाइ । स्वान कीया दोला ध्यानसें नहीं चूका काइरे ।। ध्या. ।। क०६ ।। द्रोपदी सतीय नमे

मोटीरे ॥ द्रो. ॥ भीम हाथसें कीचक मूवो ॥ नीजर धरी खोटी । हादी जूग के मांहरे ॥ हा० ॥ क० ७ ॥ भरममें मेवारज मारयोरे ॥ भ. ॥ खंदक रीखनी खाल उतारी । जरासींघ हार्यो । हरीने मार लीयो माहरे ॥ ह० ॥ क० ८ ॥ करममें मुरपव घमरायारे ॥ क० ॥ नर्के भडेकी भइ फजेती । कवी जीन मुख गाया । जाणकर मत गांनो माहरे ॥ का० ॥ क० ९ ॥ ध्यान मन नव पदका धरणारे ॥ ध्यान० ॥ तप जप संजम खरची ले ले । सतगुरुका सरणा । मरणा मन मनमें सुखदाईरे ॥ म. ॥ क० १० ॥ गरन नहीं करणा तन धनकारे ॥ ग० ॥ पलक एकमें पलट जाय । या नारी है गणिका । दानसुं संग ले ले माहरे ॥ दा. ॥ क. ११॥ समत १९ से ५३ । जेठ नद जेपुर के मांहरे । जे. । करम कथारी जोड लावणी । जडावजी गाइ । करमकु मत बांधो माहरे ॥ क० १२ ॥

## ॥ राग होरी काफीरी ॥

मतलूंटोरे । हारे मत लूटोरे । प्राण पराया प्राणी ॥ मत० ॥ आंकडी । प्राण पराया आप सरीखा । हारे जीवा । भाख गया केवल नाणी ॥ मत० १ ॥ चारे थावरमें जीव असंख्या । हा० । वनास्पती में अनंतेनाणी ॥ मत० २ ॥ त्रस थावर केइ सूखम प्राणी । हा० । उनागिरे जना करो करुणा आणी ॥ म० ३ ॥ पुन नीदुणानागा थावर । हा० । जाउं नेर कीया पडे दुख खाणी ॥ म० ४ ॥ अनर्थ वेर करे बेकामे । हा० । ए तो प ट पगाडे न पीछाणे ॥ म० ५ ॥ हम हम पाप करे केइ मूर्ख । हा० । काइ दुख सहेता काया कुंमलाणी

॥ म० ६ ॥ धरम काज करे बहुहिंसा । हा० । यातो नरक जावणरी नीसाणी ॥म० ७॥ कहत जडाव जेपुर के मांइ । हा० । ज्यारी रचा करो उत्तम प्राणी ॥ म० ८ ॥ १९ से फागण सुद तेरस । हा० । थे तो सुखे २ जावो निरवाणी ॥ म० ९ ॥

## देसी ॥ पूछे पीया क्यूं नै पाणीरे पंडीत

रोस कोमीसै म आणोरे भवीयो । रोस० । दोस करमको पीछाणो रे भवीयो । रो० । आकड़ी ॥ १ ॥ रोस करीने निज गुण बाले । परगुण दाय न आवे । काच ने साटे हीरा हारेतो । वीरथा जनम गमावेरे । भवीयो । रो० २ क्रोध-मान चंडाल सरीखो । भाख्यो केवल नाणी । आगो पाछो कोइय न सोचतो । तोड़े प्रीत पूराणीरे । भ० ॥ रो०. ३ ॥ नेह गटावे वेर वधावे । अपजस पैडो बजावे । तप जप संजम मूल गमावे तो ॥ नरगती-गोदे भमावेरे । भ । रो० ४ ॥ तिरजंच जोग लहे करोधी । सांप वीछूं गो थावे । आगला कर्म उदे में आया तो । फिर पाछो वैर वधावेरे । भ० । रो० ५ ॥ क्रोध मान ए दोए मोरचा । माया मान पडावे । पुरस थकी नारी होय जावे तो । नारीही ज कहावेरे । । भ० । रो ६ ॥ लोभी नर ए चारुइ सेवे । कयो दसमी कालरे मांयो । सागर सागर में पड मूवो तो । नंदराय धन खोयोरे ।भ० । रो० ७॥ इत्यादिक केइ जीव अनंता । ज्यांने चार कषाय रुलाया । चारु गतमें चोपड खेली तो । छोटी ते सीव सुख पायारे । भ० । रो० ८ ॥ पर नींद्या पर अवगुण करकर । मेल पायो धोवे । पग बलती नहीं देखे मुरख । डूंगर बलती जोवेरे । भ० । रो०

८ ॥ १६ से जडाव जेपुर में । तेपन होली चोमासी । निज आतम समभावण कारण । जुगतेसुं जोड प्रकासीरे ।म०। रो० १०॥

## देसीं ॥ भांगरा गीतरी० ॥

कइ ल्यायोनै काइरे ले जासी । सुग्यानी जीवा । कुणसीरे गत जासी । अब तुं तिरजा । पापथुं डर जा । जगतं जस लेजारे जीवडला । जनम लेखे कर जारे जीवडला । आकडी ॥ १ ॥ नर भव पायो तुं एल गमायो ।सु० आगेरे गणो प मतासी ।।अ० २॥ पूरव पुंजी तुं खाइ खुटाइ । मूर्ख प्राणी । रीतोरे होय जासी ।अ०। ३ ॥ पुदगल फंदमें पडयोरे अनादको । सु० अब तोरे कांटो फासी । अ० ४ ॥ पाप वधायो ने पुन घटायो । सु० भव भवरे गणो दुख पासी ॥ अ० ५ ॥ प्राण पराया तुं हस हस लूंटे । मू० लेखोरे आगे होय जासी ॥ अ० ६ ॥ सुध पख पूनम । भरयोरे भादवो । संवत नानन रे जैपुर वासो ।।अ० ७। जोड जडाव सुणाइ । जगतसुं । सु०। चेतोरे घणो सुख पासी ॥ अ० ८ ॥

## ॥ जरा टुक जोवो तो सही ए देसी

श्री गुरु देव उपदेस । चतुर सुण धारो तो सही । सुग्यानी समझो तो सही । होजी तजो क्रोध मान अरु लोभ । ममतंकु मारो तो सही ॥ म० ॥ सु० १ ॥ होजी मारे पडे भजन मे भंग । सग ले चालो तो सही । होजी मारी अधवीच अटकी नाव । पार लगावो तो सही । होजी माने प्रभू वीन कुण आधार । लारले चालो तो सही । सु० । आंकडी ॥ २ ॥ भवसागर बीच नाव चावरू वेठा छो सही । होजी अब खेवणवालो कुण । समदमे पेठा छो सही ।

होजी मा० ॥ सु० ३ ॥ पडे मीथ्यातनी रात अंतनु मटीवो तो सही । सु. होजी अब गुरु बीन घोर अंधार । ग्यान गुल जोवो तो सही ॥ सु. ४ ॥ धर्म धना हो दाद्दसार । सुध भावना सही । सु. होजी मारा सत गुरु खेवणहार । पार उतारेला सही । होजी मा. ॥ सु. ५ ॥ रोको आश्रव छेद । भेद नहीं तिरवामें सही ॥ सु. ॥ होजी भरो दान सील तप भाव । माल ले बेठा छो सही । सु. ६॥ पहुंचो सिवपुर ठाम । काम सीध होवेला सही । सु. होजी तिहां बेठा जगजंजाल । तमासो जोवेला सही । होजी माने गुरु ॥ सु. ७ ॥ १९ से तेपन मह। वद जेपुरमें सही । होजी तीथ गातम ने ससिवार । जुगतसुं जडावजी कही ॥ सु. ८ ॥

हा हुकम लीख दीया सदगुरु से । हा कनक्यो कान धीयारो । महा वीर सामण के सामी। आया विरामणी कुख मोजार । नहीं मीटे जगमें होवणहार । ए निरते कर लीज्यो धार । कहांकु सोच करो नरनार । मीटे न जगमें होवण हार । आंकडी ॥ १ ॥ रावण तीन खंडको राजा । ले गयो रामचंद्रकी नार । पडयो नरकमें खावे मार ॥ मी. २॥ सोकां आल दीयो सीर उपर । सीताने काडी वन मोझार । परवर जाण दोय कुंवार ॥नहीं. ३॥ सेणकराजा समकीत धारी । घणा जिवसुं कियो उपगार । बैठे नावा बंद मोझार ॥ मी. ४॥ कुंडरीक साधु वीरत भांजि । पहुंच्यो सातमी नरक मोझार । ग्यातामें तेनो अधीकार ॥नहीं. ५॥ पंडव पंच बुधके सागर । जुवे खेल हारी नलनार । महा भारतमें छे वीसतार ॥ मी. ६॥ कृष्ण महाराजा करी दलाली । साज देइ तार्यो परवार । माठी गतमें लीयो अवतार ॥ मी. ७॥ आने जस्य दध्या मूजरघर । मरया

कसुंनी नन मोभार । नही मन्यो पाणी पतणहार ॥ नहीं. ८॥ दीपायणतपसी सतायो । दुआरका बाली छीन मोभार । छतानेमजी श्रुदृढधार ॥ मी. ६ ॥ जमालीरीस महावीरनो । सरधा भृस्ट हुवो मवहार । पोत्यो कीलमीष देव मोभार ॥ नहीं.१०॥ घोसाले बाल्या दो सारू । बेठा समोसरण मोभार । तिर्थंकर दुख सया अपार ॥ मी. ११ ॥ मीरग लीख्या मीरगावती सेती । मेणरया न अजणा नार । पतिरीरह दूख सह्याअपार ॥ मी. १२ ॥ होणहार टले कुण जगमें । तिर्थंकर स्त्री अवतार । वेल चढी रह राजुल नार ॥ नहीं. १३ नीश्चय ग्यानी गम वाता । छदमस्तेसा जे नीनहार । कहत जडाव जपो नवकार । मी. सीख सुगुरुकी लीजे धार ॥ नहीं. १४ ॥ पंचरतोनी नारी द्रोपदा । नारदा । नारद द्वेष धरयो अणुपार । मेल दीवी जिण समुद्रपार ॥ १५ ॥

## ॥ लावणी लीख्यते ॥

तजिएरे आलस दूर थइ एकमना भजिए नुकरकार मुनी सरधना ए देमी । तारो टुटे दीसरातीलज दूजे पेडे धूंहर जगात के धरती धूजे । दीसमै चमके बीज अकाले गाजै । अ० होय कडक सबद । आकाम कदी समे दाजे ॥ १॥करो सजाय चित लाय । असजाय टाली ॥ अ० या वाणी छे सुखदाय कटे कर्म जाली । आंकडी ॥ २ ॥ हाड मांस ने लोइराध टालीजे । मीरती पंच थमानक डेमालीजे । बालचद्र जप चंन द्र । गिरण आकासे । गिर मीरतूग मिरेह राज । मीनख नलेपासे । करो० ३ ॥ असाढ सुद भाद्रवो आसोज कती । ए पाबू पडवा जाय । । पूनम चेती । सरन क्षिस ए साज सवार नहीं भणीजे । आदी रात

अवसर चूको मती । कोइ उत्तर खेतो दावो ॥ मा० ॥ चा० ५ ॥ घर धंधो छे कारमो । सब सुतलब केरा यारो । मा० । साचो सरणो धर मेरो । माने भव भवमें आधारो ॥ मा० ॥चा० ६ ॥ चैत सुकल छ तेपने । जडावनो जोड बणाई ॥ मा० ॥जेपुरमां ए जुगलेसु । सब बायांरे मन भाइ ॥ मा० ॥ चा० ७ ॥

## ॥ नेमजीरो बारा मास्यो लीख्यते ॥

। न्यालदेरा गीतनी देसी । असाडमें आसा हुतीजी कइ । आसी जान वणाय । आया तो फिर क्युं गयाजी । होजी कोइ पसुवा दोस चडाय । अब फोर आवो नेम मेरा फरोजो । आंकडी ॥ १ ॥ सावणमें संजय लीयोजी कइ । संग लेइ परिवार । जाय जाय चढया गिरनारपेजी । होजी । कोइ हमारी न लीनी तार ॥ अ० २ ॥ भाद्रवे विरखा वणीजी कइ नदीयां चढ्यां नीर । चारु दोर पवन जे कोलतोजी । होजी मारे लागे तीखो तीर ॥ अ० ३ ॥ आसोज आसा वडीजी । अब आसी दीनदीयाल । मनरा मनोरथ पूरसीजी । होजी खाने करसी वहोत नीहाल ॥ अ० ४ ॥ कातीक कंथ नहीं आवीयाजी कइ । यो मन सांसो थाय । पर्व दीवाली किम करुंजी । होजी मारो तन धन एलो जाय ॥ अ० ५ ॥ मीगसर महीने पद फरेजि । कइ मंगल माला जोय । सार न पूछी साहीवाजी । होजि मैंतो सुक २ पींजर होय ॥ अ० ६ ॥ पोस महीने सी पडेजि कइ । जमै नदीनां नीर । नेम खडा गीरेनारपेजि । होजि ज्यारो कंपे नगन सरीर ॥ अ० ७ ॥ मह्रा वसंत वीराजियोजी कइ । फुली सब वनेराय । हुं कुमलानी केल ज्युंजि । होजि मारे पूरवली अंतराय ॥ अ० ८ ॥ फागण फाग खीलावज्योजी

कइ । अरज करु कर जोड । अन्तर पुरुषनी आखडीजी । होजी मारे थेंइ मायारा मोड ॥ अ० ९ ॥ आंबो महुडो चैतमेंजी कइ । नेम न बहुभयो लीगार । कठ खूल्यो कोयलतणोजी । होजी माने तुं तुं दे तुंकार ॥ अ० १० ॥ फल पाका वैसाखमेंजी कइ । पाकी दाडम द्राख । काची कवर थांरो प्रीतडीजी । होजी माने छोडो ओगण भाख ॥ अ० ११ ॥ जेठ तपे अंते आकरोजी कइ । वाजे लूंवो जाल । नेम तपे गिरे नारेजी । होजी देही अतिसुखमाल ॥ अ० १२ ॥ वरम एक पूरो कीयोजी कइ । भूरतां राजलनार । इक रगी करी प्रीतडीजी । होजी कइ धन ज्यारो अवतार ॥ अ० १३ ॥ ले संजम लारे गइजी कइ । सफल कीयो अवतार । मुगत कोलो कायम कीयोजी । होजी पीव पहेला राजल नार ॥ अ० १४ ॥ १६ सें बावनजी कइ । जेपुरमांए जडाव । सावण वद तिथि पंचमीजी होजी यातो मागे मुगत पडाव ॥ अ० १५ ॥

## ॥ दूजो वारा मास्यो लीख्यते ॥

राग वडे घर ताल लागीरे । ए देशी । चैंत कहे तुं चेत प्राणी । वीत्यो जाए वैसाख । वे सारां धरम पापरी । थांरे पाकी समकीत दाख । मत कर मारो मारोरे । धर्म वीने धूले जमारोरे । आंकणी ॥ १ ॥ जेष्ट श्रेष्ट तुम जाणजोरे । मानवरो अवतार । पुन संजोगे पामीयोरे । सो एलो मती हार ॥ म० २ ॥ असाढा आसा फलीरे । मोरया करतमलार । सतगुरु इंद्र घडकीयो । वाणी वरसे सगन घने धार ॥ म० ३ ॥ सावण स्वण रस पीजिएरे । जिन वाणी भरपूर । मीथ्या रोग मीटा वसी । ज्यांर सीव सुख नहीं छे दूरे ॥ म० ४ ॥ भाद्रवे भीरखा गणीरे । दादुर करत पूकार । जनम

मरण नदीयां चली । मत डूबे कालीधार ॥ म० ५ ॥ आसोजा आसा करे । गुरु बचनाकी प्रतीत । स्वात बूंद जिम झेलज्यारे । नहींत्र होला फजित ॥ म. ६ ॥ काती किरतव आदणारे । देखो मत पर दोप । निज पर आतम ओलखोरे । आणो मन संतोप ॥ म. ७॥ मीगसर ममता मारनेरे । समता करो घरनार । सहल करो सिव पुर तणी । राखो केवल चोकीदार । म. ८ ॥ पोस महीने सी पडेरे । सह परीसा सुर । कायम भागा वापडा । ज्यारा भूंडा दीसे नूर ॥ म. ९ ॥ महा वसंत भली रितु आइ । हुलस्या भवी सुखकार । फुली पुरखदा देखनेरे । दरसण गुरु दीदार ॥ म. १० ॥ फागण फाग खेलो भव प्राणी । समकीत स्त्रीके संग । पीचकारी पछकाणरी । भर डारो सील सुरंग ॥ म. ११ ॥ बारा मास वीत्या केइ रीता । पडी आउखामें हाण । गइ गइ सो जाणंदो । अब चेतो चतुर सुजाण ॥ म. १ २ ॥ अढारसें वरस बावनेरे । जेपुर सेके काल । जेठ महीने जडावजी । जोडी बारे मासरी ढाल ॥ म. १३ ॥

कहोरे उदा सामजी कद आसी । ए राग । साधुजीरी वंदगी मैं तो करस्यांरे । माहाराजारी वंदगी मैं तो करस्यां । हारे में तो करस्यां ने भव तिरस्यां । सा । आंकडी ॥ १ ॥ मूनी पंच माहा वरत पालेरे । मूनी इरिया पंथ नीहालेरे । मूनी आतम गुण उजवाले ॥ म्हा. २ ॥ मूनी गुण सताइसधारीरे । तपस्या कर कठण करारीरे । खट कायाना हीतकारी ॥ सा. ३॥ मूनीग्यानदानरा दातारे । अनाथा जीवारा नाथारे । दरसण देख्या मीले सुख साता । म्हा. ४॥ मुनी दोप वेतालीस टालेरे । सत्र भेदे संजम पालेरे ।

जीन आग्या प्रमाणे चाले । सा. ५॥मुनि गाव नगर पुर फीरतारे । मुनि पर उपगार ज करतारे । एक ध्यान सुकल मन धरता ॥ माहा. ६॥ अठारेसंससीलगरथ धारारे । मुनि उपसम रसना क्यारारे । माने लागे खाड ज्यूं खारा ॥सा.७॥ संसार दुखासुं न्यारारे । भव जीवाने लागे प्यारारे । राग द्वेषने जीतणहारा ॥ महा. ८॥ ज्यारी वाणी इमरत मेवारे । चोसठ इंद्र करे ज्यारी सेवारे । वारे वारे वंदू मुनि एवा ॥ सा. ६॥ नव वाड सहत व्रत धारीरे । केइ बालपणे ब्रीमचारीरे । करणी करे आतमा तारी ॥ महा. १० ॥ केइ तपसी त्यागी वेरागीरे । केइ ग्यानी ध्यानी वडभागीरे । सीव रमणीसुं लीव लागी ॥ महा. ११॥ ज्यामें गुण अनंता पावेरे । मासु पूरा किया किम जावेरे । जडावजी सीस नमावे ॥महा. १२॥ समत १६ सें चालीसेरे । नैगीन रभाजी हुलासेरे । कीयो चोमासो सुवीलासे ॥ सा. १३॥

## ॥ डोडीया पद लीखंते ॥

॥ राग काफीरी देसी छे ॥ मन चंचल केसे मुडेरी । पापी वीन पाखे उडेरी ॥ मन चचल केसे मुडेरी ४॥ म. ॥ आंकडी ॥१॥ एरीए छीनमे लीन होय पुदगलमे । छीनमे जोगे जुडेरी । करएकलास । दास होय बोलोतो । छीनमे जाय लडेरी ४ ॥ म. २॥ एरीए मनकी मोज करे मनसुवा । भागे केइ गडेरी । सेखसली जिम कर्म कमावे तो । दुरगत जाय पडेरी ४॥ म. ३ ॥ एरिए ग्यान लगाम थाम मन घोडा । उपर जाए चढेरी । मन वस राख जडाव जेपुरमे तो ॥ कर्म क्वीसें डरेरी ४ ॥ म. ४॥

## ॥ राग तेहीज ॥

॥ मनकी गत कैसे लखेरी २॥ कवी जीन कह नहीं सकेरी। म. ॥१॥ आंकडी। एरीए नाटक चक्र चक्र गत एहनी। जावत को नै दीखेरी। चउ दीसमांए भमे भवरा जीम। फिरतो कोनै थकेरी ४ ॥ म. २ ॥ एरीए नीरलज लाजे नही मन मूर्ख। ठाम कुठाम तकेरी। मनकी ल्हर सुणे कोइ सैंणो तो। जाणे झूठो ज करी ४ ॥ म० ३ ॥ एरीए मन मावत तन चंचल हस्ती। ज्ञान अंकुसनकैरी। मन वस राख जडाव जेपुरमें तो। ज्यौं सुख चावे अखेरी ४ ॥ म० ४ ॥

## ॥ राग तेहीज ॥

। मनडा मेरा बोहोत हरामी। जाणे एक अंतरजामी ॥ म० ॥ १ ॥ आंकडी। एरीए निज गुण छोड रमें पर गुणमें। एही जीवकी खामी। सतगुरु सीख भीख नहीं भरतो। होत जगत बदनामी ४ ॥ म० २ ॥ एरीए इमरत छोड। बीसन्न बिष पीवत। होए कुमतको स्वामी। इणकी संग बहोत दुख पायो तो। अब तो छोड गुलामी ॥ म० ३ ॥ एरीए मनकी फोज चोज कर जीते। सोइ मुगतके गामी। जैपुरमांए जडावजी सीषूं। नमत सदा सीर नामी ४ ॥ म० ४ ॥

## ॥ राग तेहीज॥

। मन चंचल हाथ न आवे। दोडयो बायर जावे। म० ॥आंकडी ॥ १ ॥ एरीए घेर घेर लाउ नीज गुण में। तो पिण फंदे लगावे। फाल भरे बंदर की नाइतो। कूद कीनारे जावे ४ । म० २ ॥ एरीए राग रंग अरु ख्याल तमासे। बीगर बुलायो जावे। ग्यान

ध्यानमें आलस आवत । अरड उवासी आवे । म० ३ ॥ एरीए भूत पीसाच कुंजर एहीकेहर । भूपत पीण वम थावे । जैपुरमांए जडाव कहे । मन पांख वीने उड जावे ४ ॥ म० ४ ॥

## ॥ राग तेहीज ॥

। पूजजी तो वडा उपगारी ॥ आकडी ॥ एरीए पच महाव्रत निरमल पाले । गुण पट तीसे नीहारी । सुमत गुपत मन दीड कर राखे तो । ममता कुमत वीडारी । पूजजीसूं रहूं नीत न्यारी ॥ पू० १ एरीए सतर भेदी संजम पाले । तपस्या वीविध प्रकारी । दोप वयालीस टाले भली पर । ले नीरदोपण अहारी ॥ पू० २ ॥ एरीए वाणी वरसे । इमरत धारा । सुण समजे नर नारी । मीथ्या पारे धुपे आतम को तो । सम अकुर उगारी । के फल लागा सुख भारी ॥ पू० ३ ॥ एरीए समतारा सागर । ग्यान उजागर । प्रतबोधे नर नारी आप तीरे अवरनकुं तारे तो । कर कर पर उपगारी के । अब तो वारी हमारी ॥ पू० ४ ॥ एरीए वीचरे ग्राम नगर पुर पाटण । वहोत करो उपगारी । सहर सुनटपूर वेग पदारो तो । वाट जोवे नर नारी । के इच्छा पूरो हमारी ॥ पू० ५ ॥ एरीए पाट वीराज्या पूज रतनरे । आचारज पद भारी । सांवली सूरत म्होनी मूरत । देख देख जाउ वारी ,के नीत नीत ननणा हमारी ॥ पू० ६ ॥ एरीए एक जीभसु कहुरे कठा लग । महीमा इधक तिहारी । वे कर जोड जडाव कहतहे । सहर जोध्याणा मजारी । वेसाख सुकल गरनारी ॥ पू० ७ ॥

## ॥ राग तेहीज ॥

। सांवरा मती जावो गीरनारी । लाड वरजत राजल नारी । ।सा०

वाला अैतो कै कै हारी ॥ ला० ॥ आकड़ी ॥ एरी ए मती जाणा मथुरा में आणा । करके जान तियारी । परण्यां पाछे जोगारम लीज्यो तो । मैं भी साथ तुमारी के । लेउंगी संजम भारी ॥ सां० १ । एरीए पसुकी पुकार सुण चाले । मेरी पुकार न वारी । झुर झुर में पंजर भइ प्रतीम । विरह दावानल भारी के । दाजत देह हमारी ॥ ला. २ ॥ ऐरीऐ पूरषोतुमको व्रिद ने । जीव दया दील धारी । मेरी दया न करी अलबेसर । छोड़ गये गीरधारी के । बीलखत हे महतारी ॥ सा. ३ ॥ ऐरीए वोत जलुस करीने आए । हरी हलधर संग थारी । उनकी जराभर काण न राखी तो । सुरजरए हे मूरारी । लाजी सब जान तुमारी ॥ला. ४॥ एरीए प्हेला बैराग हुतो ज्यों थांरे तो । क्या न कीयो वीसतारी । बिन परण्या मारे खोड लगाइ तो । किण आगे करुए पुकारी । जाणे कुण पीड हमारी ॥ सां. ५॥ एरीए बरण सांवला । सोमांएगाठीला । लख न सके नर नारी । कपट करी मेरो कीयो सगारथ । राखी अकन कवारी । करी न्हा चोरी तुमारी ॥ लां. ६॥ एरीए बारा मास विलाप किया केइ । दीया ओलंभा भारी । बरसी दान देइ व्रत लीनो तो । अब न्हां लागत कारी । जगतमें होए गइ जहारी ॥ सां. ७॥ एरीए अब जाउं काहा पाउं सावरीयो । ढूंढत ढूंढत हारी । सातसें सखीयां संग लेइ राजुल । चड गइ गढ गोरनारी । मीले ज्यां प्रीतम प्यारी । लां. ८॥ एरीए एसा कठोर भए तुम कबके । पूरव प्रीत वीसारी । तुंम तोडी सो मैं अब जोडु तो । लेउंगी संजम भारी । रहूंगी संगे तुमारी । सां. ९ ॥ एरीए ५-२ एक तार । लार लेइ प्रीतम ।

पहुंती मुगत मझार । एसो नेह करे कोइ उतम । अतीनरत्ता आचारी के । अवीचल प्रीत वधारी । लां. १० ॥ एगीए १६ म पंचानन नरमे । पोसमे ठडफ़ारी ।जेपुरमांए लडाय कहत हे । धन धन राजुल नारी के । नील नील नंदणा कुमारी ॥ मा. ११ ॥

## ॥ लावणी लीख्यते ॥

॥ रथ चढी रागु रथ चढी जादू ननण आवत हैं ॥ रथ. ॥ चालो मखी छवि देखणकुं । भला देखणकुं ॥ रथ ॥ आंकडी ॥१॥ छपन कोड जादू व्यावने आए ॥ आगे अपछरा गावत हे ॥ म. ॥ तोरण आय नेहृत वधाय । देख देख सुख पावत हैं ॥ म० ॥ रथ. २ ॥ पसुकी पूकार सुणी फिर चाले । मनही मील समजावत है म० ॥ रथ० ३ ॥ वरसीदान देइ परमेश्वर सुरनर आणंद पावत हे । म. । रथ. ४॥ मंजम ले गीरनार नीराए । मीवरमणीकु चावत हे । म. ॥ रथ. ५ ॥ सव सखीया वीलखी होए चाली । राजुल सुण दुख पावत हैं ॥ म. ॥ रथ. ६ ॥ नहु सखीयां सग ले कर चाली । रहनेमी समजावत हैं ॥ म. रथ. ७। अवीचल प्रीत करी प्रीतमसें । अजर अमर पद पावत है । म. ॥ रथ. ८ ॥ वे कर जोड जडाव अपूर में ॥ लूल लूल सीस नमावत हैं । म. ॥ रथ. ९॥

## ॥ रसना लीखंते ॥

॥ देसी मेरी लगरगीया । ए राग । ए रसना नीचारीने बोलो ए । हीगनु पर मती तोलो ए । आकडी । नीगर नीचार्ग पड जके । धागे वाजे अपजस ढोल ॥ रस. ॥१॥ साप डीगाडे

पापणी तुं । बोल घटावे तोल । लब लबधे लाली रहे तुं । हारे जनम अमोल ॥ रस. २॥ दोष उघाड़े पारका हे । बिन पूछयां अयाण । ज्यों तोने नहीं आवडे तो । बोलो मीठी वाण । रस. ३॥ मीठी वाणी प्यारी लागे हे । जन्मका वेर भागे ए । आ. फीरी छे । निंद्या खोरीनीपटेनीलरमी । परसुंगलावेखार । नीचली रहनीसभागणीतोने समजाइ सो वार । रस. ४॥ भणजो गुणजो सीखजो । थांरे मूल न आवे दाय । गाल गीतमें अग- वाणी । सारा प्हेली जाए रसना । हीयारी खडकी खोलोए । रस. ॥ ५ ॥ च्यारारी चुगली करे ए । अँठो खायनीसुग । मान पडावे बोलने । मूडे धूल देवे सब जुग हे ॥ र. ६॥ होट कोटके मांए बैठी । बतीस चोकीदार । संक न माने तेहनी । धस नीकसे तत- खिण बार ॥ र. ७ ॥ वचन अमोलख जिने कया हे ।गुणधर गुंठी माल । गुण म्हलायत छोडने । ज्यारा अवगुण तारथ निहाल र. ८ ॥ इमरत वाणी बोलणी ए । खट काया हीतकार । जेपुरमांए जडावजी । थाने सीख दीनी बारंबार ॥ र. ९ ॥

## ॥ रसनारी ढाल दूसरी लीख्यते ॥

कर हांरे घुमतडो घर आये । ए देशी । काल अनंते तू भम्योरे । जीवा लग रइ । हांरे प्राणी लग रइ । खांचा ताणजी । समजावे ए सुगुरु तोने । रसनां हे वींगर वीचारीने बोल । वैरण ए कइए गटावे मारो तोल । आंकडी ॥ १ ॥ गुण ढांके गुणवंतनाए । पर नींद्या हाए परनिंदा में आगेवांणजी ॥ स. २ ॥ तूं भोली समजे नहींए । मारा नीज गुण ।।हा. में पडी हाणजी ॥ स. ३ ॥ वीगत मै

लागी रहए केइ बोले हा० अगट अयाणजी स० ४ ॥ रजक जिम राजी रहे ए तूं तो मेले हा० परायो धोयजी ॥ स० ५२ ॥ पर आतम कर उजलीए तूं तो मेलो ॥हा० कर दे मोयजी ॥ स० ६ ॥ वेर वसावे बोलने ए तू तो साय हा० बीगाडे नाजजी ॥ स० ७ ॥ जनम बीगाडे जीवनो ए तोनै मूलन ॥ हा० आवे लाजजी ॥ स० ८ ॥ बंदीखानामें पडीए । थारे चारुं । हा० चोकीदारजी ॥ स० ९ ॥ डाम सया केइ भातना ए । तूंती अनतो । हा ए अनतो । लाज गीवारजी ॥ सम० १० ॥ हे चंचल चपला जसी ए । तूं तो बोले । हा० वचन नट जाएजी ॥ स० ११ ॥ पोचसके नहीं केवली ए । थाणे कीण वीद । हा० राखुं समजायजी ॥ स० १२ ॥ प्रभूजी वचन रस पीजीए ए । नही कीजे ॥ हा० आल पंपालजी ॥ मा० १३ । गुण गावो गुणवंतना ए । सदा वरते । हा ए० मंगल मालजी ॥ स० १४ ॥ सीख दीनी निज जीवने ए । मेतो थारो । हा० आण प्रसतानजी ॥ स० १५ ॥वचन रतन जतना करीए । बोलो जेपुर । हा०मांएजडानजी ॥ स० १६ ॥

## ॥ देसी ॥ वड़े घर ताल लागी रे ॥ ए राग ॥

मन चचल थिर न रयोजि । जब तुंम कीनो व्यार । तन सक्ति नहीं आपरी । तुम जोनो हीरदे वीचार । म्हाराजारी । मीठी वाणी रे । लागे अमीए समाणी रे ॥ आंकडी ॥ १ ॥ वेकर जोडी वीनउवी । नचो सीस नमाय । अर्ज करुं अलवेसरुं । थे सुंणज्यो चित लगाय ॥ म्हा० २ ॥ दुकर करणी आपरीजी । मार्ग ओगट घाट । पगल्याठाए पडे नहीं ॥ थाने नर्म आया पूरा साट ॥ म्हा०

३ ॥ गिराम नगरपुर वीचरताजी । तार्या गणा नरनार । अब अव-सर थिर वासनो । तुम याही करो उपगार ॥ म्हा० ४ ॥ तन मन थिरता राखनेजी । भजन करो भरपूर । किण वीद मारग चालस्यो । मारवाड घणो छे, दूर ॥ म्हा० ५ ॥ आग्याकारी आदरेजी । सिप रतनांरी खान । सीध सरव सेवा करे । थाने अनमती दे सनमान ॥ म्हा० ६ ॥ म्हआवो आवो में करांजी । मोरथ्मा जे में पुकार । ज्यो उपर कर जावसो तो । जोर नहीं है लीगार ॥ म्हा० ७ ॥ १६ सें तेपन भलोजी जैपुर सेंका काल । अर्ज करे जड़ावजी । तुम मानो दीन दयाल ॥ म्हा० ८ ॥

## ॥ देसीं ॥ वैरी लसकरीयां ॥

ए राग । तुं पापी बहु पाप कीयाथी । तुं चुगली तुं चोर । वैरी तूं । तुं लंपट परनारनोरे । अधर्मी अंगोर ॥ १ ॥ प्राणी पर-देसीडां । थारी अबतो सुरत । संभाल पापी जीवडला ॥ आं० ॥ तुं करोधी तुं मानी अंखारीं । तुं कपटी कठोर । वैरी तुं । तुं लोभी तुं लालचीरे । नीसरमी नीठोर ॥ प्रा० ६ ॥ तूं रागी तुं द्वेपी जगत को । तूं दूसमण तूं सैण । वेरी० सुख दुख करता तुंइ आ-तमको । दुख मेटण सुखदेण ॥ प्रा० ४ ।. तुं वालक तूं वावलोरे तूंइ जोध जवान । वैरी० तुं कायर तुं सुरमोरे । तुं बूढो नादान । प्रा० ५ । तूं क्रिरपण तुं दाता कहायो । तूं मा तूं साहूकार । वैरी तूं ०॥ तूंइ रंक ने तूंइ राजा । थारा चरित अपार ।प्रा० ६॥ तूं अग्यानी तुंइ मुर्ख । तूं ग्यानी प्रवीण ॥ वैरी० तुंइ सरागी तुंइ वेरागी । तुं वडभागी तुं दीण ॥प्रा० ७॥ तुंइ भोगी ने तुइ

जोगी । तुं फकर फकीर । वैरी० तुंइ धर्मी तुंइ अधर्मी । तुं चंचल तुं धीर ॥प्रा०८॥ तुंइ सिध ने तुंइ संसारी । तुं तपसी तुं संत । प्राणी० कह न सकुं करमनकी घतका । जाण रह्या भगवंत । प्रा० ९ । चोरासीमें नाचतां । घणा सांग ल्यायो जगदीस । रीजायां प्रभू आपने । माने मुक्ती करो बगसीस । मारा प्रभूजी दीन दयाल । माने जनम मरणसु टाल । आंकडी फीरी छे ॥ १० ॥ ज्यो दुख पाया देखने । माने माफ करो भगवंत । मति नांचे तुं पापीया । थारे आयो भवारो अंत ॥ मा० ११ ॥ १९ से एकाननेजी । जेपुर होली चोमास । अरज करे जडावजी । प्रभू पूरो हमारी आस ॥ मा० १२ ॥

## ॥ वालचंदजी महाराज ना गुण लीख्यते ॥

देसी । केरनो । स्यामीजी चत्रुमास दीपाएनेजी । थे हुवा ज्यारने त्यार । सतगुरुजी माएत वीरद नीचारनेजी । मारी वेगी कीज्यो सार । सतगुरुजी अर्ज हमारी सुण लीज्यो । कीरपा कर दरसण दीज्यो ॥ आंकडी ॥ १ ॥ सुन सुखने पदारीयाजी । थाके हुवा सिस सुखकार । सांमीजी ले परवार पदारस्योजी । काइ माने कुण आधार । स० २ सामीजीरा नेण कमल दल पांखडीजी । थाको मुखडो पूनमचंद । सतगुरजी भमर चकोर नीहालनेजी । कोइ पामे परम आणंद । स० ३ । सामीजी अतसे धारी आपमाजी । कोइ बीगला छे कलूकाल । सामीजी सु पाखडी दनीया रहेजी । कइ जावे मूडो टाल । स० ४ । सामीजी

पाट वीराज्या फावताजी । जाणे केसी गोतमरी जोड । सामीजी गुरु भाइ गुण आगलाजी । नीत नमन करुं मद मोड । स० ५ । सामीजी रासी सवडा खीवराजजी । कांइ व्यावचमें भरपूर । सतगुरुजी रात दीवस हाजर रहेजी । कांइ हंस वडा सिस सूर । स० ६ । सामीजी फते फते कर पामसीजी । कांइ उत्तम गत प्रधान । सतगुरुजी तप कर कर्म खपावसीजी । कांइ भजन करे भगवान । स० ७ । सतगुरुजी सब संतनके लाडलाजी । कांइ बालक सिष सुजाण । सामीजी सरणो लीनो आपरोजी । तुम राखजो जीवन प्राण । स० ८ । सतगुरुजी पुरण पुनमचंद्रमाजी । थारे नव दीखत अणगार । सामीजी बोत जतन कर राखज्योजी । ज्यांने दीज्यो पार उतार । स० ९ । १९ सें तेपन भलोजी । कांइ जैपुर सेंखेकाल । सतगुरुजी अरजी एह जडावकीजी । तुम मानो दीन दयाल ॥स० १०॥

## ॥ बालचंदजी महाराजनी ढाल दूसरी लीख्यते ॥

। देसी । मनडो उमायोहो श्रीमिंद्र भेटवा । ए राग ।दोहा। आद नमु अरिहंतने । गणधर गोतम देव । सासण नायक बीरजी । नीत प्रत सारुं सेव । १ । सिधरिध नोनीध करे । टाले सकल कलेस । बालचंद मुनीराजना । गुण केसुं लवलेस । २ । समत १९ सें हो बरसज तेपने चैती दसरावो जाण । सुखे समादे हो । जैपुर सहर में । प्रगट्या मुनी जिनी भाण । बाल मूनीसर हो मारे मन वस्या । १ । भूलु नहीं खिण मात । पर उपगारी हो । तारी नीज आतमा । खट कायारा नाथ

। आ० वा० २ । सींघ चतुर मील हो । कीनी वीनती । अठ थाणे वीराजो दीनाल । पानन कीजे हो खेत्र मायरो । काडो मीथ्या साल । वा० ३ । तन वल खीणा हो । जाण्या नाथजी । रुत पिण देखी करुर । सींघ सरवनो हो । अति आगर करी । कीनी अर्ज मंजूर । वा० ४ । सासतर धारा हो । सीह जीम गूंजेता । धूज गणा नरनार । वचन लनद कर हो । सहुने सुंतोक्रीया । मेटे मीथ्यात अंधार । वा० ५ । जाज समाणो हो । संसार समुद्रमें । तारक नाना जेम । मायतनी पर हो लेता सभालणा । भूल्या जावे केम । वा० ६ । स्वमत परमत हो । सहुने सुहावणा । मीठा मीसरी जेम । दीवाण मुसदी हो सेना नीत सारता । वंदगी करी मूनी खेम । वा० ७ । ग्रीष्म ऋतु में हो लीनी अतापना । चार वीगेरा त्याग । नीत तप भोजन हो । एक वगत कीयो । दीन दीन चढतो वेराग । वा० ८ । एकज चादर हो एक वीछावणो । सयो सी ठंठार । अरस नीरससुं हो देहीने संतोपता काडयो तप जप सार । वा० ६ । अलप उपादी हो मंदी चोकुडी । आढीजे वचन प्रभाण । नीरला हो सीहो । इण कलूकाले में । गुण रतनारी खाण । वा० १० । समत १६ सें हो । १६ सो भलो । भिलस्या सुखे चोमास । संजम लीनो हो । तिहा सुभ महोरते । मुनी मेव-राजजी रे पास । वा० ११ । वरस साडत्रीस ज हो । संजम पालने । गणो कीयो उपगार मरुधर मालव हो । देस ढूंढाडमें । याद करे नर नार । वा० १२ । वेदनी कर्मज हो आयो जोर

में । आउ करम गयो खुट । सास खासनी हो सइ वहु आसना । आहार पाणी गयो छुट । वा० १३ । चंदण मुनीसर हो । भलाइ पधारीया । साज भरीयो भरपूर । व्यावच कीनी हो । मुनी तन मन करी । रहत सरव हजूर । वा० १४ । करी आलो- वणा हो । सुध प्रणामे सु गुरु भाइरे पास । पींडत मरणज हो । देस वीवारमें । एक छुगतरी आस । वा० १५ । वद वैसाखज हो । छपन सालमे । तेरस पाछली रात । राइ पडीक्रमणो हो । सुध उपयोगसुं । करी हंसराज जी सुं वात । वा० १६ । इण प्रणामे हो । काल करे कदां । तो पामे नीरवाण । इतनी कहने हो । प्राणज छोडीया । कर सागारी पछखाण । वा० १७ । नीहरण कीनो हो । बोत उमंगसु । वाइ भाइ अणपार । वीरोहज खटके हो । मोटा मूनीतणो । पडे आंसुडारी धार । वा० १८ । मरुधरमांए हो मोटो मानीज तो आखातीज तीवार । जेपुरमांए हो कहत जडावजी । अब मुज कुण आधार । वा० १६ । इति संपूर्णः ।

## ॥ श्रीमंदीर वहरमानरो स्तवन लीख्यते ॥

। देसी । प्रेमरस मेंदी राचणी । ए राग । होजी श्रीमिंद्र जीनराय । जुगमींदर जिन दूसरा । वंदू वाउ ए सुवाउ जीरा पाए । सुजत सम दीस्टीधरा । वंदू वहरमान जीन बीस । बे कर जोडी भावसु । आंकणी । १ । संयम प्रभूजी छटा देव । रिखवा नंदण सातमा । करु अनंत वीरजीनी सेव । भजो सुर परमातमा । वं० २ । वीसार वीजेधर जाण । चंद्रानंदण चित धरो । चंद

बाउंजीरी श्राण प्रमाण। भूजंगजी सेवा करो। वं० ३। इसर श्री नेमजीणद। वीरसेण दील ध्याइए। माहा भद्र जस आणंद। अजत वीर गुण गाइए। वं० ४। ए वीसुइ जिनराज। खेत्र वीदेह वीराजीया। धन्य सेवा करे नर नार। भव संचित कर्म भजीया। वं० ५। १६ सें ने वरस वेतालीस। चोमासो नवा सहर में। कीना जिनवरजीरा गुण गिरांम। तवन भलो मेंदी रागमें। वं० ६। ससीवार काती सुद तीज। रंभाजीरा प्रसादसुं। माने मीले मुक्तरी रीज। जडाव कहे जीनराजसुं। वं० ७। इति सपूर्णः।

## ॥ देसी जीलारी ॥

। पूज वीनेचंदजी सुभ मोरथ आयाजी। मूनी खटही भला। मारे मन भायाजी। आंकडी। नव पालो नव प्रे हरोजी। नवरी करो नित हांण। निरणो करो नव नोलरो। थारे कनसुं पूरी पछाण। पू० १। नवकीनी भिरमे राखवाजी। नवनी दोप जाण। भजण करो नव नोलरोजो। नवसुं लीयो मन ताण। पू० २। तपसी नमूं जसराजजी। शोभाचंदजी वडा है वनीत। हरख हरख करणी करे। संजम पाले इंद्रियां जीत। पू० ३। ग्यान भणे गुलराजजी। ज्यारे रात दीवस ओइ ध्यान। वेरागी वछ-राजजी। मुनी सन रतनांरी खांन। पू० ४। वरतमान मूनी वरणव्या। वली वेरागी हूवा छे त्यार। लोक भाषा इम जाण। निरचे जाणे जाणनहार। पू० ५। मुज तुम गुण मेरु कोड। कह न सकुं रसना थकी। जडाव नमें कर जोड। पू० ६। १६

स एकावनेजी। जैपुर में वरसाल। पूज तणा प्रसादसुं। मारी फलीए मनोरथ माल। पू० ७। इति संपूर्णः।

## ॥ चाल गोपीचंदरा ख्यालरी ॥

सासण नायक चीत धरीस। कांइ गणधर लागूं पाए। सिध सकल कीरपा करोस। कोइ बुध द्यो सरसती माय। आचारज आदे करीस। कांइ वंदू सीस नमायजी। सूंनी सुजाणमलणी। भलीरे वीच्यारी तारी आतमा। थारी सुरत प्यारी। भजन करोछो परमातमा। १। आंकडी। श्रणी सुण बेरागीयास। कांइ जाण्यो अथीर संसार। चोथे आसरम चेतीयासरे। धन थारो अवतार। छती रीध छिटकायनस। कांइ लीनो संजम भारजी। मू० २। पूज वीने गुरु भेटीयास। कांइ साहा उतम भवीजीव। कर्म कटक दल जीतवास। कांइ दी समगत की नीव। कुटमी सेल्यो झुरतोस। थांरी वील वील करती धीयजी। मू० ३। पटणी कीसतूरचंदजीस लघू सुजाणमलजी भिरात। बालपणे संजम लीयो। मुनी बालचंदजी साथ। वाल बिरमचारी दीपता सरे। धन धन थारी मातजी। मू० ४। खाणे पीणे पहरणे सकाइ। सब कोइ चाले साथ। सीला अलूणी चाटवासरे। कोइये न घाले हाथ। बलीयारी जाउं आपरीस। थें करी प्रीत अख्यातजी। मूनी कीसतुरचंदजी। भलीरे बीच्यारीं तारी आतमा। थे अग्याकारी

भजन करोळो परमातमा । मू० ५ । जैपुर सहेर सुंहावणोस । जठे नीकमी हीरा खाण । मोल तोल ज्यारे नही सरे । चढयां ग्यान कुरसाण । मूनीवर ज्यारा पारखुं सरे । लीना रतन पीछाणजी । मू० ६ । १९ सें ५१ ने सरे । जैपुर मे चोमास । अरज करे मे जडावजी सरे । पूरो हमारी श्रास । मांगू बधाइ आसुं । मुज वगसो मुगत अवासजी । पुज वीनेचंदजी । भलोरे टीपानो । मारग जैनरो । थे परउपगारी । पार न पायो गुरु ग्यानरो । मू० ।

## ॥ देसी जींलारी छे ॥

प्रभूजी रीखन अजीत संभव अभिनंदण । ध्याउं हो । सुखकारी जीनराज । सुमत पदम । सुपासचद । गुण गाउ हो । जीणंद । १ । प्र० सुवध सीतल श्री हंस वासपुज सामी हो । सुख० वीमल अणत श्री धर्म संत सीव गामी हो । जीणंद ।२। प्र० कुंथ अरी मल्ली मुनी सोव्रत । जुग वीराता हो । सुख० नमीए नेम पार्स वर्धमान । वीख्याता हो । जी ३ । प्र० ग्यारेह् गुणधर । नहरमान जीनराया हो । सूं० जैपुरमांए जडाव हरक । गुण गाया हो । जी । ४ ।

राग तेहीज । प्र० श्री श्रीमिंद्रदेव वडा देव नमे हो । सुख० दाय न आवे अवर देव । मुज मनमें हो । जी० । १ । प्र० खेत्र विदेह वीजेमे । अति सुखकारी हो । सु० कुंडरीकणी नगरीनी । छीव अत भारी हो । जी० । २ । प्र० सतकी मात तात । श्री हंस कहीजे हो । सुख० न्याय तीन लीछमीरो लावो लीजे

हो । जी० ३ । प्र० ज्यारा कुलमें रतन । चिन्तामण सरीखा हो । सुख० आयर उपन्या । सुरनरना मन हरखा हो । जी० । ४ । प्र० कला व्होतर पुरखतणी प्रगटांणी हो । सुख० जोवन वयमें प्रण्या । रुखमण राणी हो । जी० । ५ । प्र० आउखो लाख चोरासी । पुरव वखाणी हो । सु० धनक पांचसो काया कंचण वरणी हो । जी० ६ । प्र० भोग तजीने जोग लीयो । जिनराया हो । सुख० चोसट इंद्र प्रणमें नीसदीन पाया हो । जी० ७ । प्र० एक चीत करने ध्यान सकल मन ध्यायो हो । सुख० केवल ग्यान । केवल दरसन पायो हो । जी० ८ । प्र० फीटक सींघासण चामर छत्र बीराजे हो । सुख० भाव मंडलने देव दुंदुभी बाजे हो । जी० ९ । अदबीच आप वीराजो पूनमचंदा हो । सुख० जीग मीग २ दीपे तेज दीनंदां हो जी० १० । प्र० वाणी सुधारस बरसे इमरत धारा हो । सु० सुरनर तीरजंच समजे न्यारा न्यारा हो । जी० ११ । प्र. अतसें थारी देख भवक मन मोवे हो । सु. सो सोइ कोसामें रोग सोग नहीं होवे हो । जी. १२ । प्र. मनडो मारो मीलबाने उमावे हो । सुख. तन मन असे जिण आयो नही जावे हो । जी. १३ । प्र. गुणवंता तो वीन तारया तिर जासी हो । सुख. मोए मूरखने विन तारया किम सरसी हो । जी. १४ । प्र. एह अरदास सुणीने क्रिपा कीजे हो । सु. चाकर जाणी नीज चरणामें लीजे हो । जी. १५ । प्र. पूज रतन समदायमें बहु गुणधारी हो । सु. दीन दीन दीपे रंभाजी इदकारी हो । जी. १६ । प्र. ज्यारे सरणे आय सदा

सुख पाया हो। सु. बे कर जोड जडाव हरक गुण गाया हो। जी. १७। प्र. समत १६ स तेतरीसें सुख वासो हो। सु. श्रावक भूगता। वडलू सुखे चोमासो हो। जी. १८॥

## ॥देसी पीचकारीकी छे॥

समुद्र वीजे सुत नेम कवरजी। सोरीपुर अवतारी रे। सेवा देजीरा नदण। आं. १। छपन कोड जादव मील सारा। जान बणाइ भारी रे। से. २। तोरण आया मंगल गाया तो। पसुवां करीए पूकारी रे। स. ३। कर करुणा रथ फेर चल्या हे। जाये चल्या गीरनारी रे। से. ४। किम आया किम फीर गया पाछा। तज राजुल सुखकारीरे। स. ५। चालो सखी जाउं गीरनारी। देउंगी ओलभा भारीरे। से. ६ हमकुं छोड गए नीरधारी। जाए वरी सीननारी रे। स. ७। आठ भवारी प्रीत हमारी। नवमें कर दीवी न्यारी रे। से. ८। में चाउ प्रभू तुम नहीं चावो तो। केसे रहे एक तांरीरे। स. ८। महो ममतसुं बोहत दुख पायो। कर दयोनी खेवो पारी रे। से. १०। ले मजम तपस्या कर भारी। मुगत गया ब्रह्मचारी रे। म. ११। कहत जडाव। तेवीसे रहणमे। आइ हमारी वारी रे। से. १२॥

## देसीं श्री श्रीमंधीर स्वामी महाविदेह अंतरजामी

गोतमजी उपगारी। ज्यां प्रसण पुछ्या भारी। ज्यारो आगम मे अधिकारी हो। गुणधरजी गूणधारी। आ. १। अगनभुती नीनवधो। भव भवना पाप नीकंदो। वाएभूतीजी आतम तारी

हो। गु. २। बीगत मुनीसर चोथा। ए सुखे सुखे सीव पोथा। जारी बार बार भलीयारीहो। गु. ३। पांचमा सुधरमा सामी। मन तारो अंतरजामी। एक थां उपर इकतारी हो। गु. ४। छटा बंदू मंडी। ज्यां तार दीया पाखंडी। मोरीजी ममता मारी हो। गु. ५। अंक पीताजी मारा। संसार दुखासु न्यारा। ज्यां करणी कीनी भारी हो। गु. ६। अचल अचल सुख पाया। मैतारज मुगत सीधाया। सीवरमणी लागी प्यारी हो। गु. ७। प्रभात उठी नित ध्याउ। मैं सेवा थारी चाउं। मोए राखो पास तुमारी हो गु. ८। चवदेसे बावन सारा। मैं बंदू न्यारा न्यारा। मोए दीज्यो सेव तुमारी हो गू. ९। १९ सें बावनने। वद जेठ पंचमी दीने। जेपुर में गुण बीसतारी हो। गु. १०। भगवंत भरोसो भारी। पूरीज्यो आस हमारी। जडावजी दास तुमारी हो। गु. ११॥

## ॥ देसी। मोत्यारो गजरो भूली ॥

। मत कर जीव गुमाना। नीस्ते एक दीन उठ जाना। धरी रह धन माया। बल भसमी होवे नीज काया। म. १। इंद्र चक्री हरी राया। सव बादल जेम बीलाया। बोत करी चतुराइ। पिण थीर नै रइ ठकुराइ। म. २। रावणसा अभीमानी। हर लाया रामकी राणी। परम पूरांण वखाणी। सव लंक भइ धूलधाणी। म. ३। आठमो चकरी जाणी। यो तो डुब मरचा परपाणी। इत्यादीक वहु राया। अभीमान थकी दुख पाया। म. ४। सावण पद १२ स। जेपुरमें प्रम हुलास। छोडो जीव गुमाना। जडाव

कहे मरजाना । म. ५ ॥

## ॥ ढाल ॥

। प्रभो आवीयो हो । होयने हुंसीयार । ए देसी । मोए नींद्रामांए सुतो । खूतो वीषय वीकार । हेलादेए जगानीयोरे । सतगुरु चोकीदार । मनवा मांनरे सतगुरुनो उपगार । आंकणी । १ । जगत दुमसुं काडीयोरे । दीयो संजम भार । कंकरसुं संकर कीयोरे । पुजा भइ अपार । म. २ । दीन जाणी दया आणी । भालीयो निज हाथ । काडीयो संसारसुंरे । लीयो आपणी साथ । म. ३ । समकीत रत्न दीखात्रीयोरे । मायत वीरद वीचार । ग्यान दीपक घटमें कीयोरे । मेंटीयो अंधार । म. ४ । भव समुद्र में डूबतोरे । लीयो मोपूं जेल । धर्मभाभ बैठायनेरे । दीयो कीनारे मेल । म. ५ । जोग लीयो दस बोलनोरे । सोएलो मत हार । ए सामगरी दोहलीरे । चेते क्यूंनी गीवार । म. ६ । १६ सें पंचावनेरे । जेपुर सेके काल । कहत जडाव निज जीवनेरे । अब तो सुरत सभाल । म. ७ ॥

## ॥ हारे काय थका ए देसी ॥

। हारे जीवडला । सात धातकी पूतलीरे । हा. जोबन रंग पतंग । काया काचीरे । मत राचो माया कारमीरे । हा. मत राचो इण रुपमेरे । हा. खीणमे होय वीरंग । का. १ । हा. हाड लोही नसा जालमेरे । हा. चरम मांसरो पीड । का. २ । हा. मल मूत्रणी दीनडीरे । हा. केम रोमगे कुंड । का. ३ । हा गार

नाला वहे नारना रे । हा. पुरुष तणा नव द्वार । का. ४ । हा. प्रत्यच्च दुखनी भाकसीरे। हारे असुच तणो आगार । का. ५ । हा. काचो कुंभ सीसी काचकीरे । हा. अथीर मानव की देह । का. ६ । हा पलट जाए पल एकमेंरे । हा मत कर इणसुं सनेह । का. ७ । हा जनम जरा दुख देहसुंरे। हारे सुखरो नहीं लव लेश । का. ८ । हा जेपुरमांए जउावजीरे । हा एम दीयो उपदेश । का. ६ ।

## ॥ देसी । उदाजी करमकी गत न्यारी ॥

। ए राग । उनालारा आलस करने। दरसण नहीं ए दीरायो। अब बरेसालो उतरण लागो ; उपर सीयालो आयो । १ । चनण मुनी दरसण वेगे दीराजयो। थेतो फिर पाछे। थे. जैपुर जाज्यो । च. आंकडी । १ । रीयां पीपाड़े पधारो । सामीजी वडलूवी असीजे । वायां भायां सबे वाट नीहाल । मोपर किरपा कीजे। च. २ । सीष्य स्वामीजीरी जोड भली हे । दीपे रही जग मांही । तपसी त्यागी वेरागीनीरागी बाल मूनी सुखदाइ। च. ३ । खीवराजजी खीम्या सागर । हंस वडा उपगारी । शिष्य सघला मोतनकी माला । सेवा करो नर नारी । च. ४ । अड-तालीसें रीया चोमासो । कीयो उपगार सवायो । बे कर जोड जडाव जुगतसुं । अजीरो पद गायो । च. ५ ।

## चालतलावणीरी

सुण पुत्र हमारा दीख्या मत लीजे माने छोडने। ए देशी।

श्री गुरुदेव किरपा करीसजी भला पधारया आप । मन चीन्त्या पासा ढल्या । मारा काटो भवनां पापजी । मूनी वाल-चंदजी भलाइ पधारया अजमेर सहेरमे । हूं करूं वीनती । करोनी चोमासो इण सहरमे । आंकडी । १ । नंदरामजी भला नीराज्या । किरपा कर मुनीराज । घणा मुनीसर अठे पदारे । दरसण करवा काजजी । मू. २ । चनण चनण वाननो सरे । दे सीतल उपदेस । भव भव तपत मीटाय दे सरे । चाना देम नीदेमजी । मू. ३ । खेमराजजी खिम्या सागर । सिस वडा सुवनीत । तप जप सजम खप करे सरे । रात दीवस एक रीतजी । मू. ४ । कीसनलाल मूनी हंसराजजी । हे अवसरका जाण । मन वायारी वीनतीम । कांइ आप करो प्रमाणजी । मू. ५ । १६ सें पचालसेमरे । अजमेर में धर चाव । मगन कवरका केणनु सरे । जोड करी जटावजी । मू. ६

## देसी असवारीकी छे

चनणमूनी दरसण वेगे दीराज्यो । सिप साग तुम साथे ल्याजो । मोपर कीरपा करजो हाजी थे तो थीचरत जेपुर आज्यो हावो मूनी थव मत आगा जाज्यो । आं. च. १ । मन श्रावक श्रमत हे द्रसकुं । याद करे नरनारी । कव मूनी पाव धरे जेपुरमें । जीवन प्राण आधारो । च. २ । प्यार करी नवे म्हर पधारया । जेपुर केम वीसारयो । दे विश्राम करी थे निरगमा । श्रो रड आप वीचारयो । च. ३ । मरुधर देस मे किरपा तुमारी । जावन वारंमवारी । चुक नही मुनीवरजीथाकी । या अंतराय हमारी । च. ४ । पापी पाव चले नही केरे । मन तन छेह दीखायो । मन

म्हसंत धरे नहीं धीरज। दोव्यो तुं स दीस आवे। च. ५। वहोत कठण है तुमारी छाती। विन अपराधी वीसारया। कहा कहूँ मोए उपजत नहीं। वीनती कर कर हारया। च. ६। वीजे दुसण प्रसन हाय कर। भरपाइरीजवारी। जेपुरमांए जडाव कहत है। आही अर्ज हमारी। च. ७।

## देसी कल्लालीरी

चंद चढो गिरनार हो कवरजी। आद नमुं अरिहंत हो। मूनीवरजी कांइ पांचे पदाने सीस नमावसुं हो राज। म्हामूनी। पां.। १। दिल धर इधक आणंद हो। मू. कांइ सरव मूनीवरजीरा गुण गावसुं हो राज। २। वाल मुनी दीन दयाल हो। मू. कांइ चनण वावनो हो राज। म्हा० च०। ३। खेम खिम्या गुणधार हो। मू० कांइ हंस प्रसंस मुनी मन भावनो हो राज। म्हा० हं०। ४। भाग वली भगवान हो। मू० कांइ तपसी सोभागी रागी मूगतना हो। म्हा० त० ५। धन धन मूनी सुजाण हो। मू० कांइ बाल बिरमचारी। वारी तेहनी हो राज। म्हा०। वा० ६। भला पधारया म्हा भाग हो। मूं० कांइ आसा हूती। जीम चातक म्हेनी हो राज। म्हा० आ०। ७। १९ से तेपन सहो। मू० कांइ देस प्रदेसा। मैमा आपरी हो राज। म्हा० दे० ८। जेपुरमांए जडाव हो। मू० कांइ चरणामें राखो। सफली चाकरी हो राज। म्हा०। चर० ९।

## ॥ चाल गोपीचंदरा ख्यालरी ॥

नमूं अरीहंतने सरे। म्हावीर मद मोड। सासण नायक

तेहनो सरे । बंधु वे कर जोड । गुण गाउं मुनीराजना सरे । पूर्ण म्हो मन कोड हो । तपसी वसधारी भलोरे दीपायो मारग जैनरो । थे पर उपगारी । भजन करोछो भगवानरो । आं० १ । वालचंदमुनी दीपता सरे । वैरागी भरपूर । च्यार बीगे त्यागन करो सरे । तपस्या कठण करुर । कहणीं करणी सारखी सरे । करे करम चकचुर हो । त० २ । चनण चनण वावनो सरे । दे सीतल उपदेस । मीथ्या तपत मीटावता सरे । चारा देस बीदेस । ग्यांन ध्यानमें लीनता सरे । नहीं प्रमाद बीसेसहो । त० ३ । खेम खिम्या गुण आगला सरे । तप कर बारा भेद । गरु अग्या आराधने सरे बांच्या मूल ने छेद । बीनो आराधे आतम साधे । लगी मुगत उमेद हो । त० ४ । हंस दीपावे धमने सरे । धन धन कहे नर नार । उनाले अतापना सरे । तपस्या बीवीध प्रकार । सुखदाइ गुरुदेवने सरे । अहो निस अग्याकार हो । त० ५ । अठाइ आदे करी सरे । पनरा ने इकबीस । दीपरया इण भरतमे सरे । तपसी बीसवा बीस । भाग बली भगवानदासजी । नमन करुं निज सीस हो । त० ६ । ओछी बुद छे हम तणीस । कोड तुम गुण अनत अपार । सुर गरु जो पोते भणेस । कोइ जीभ्या करी हजार । तोपिण पार न पामीए सरे । गुणनो छेह न पार हो । त० ७ । १९ से समत भलो सरे । जेपुरमें घर चार । गुण गाया गुरुदेवना सरे । सुणजो धर उदार । दीजे मुगतीजमे मोए । अरज करे नदार हो । त० ८ ।

## चाल लावणीरी छे

देसी तजीएरे आलस दूर थइ एक मन्ना। भजीए रे। धन तपसीं मुनी बाल २ ज्यांरी दीपे। बाल० खीम्या खडग संभाय। करमकुं जीपे। कीनी मंद कसाय। चाय पुदगलकी। चा० तज कुमतीको संग। सुमतकूं परखी। ज्यारे सीस वडा सुवनीत। नमूं सीर नामी। न०। धन तपसी भगवानदासजी सामी। आंकणी। १। ज्यां क्रोधमान माया सब ममता मारी। म० छोड सकल प्रपंच म्हाव्रतधारी। तज वीपयनको संग। थए वीरमचारी। थ० भए सुमतीको सीरदार। जती धर्मधारी। तप कर तोड़े कर्म। मुगत के रागी। ध० २। पूज रतन समुदायमांए वडभागी। मा० करे तपस्या घोर जोर वेरागी। एक मुक्तीको ध्यान। ग्यानके रागी। ग्यां० लीयो जोबन वयमें जोग भोगकुं त्यागी। भूल चुक अपराध। खमो मुज स्वामी। ख०। ध० ३। समत श्री १९ स साल चोपने। सा० कीया वास ईक्वीस। दोए दस दीने। अस्या विडला हे अणगार। कहे सब धन्ने। क० ज्यांरा दरसणसुं दुख जाए। भजो एक मने। जेपुरमांए जडाव नमे सिरनामी। न.। ध० ४

## देसी जवाइ

मांने प्यारा लागोजी। पंच म्हा वरत आदरया। म्हाराजा हो। पाले पंच आचार। तपसीजी मांने प्यारा लागोजी। म्हारा०। आंकडी। १। दोष बयालीस टालने। म्हा० ल्यो निरदोषण आहार। त०२। पंच इंद्रीने वस करो। म्हा० सुमत गुपत सुखकार। म्हा० ३। संवर बांध्योसेवरो। म्हा० सीलरो कीयो।

सीणगार। त० ४। किरया किलगी खूल रह। म्हा० तपस्यारो तिलक लीलाट। मा० ५। खिम्या खडग ज्यारा हाथमे। मा० ग्यान घोडे असवार। त० ६। मुकनीरा डंका वाजीया। म्हा० सजम संन्यालार। मा० ७। अचल अरैं सुख माणवा। मा०होय रह्या छो त्यार। त० ८। १९ सें चोपन भलो। मा० नेपुरमें वर साल। मा०९। जुगत करी जडावजी। मा०जोडी ढाल रसाल।१०

## चाल चलेरेलगाडी

ए संसार असार जाणने। श्रीनमे छीटकाया। कान मूनीरे शिष्य मेगजी। ज्यारे चरण चीत लाया। भर्त मे वालमूनी दीपेरे भ० अष्ट करम दल काट मूनीमर पाखंडी जीते। आ० १। पंच म्हाव्रत नीरमल पाले। दोपण सन टाले। सुमत गुपत मन डीड कर राखे। आठुं मद गाले। भ०२। नारी नागण जाण मूनीमर। तडके न्है तोडे। सुमत सखीरो हुकम उठावे। उभा कर जोडे। भ० ३। चार नीगेरा त्याग मूनीरा। एक वगत अहारी। परपुदगल परचाय अलप है। निज गुण उर धारी भ० ४। वाणी मधुरी। घन नीम गाजे। मनि जीन हीतकारी। श्रावक वीर सोभे मुख आगे। खूली केमरकी क्यारी। भ० ५। क्रिोध मान माया अति पतला। निमनाकुं मागी। निचरे गिराम नगरपुर पाटण। मनि जीनां तागी। भ० ६। एक जीमनुं गुण किम गाउ। महीमा अति भारी। कहत जडाव गुण मींरू सम। अलप वुध मारी। भ०७। १९ में समत अठाइ। रीयां सुख-वासी। दरसण घो एक वार। मूनी मे चरणारी दासी।भ.८

## तन बसतरके रंग लगाया ए देसी

न्यारी मती करो नेणासु । अरजी थूलभद्रसु । आं० । आप बेरागी । भए हे नीरागी । मारी लीव लागी चरणासु ।न्या. १ । मुगत म्हलकी स्हेल बताइ । डुबत राखी भव जलसु । न्या. २ । मेंतो पलक एक संग नहीं छोडु । पिण जोर नहीं करमांसु । न्या.३ । दीवस भूख निस नीदन आसी । दरसण कद करसु । न्या.४ । विरमचारी करणी अति दूकर । गरु कहे सनमूखसु । न्या०५ । न्हे लगाइ दइ छिटकाइ । अब कहो क्या करसु । न्या० ६ । कोस्या दासी । भइ हे उदासी । रात दीवस तरसू । न्यां.७ । गणिका नार । पार उतारी । सनमुख करी समगतसु । न्यां.८ । वीकानेर ७२ चोमासो । जडाव कहे जुगतसु ।न्या०९।

## श्री मंधीरजीरो स्तवन लीख्यते

देसी असवारीनी छे । खेत्र वीदेहे बीराज्यां सामी । गुण गाउ सीर नामी । जीन हमारी बीनतडी । अवधारो । होजी माने भवनीधि पार उतारो । प्रभूजी. । आं०१ । दूर दीसावर अति घणो आगो । आवणारो नही थागो । जी०२ । दरसण चाउ किण बीद आउ । नीसदीन तुम गुण गाउ । प्र० ३ । लब्द वीद्या नहीं पांख न मारे । हाजर आउ तुमारे । जी० ४ । पांचमो आरो नहीं मारो सारो । अधम अनाथ उधारो । प्र० ५ । चोसठ इंद्र करे तुम सेवा । वाणी इमरत मेवा । जी० ६ । धन भव प्राणी । सुणे नीत वाणी । पूरब सुकरत जाणी । प्र० ७ । श्री मंधीरजी सुणो मारी अरजी । राखो पूरण मरजी । जी० ८ । उद्रा मेसर

मंगल वासर । जडाव जपे परमेसर । जी० होजी माने जिम जाणे तिम तारो । प्र० ६ ।

## मोटी जगमें मोवणी ए देसी

श्री मंधीर जीनसायवा एक सुणज्योजी अवलारी अरदास । वे कर जोडी वीनवुं । भल नगसो हो प्रभू मुगत अवास । श्री मंधीर जीन समरीए कर जोडी हो उगंते सुर । कर्म कटे संकट मोटे । सुखसाता हो पामे भरपूर । श्री०१ । आं०। आप वीराज्या म्हा वीदेहमें । हूँ दुखमी हो आरारे माए । जनम लीयो जीन-राजजी । मारे पूरी हो दरसणरी चाय । श्री० २ । लवद वीद्या नही मां कने । कड पाखज हो नहीं दीनी देव । किण वीध आउं तुम कने । दूरासुं हो सारुं नीत सेव । श्री० ३ । हुं कुमती कादागरी । कट थें छोजी प्रभू दीन दयाल । सेवक जाणी आपरो । मारा काटो हो प्रभू कर्म जंजाल । श्री०४ । भवसागर मे भटकीयो हूँ पापी हो अनती वार । अब तो सरणो आपरो । मुज तारो हो प्रभू नीरध नीचार । श्री० ५ । वोहत न मागूं तुम कने । छोटीसी हो कीजे वगमीस । मुगत नगर देखाय हो । तो जाणुं हो किरपा जगदीस । श्री०६ । समत दसे नव आगले । वतीसे हो सुद कातिक मास । गुरणीजीरा प्रसादसुं । पाचमने हो कीनी अरदास । श्री० ७ । प्रेम करी पालामणी । चोमासो हो कीनो धर चाव । धर्म ध्यान आणंदसुं । कर जोडी हो जपे जडाव ।श्री.८

## ॥ ढाल ॥

वारी हो जंबुजी वेरागी । ए देसी । प्रथम गुणधर गोतम

सासी । ज्यां गुण नमु सीरनामी । श्री वीरजीणंदजीन प्रसण पूछ्या । भव जीवां हीतकामी । भवी जीन ध्यावो श्री गुणधर-जीरा गुण गावो । सीव सुख पावो । आंकडी ।१। अगनभुती जिन वाय मूनीसर । चोथा वीगट वखाणी । कंचन वरणी देही दीपे । इमरत ज्यांरी वाणी । भ० २ । पांचमा गुणधर गूण कर गाजे । ज्यारो नाम सुधरमा वाजे । श्री वीर जीणंदजी २ पाट वीराज्यां । आतम कारज साज्यां । भ० ३। मंडीपुत्र जीन मोरी पूत्र । ए दोए ग्यान गेरीठा । आमम वेण सुणी तुम सोभा । नेणा कदय न दीठा । भ० ४। अंकपिता जीन आठमा कहीजे । ज्यारो पे सम ध्यान धरीजे । ज्याग चरण कवलरी सेवा । चाउ प्रभूजी तुंम दीजे । भ० ५। अचल पिता जीन मुगतना दाता । ज्यारा नाम लीया सुखसाता । मेतारज जिन श्री प्रभावे । ए दोए सकल वीख्याता ।भ० ६। ए इग्यारइ म्हाण कुलमें । आय लीयो अव-तारो । माहाण माहण धर्म सुणीने । लीनो संजम भारो ।भ. ७। इत्यादीक गुणधरजीरे आगे । अरज करुं कर जोडी । गरीब नीवाज वीरद तुंमारो टालोनी भवनी खोडी । भ. ८ । समत १६ स वरस बत्रीसें । पालासणी सुख पाया । पुज रतन समदाए रंभाजी । तत सिष्यणी जडाव गुण गाया । भ. ६ ।

## देसी हरजसनी छे

वण गए वैद आप गीरधारी । आ. । जी लख चोरासी फिरता फिरता मीनखा देही पाइ । आरज देस उतम कुल आए । सतगुरु संग सुणी रे जीन वाणी । सु० तज अभीमान भजोजी

गुरु ग्यानी। भ० तज.। आं. १ । जी गुरुसम जगमें नहीं उप-
गारी। जीव अजीव बतावे। दे उपदेस क्लेस मीटाए। तार दीए
भव जलसें प्राणी। ज. तज. २। जी आहेडेपर चढकर आए।
संजेती गुरु पाए। वाणी सुणकर भीज गए है। लीनो सजम
इथर जग जाणी। इ. त.३। जी परदेसी राजा अति पापी। केसी
गुरु समजाए। खीम्यां करके करम खपाए। तपस्यामे जहर दीयो
नीज राणी। दी.त.४। जी अग्जनमाली मुद्गर भाली। मनुष्य
हत्या बहु कीनी। वीर वचन सुण समता लीनी। सुत्र में जीन-
राज वखाणी। रा. त. ५। जी चोर चीलायत लपट लूटेरा।
पापी और गणेरा। इत्यादीक सुण गुरु मुख वाणी। केइएक जाए
वरी सिव राणी। व. त. ६। जी गुरु आराधो आतम साधो।
तिर गए उतम प्राणी। कहत जडाव जैपुरके मांइ। खूल गइ
अनंत सुखारी खाणी। सु. तज. ७।

## श्री १०५ श्री रंभाजी म्हाराजना गुण लीख्यते

दोहा। गुणवंतारा गुण कीयां। प्रगटे आतम जोत। वीस
बोलमांए कीयो। बंदे तिरथंकर गोत। १। सात समुदर साही
करु। लेखण सब वनराय। गुरुणीजीमें गुण घणा। मो मुख
कह्या न जाय। २।

ढाल १ ली। देसी संतजीनेमर सोलमारे लाल। अरीहंत
सिध समरुं सदारे लाल। आचारज उवझाए। मुनीचारीरे।
साधू साधवी आनकारे लाल। वंदू गुरुणीजीरा पाए। मु.। १।
सतीया रंभाजी दीपतारे लाल। चात्रा देस निदेस। मु. गुण

आगर सागर समोरे लाल। ते दाखु लवलेस। सु. स.। आंकडी। २। जंबुदीपरा भरतमेंरे लाल। वडलूसू नीपट नजीक सु. रुधीयो गाव सुहावणोरे लाल। जठ साध साधव्यारी पीक सु. स. ३। धनजीसेठ वसे तिहांरे लाल। गोत बोरा वड जात। सु० पदमा नासें भारज्यारे लाल। प्रतिव्रता सुवीख्यात। सु० स. ४। सुभ वेलां सुभ मोरथेरे लाल। जीव उतम कोइ आय। सु.। जननी कूखे उपन्यारे लाल। पूरव पुन्य पसाय। सु. स. ५। गरभ अवध पूरी हूवारे लाल। जनम्यां पुत्री रतन। सु. हाथो हाथे संचरेरे लाल। करता कोड जतन। सु. स. ६। सरीर संपदा सोभतीरे लाल। प्रतक रंभा रुप। सु. रंभाजी तिण कारणेरे लाल। नाम दीयो अनूप। सु. स. ७। ज्यारे पूठे जनमीयारे लाल। पुत्र दोए सुख माल। सु. मात पीतारे लाड-लारे लाल। ज्यूं मोत्यां वीच लाल। सु. स. ८। जोवन वय जाणी करीरे लाल। मात पिता चीत चाव। सु. संसारनी वीद साचवीरे लाल। करी सगाइ व्याव। सु. स. ९। ओस्त वाल कुल दीपतारे लाल। पूरो ज्यांरे परवार। सु. जयंगजीरी कुल वहुरे लालकु कीरतमलजीरी नार। सु.स. १०। अल्प करम भोगावलीरे लाल। ततखिण पडीयो वीजोग। सु. वडलू आया सासरेरे लाल। जठे साध साधव्यांरो जोग। सु. स. ११। ए इदकार अठै रयोरे लाल। आगल वात रसाल। सु. पूर्वला संबंदनीरे लाल। ए थइ प्रथम ढाल। सु. स. १२।

दोहा। कुटम सहू चीन्ता करे। ए सुंदर सुखमाल। किण

निद जनम ज काडसी । पडयो मोए जजाल । १ । सांड दासजी वोथरा । श्रावक सैंठा जाण । मामारो सगपण हतो । इण निद वोल्या वाण । २ ।

ढाल २ जी । देसी श्राज स्हेद वाणी सुरज उगीयो । वाइजी चीन्ता मती करो । करो नित धर्म ध्यान । मोटी सती हो । दान सुपात्र दीजीए । छोडोनी श्रारत ध्यान । मो. धन २ समता थांएरी । थारा गुणरो छेय न पार । मो. कुल मरजादा में चालस्यो थारो जस फैलेला संसार । मो. श्राकडी । २ । एह वचन सनने सुणी । श्राण्यो मन संतोक । मो. धर्म करणरी मनरली । जाण्यो हे भोगन रोग । मो. ध. ३ । चंदूजी मोटा सती । कांकरीयांरो कुल चंद । मो. निरदपणे थाणे रया । नाइ भायारे हरक श्राणंद मो.ध.४ ज्यारे सिप्यणी दीपता । राम कवरजी म्हाराज । मो. दरसण कर परसण भया । श्रवे सारसु श्रातम काज । मो. ध. ५ । समायक पोमा करे । सुणे नित वाणी हुलास । मो. खंद हरी चोव्यारनो । एक सीखणरो श्रभ्यास । मो. ध. ६ । रात दीवस सेवा करे । ज्यांरां दील वसीयो वेराग । मो. कुटम सहु समाजएने । श्राग्या लीनी म्हा भाग । मो. ध. ७ । समत १९ से नवाणुं मे । वद पांचम फागण माए । मो. पुज रतनजीरे सनमूख । संजम लीनो हुलास । मो. ध. ८ । राम कवरजीने सुपीया । थारे सिप्यणी छे सुवीनीत । मो. । साधु श्राचार सीखानज्यो राखज्यो रुडी रीत । मो. ध. ९ । गुरु श्राज्ञामें चालज्यो । दीनी ससारयां मीख । मो. पच प्रमाद नीवारज्यो । वेगी करज्यो थे मुगत नजीक । मो. ध. १० । ए सीखानण दील धरी । करे नीत

ग्यान अभ्यास। मो. मूल छेद उर धारने। कीनो मिथ्यातनो नास। मो. ध. ११। वाणी कोयल सारखी। मीठो ज्यारो उपदेस। मो. भिन २ कर समजावता। घाले धर्मरी रेस। मो. ध.१२। गुरणीजी र मानीजता। गुरनासु प्रीत। मे:० सिखरणया सहुने सुहावणा। मान पलक पलक आवो चीत। मो. ध. १३। वरस वावीसां संजम लीयो। वीस वरस गुर संग। मो. दूजी ढाल सुहावणी। होवे तीजीरो उचरंग। मो. ध. १४।

दोहा। वीसे वीकानेरमें। गुरणीजी दीवलोक। प्होता चव दस चानणी। ज्यांरो पड्यो वीजोग। १। पूज कजोडीमलजी। जाणया गादी जोग। पत्रीतणी पद थापीया। राजी हूवा लोक।२।

ढाल ३ जी। देसी सुखकारी मारा पुजजी म्हाराज। मही मंडलमें वीचरताजी कांइ सिपयांरे प्रवार। खट काया रख वालता जी। कांइ करतां पर उपगार। जी सुखकारी मारा गुरणीजी म्हा-राज। जी थारा दरसणरी वलीहारी। आंकडी। १। खिम्या खडग ज्यारा हाथमेंजी। कांइ झाली तपस्यामें सेर। सुभट वीस दोए जीतवाजी। कांइ नीश्चल मेरु सुमेर। नी.१। गुण छतीस बीराजताजी कांइ। विद्याना भंडार। सुखदाइ सहु जीवनेजी कांइ। चर्चा करण गुणधारजी। सु. ३। रवि जीम दीपे भरतमेंजी कांइ। ससि नीम सीतल होए। भवक चकोरवीकसे हीएजी। थारी सुरत मूरत जोएजी। सु. ४। कंठ कला सुध वांचणीजी कांइ। वीधसुं करता वखाण। भवीयणारा मन मोवीयाजी। थारी सुण सुण इमरत वाणजी। सु. ५। वरस एकतालीस वीचरीयाजी कांइ। सुरपणे सुखकार। चालीससें चोमासो नागोरमेजी। जठे वोत

हूवो उपगारजी । सु. ६ । कातीमें खेद हुइ गणी कांइ । कीना अनेक इलाज । भाग्य वायां करी वीनतीजी । अठ थाणे वीराजो म्हाराजजी । सु.७ । दीलमांए वेठी नहीजी कइ । रहवणरी थिर वास । श्रागे जाणी जावसीजी । हाल वीचरसु मास दोमासजी । स.८ । तन वल चीणो जाणीयोजी कांड । नेत्रांमें पड गइ हीण । मन वल सेठो राखनेजी कांड । व्यारकीयो प्रवीणजी । सु. ६। दरसण दीरावागुरवेननजी काइ । वडलु पधार्या माभाग भाया वायां करी वीनतीजी । अन वीचरणरो नही मागजी । सु. १० । माएत वीरद वीचारनेजी । मारी कीजे अर्ज मंजुर । तन मन सेवा सारस्यांजी । सदा रहसां चरण हजूरजी । सु० ११ । वार २ फरी वीनतीजी काइ । मानी दीन दयाल । तन मन थरता राख-नेजी । अन तोडसु कर्म जंजालजी । सु. १२ । वस्त्र पात्र अहा-रनीजी कांड । छोडी ममत दियाल । समता सागर जूलताजी कांइ । ए थइ तीसरी ढालजी । १३ सु० ।

दोहा । तपस्या वीनद प्रकारनी । आमल नेड वास । सीयाले एकासणा । एकंत्र चोमास । १ । अणोदरी तप सासतो । करता वारइ मास । भणत्रो गुणनो सीखनो एक मुगतरी आस ।२।

ढाल ४थी । देसी भूंडीरे भूख अभागणी । ए राग । ठाणे इग्यार वीराजतां । सुखसातासु आपलालरे । सोले सत्यारां अदे-पती । करता थाप उथाप लालरे । १। गुरणीजीमांए गुण घणा । मो मुख कपाय न जाए लालरे । कोडे जूगां लग वरणये । सुर

गरु पार न पाए लालरे । आंकडी । २ । सगला भेला खटे नहीं कठण साधूरी रीत लालरे सुखसाता छे मायरे । थे क्युं नहीं वीचरो नचींत लालरे । गु० ३ । जतन कवरजीन राखीया । सेवा वंदगीमांए लाल रे । व्यार करायो जडावने । जेपुरकांनी जाए लालरे । गु० ४ । दोए चोमासा वारे कीया । फिर आइ तुम पासे लालरे । जीन मारग दीपाव्रीयो । श्री मुख दीस्या वास लालरे । गु० ५ । जीम जाणो तिमही करो । मेतो हूवा नचींत लालरे । जीन मारग दीपावज्यो । चालो गुर वचनारी रीत लालरे गु. ५ । सिषण्यां आपरसावडी । मूडा आगे ठाठ लालरे । रात दीवस हाजर रहे । एक बूलायां आठ लालरे । गु० ७ । किरपा श्री गरुदेवरी । प्रसंसे मुनीराय लालरे । चोथा आरारी वानगी । कोइ रह गइ पांचमामांए लालरे । गु० । सिष सरव सेवा करे । धर्मध्यांनरा ठाठ लालरे । चंदणमालानी परे । सोभरया वेठा पाटे लालरे । गु० ८ । देही जाणी देवालणी । नही करी सार संभाल लालरे । अवरसांलग काडीयो । तप जप रुप्यो माल लालरे । गु० ६० । आउथित थोडी रही । वेदनी कर्म वीसाल लालरे । ते आगे तुम सांभलो । ए थइ चोथी ढाल लालरे । गु० ११ ।

दोहा । पलक पलकमें पूछता । कतनी छे अव रात । पडिक-मणो मनमें वस्यो । ओर न दूजी वात । १ । स्हाग सुकल एकम दीने । पोर एक चढ्यो सुरे । कारण पुखीया वाएनी । वेदन सही करुर । २ ।

ढाल पांचमी । राय वडगर ताल लागी रे । जीव. सम प्रणामे भोगवीरे । अवस पधारी खेद । करम लणायत जाणने चूकाया

ब्याज समेत । १ । गुरणीजी ए गुण भारी रे । मैमा भरत मजारी रे । आकडी । करोध मान कीया पातलारे । माया लोभसुं दूर । करम कटक दल जीतना । हूवा सतवादी ने सुर । गु० २ । ओग-दरी नहीं आसतारे । सरस नीरसमभान । निज परआतम तारवा । बेठा सीलधरमरी नाव । गु० । सत्रू मीत्र सारखारे । समगिण रंक ने राव । संजम पाले सुरमा । ज्यांरा दिन दिन चढता भाव । गु०४ । पांचम सुद्ध बीराजतारे । रुचसुं लीनो आहार । पचखाण कराया श्री मुखेरे । सरन सत्यां लीयां धार । गु०५ । म्हा व्रत पाच आलोचनेरे । सरणा च्यारुं लीध । चोरासी लख जीनसुंरे खमत खामणा कीध । गु०७ । तीन करण तीन जोगसुंरे । त्याग्या पाप अठार । सैगारी अणसण लीयोरे । पचख्या चारुंइ अहार ।गु.७। कीतरीक रात गया पछेरे । पोट्या सुखे समाध । ततखिण पाछा उठीया । एक ममरण रो उढमाढ । गु०८ । मोरथ दोएरे आस-रेरे । भजन कीयो भरपूर । पंचपदाने वदणारे । स्वमुख दीनीसुर । गु०६ । थाक गया बेठा थकारे । पोट्या पाछली रात । मनमांड माला फेरता । ज्यारो नीसना उपर हात । गु० १० । ध्यान सुकल मन ध्यायनेरे । पाप पूंज प्रजाल । निज आतम नीरमल करी । संपूरण पंचमी ढाल ।गु०११।

ढाल ६ठी । दयारणमिवो वाजीयो । जागो २ नरनार ए देसी । वीजी वार उपनी हो । पुछीया वाए नीपद । सुणावो २ पूकारता । एक सथारारी उमेद हो । गरणीजी गुण सागरा । आकणी । १ । नार २ ज्यान पूछीयो हो । तीन हाकारा भराय । संथारो कराउं आपने । ये सरध लीन्यो मनमाए हो । गु० २ ।

तेरे सत्यांरी साखसुं । मनमांए सेठी धार । त्याग कराया जडावजी हो । जाव जीव चोव्यारहो । गु० ३ । पुष नक्षत्र तिथ पंचमी हो । सिध जोग गरुवार । सुध प्रणामां सरधीयो हो । संथारो चोव्यार । गु० ४ । सरणा च्यार सुणावीया । सलेखणांरो पाठ । परभाथे पूज पधारीया हो । नर नारयांरा ठाठ हो । गु. ५ । त्याग वेराग हूवा गणा हो । खंद कुसील चोव्यार । रंभाजी मोटा सती हो । कर दीयो खेवो पार हो । गु. ६ । आलोइ नींदी नीसल थया हो । अष्ट पोर चोव्यार । संथारो पाल्यो सुरमां । ज्यारे दीसे अलप संसार । गु. ७ । पोस करसन छट सुक्रने हो । चोथा पोर मजार । सुरगत जाए वीराजीया । जठ वरत्या जे जेकार हो । गु.८ । श्रावग वरग भेला हुवा हो । खरचे होडा होड । निहरण कीधो सरीरनो हो । पूरयां मनरा कोड हो । गु. ९ । वरस एकतालीस बीचरीयां हो । नव वरस थिर वास । वावीस वरस घरमें रह्या । सजम पाल्यो वरस पचास हो । गु. १० । वोतेर वरसारो सरव आउखो हो । भोगव्या पुन रसाल । जीन मारग जोर दीपावीयो । माने वीरह खटक जिम साले हो । गु. ११ । गुण गुरणीजीमे छे घणा हो । मो मुख रसना एक । पार कीसी विदे पामीए हो । नही कविता बीबेक हो । गु.१२ । पूज विने प्रसादसुं हो । सफल फली मुज आस । गुण गुरणीजीरा मन वस्या हो । ज्यूं फूल बीच वास हो । गु.१३ । अक्सर पद हीणो कयो हो । रस्व दिरग कोइ विरुध । ते मुज मीछयामी दुकडं हो । कवि जीन कीजो सुध हो । गु.१४ । बडलुमें गुण जोडीया हो । बोत हूवा प्रसीध । पुख नचत्र बद बीजने हो । सिध जोग संपूर्ण कीध हो ।

कलस। पूज रतन समदाएमांए। बडा २ हूवा म्हासती। पाटोघर श्री पाट दीपे। रुखमाजि इदकी रति। रु. १। तस पाट बीजे देख रीजै चदूजी चंदा समां। तसपाट तीजे रामकवरजी। तप जप में हूवा सुरमा। त. २। तस पाए वंदू कर्म निकंदू। रंभाजी मोटा सती। आप पोते पाट चोथे। प्रसंस मोटा जती। प्र०३। खट ढाल वारु राग चारुं। सांभलतां वहु रस हे। प्रसाद श्री गुरुदेवजी को। कवि जिन दीजो जस है। क. ४। समत श्री १६ स कहीए। वरस वली ४६ स हे। वे कर जोड जडाव लपे। गुरणी जिरी गुण रास हे। २। ५।

## आत्म निंदयारी ढाल लीखंते

देसी भगतजिरी छे। देव नमूं आरिहंतने। गरु गिरवा श्रीसाध। धर्म केवलीको भाखीयो। मैंतो समकित रतन ज लाद जिनडला। तूंतो जतन करीजे जेयना।१। आठ रयो तीरजंचमें। बासठ लाख वीचार। तस थावर केइ जूणमे। तूंतो भमीयो अनन्तीवार। जि० थारो दूख जाण एक केवली। २। कर्म गल्या। हलनो हूवो। इंद्री पाइ दोए। वे इंद्री ते इंद्री चोंद्री। थारी अनंत पून्याइ जोए। जि० तूंतो काल संख्याता तिहा रयो।३। असंनी तिरजंच पिण हुवो। इंद्रीलादी पंच। चवदे ठीकाणा मीनखरा। जठे सुख नही पायो रंच। जि० तूंतो मरमरने उपज्यो तिहा। ४। संनी जलचर आद दे। उपज्यो म्होमाए। सीत उमन परवसपणे। सही भूख तिरखा अथाय। जि० थारी गरज सरे नहीं प्राणीया।५। ग्यान रहत अग्यानमें। जठे सही वेदना घोर। जि० कोइ नासण नसेगी नही।६। प्रमाधामी देवता। ज्यारी पनरे। जात

मार देवे एक जीवने । वेतो करे अनंती घात । जि० तूतो पल सागर तइ सही । ७ । तिग्रर पून्याइ प्रगटी । देव हुवो सुभ जोग । खमाए खमा करे देवता । जठ पाम्या नवला भोग । जि. तोए तिरपत नही हूवो जिवडो । ८ । भोग अधूरा छोडने । झूरंतो मनमांए । मरण लीयो परवस पणे । उपन्यो देस अनारज मांए । जी. जठे पुन पाप जाणे नहीं । ६ । मदिरा मांस भक्षण कीया । खाया आधी रात । पीडा न जाणी पारकी । वल करी पचंद्रीनी घात । जी. थारे दया दील व्यापी नहीं ।१०। साख भरी लांच लेएने । दीना अछता आल मरम मोसा प्रकासीया । परने वोली माठी घाल । जी. तूं तो नींद्या कीधी पारकी । ११ । दगो करी धन चोरीयो । परपुरुषांसुं प्यार । थापण राखी पारकी । थारे समता न आइ लीगार । जी. तुं तो कपट करी धन मेलीयो ।१२। कलो करी जीव दूंबीया । सेव्या कर्मादान । आरंभ भेदन वावरो । नहीं दीनो सुपात्र दान । जी. तुं तो मान करी मदमें छक्यो ।१३ पापे करी न गोपव्या । लोप्या गुरुना वैण । कर्म उदे जव आवसी । थारो कोए न दीसे सेण । जी. सहु आप कीया फल भोगसी ।१४। आतम भाव न ओलख्यां । सेव्यां पाप अठार । कुगुरु कुदेव कुधर्म में । गयो मनुष जनमारो हार । जी. थयो चोरासीनो पावणो ।१५। चारु गतना चोकमें भमतो २ आए । आरज देस उत्तम कुले । जठे धर्म केवलीरो पाए । जी. तूं तो जोग लयो दस बोलरो ।१६। सांग वणायो साधरो । गुणबीन गुरुजन थाए । भोलाने भरमावीयो । तूं तो धर्मी नाम धराय । जी. मारी गरज सरे नहीं भेखसुं ।१७। काल अनंता तूं रुल्यो ।

जद पुदगलरे साथ अब छेडो कद आवसी। एक लाण श्री जग-नाथ। जी. तूं तो ले सरणो अरीहंतनो। १८। आतम नींदा में करी। पेर करी जो कोए। पूर कपट जो केलव्यो तो। मीछ-यामी दुकडंग मोए। जी. थारे अरिहंत सिधारी सासुं। १८। १६ सें समत भलो। उपर चोपन साल। जेपुरमांए जडावजी। जोडी जुगतसु ढाल रसाल। जी. आतो मगसर वद एकादसी।२०

## लावणी लीख्यंते

पापसुं जीव वोत राजी। खेलतो कुमत संग बाजी। होए रह्यो ममताको मोजी। सुमतकी सेज नहीं साजी। मीथ्यामतमें भूलतो। लाग्यां कुगुरुका कान। भव भवमे भटकावसी। थारे खुली कुगतकी खान। अंधेरा ग्यान बीना। तेरा जन्म इख्यारथ धर्म बीना। तेरा धर्म इख्यारथ मर्म बीना। प्राणी नहीं पावो भव पार गरुका हुकम बीने। आकडी। १। जीव तुं पुदगलको रसीयो। जगत जंजालमें फसीयो। कर्मको काट नहीं घसीयो। धर्मसु दूर जाए बसीयो। माया माया कर रह्यो। पच रयो रात और दीन। कोडी कोडी जोडने। भेलो कीबो धन। अंधेरा। तेरा धन इख्यारथ दान बीने। तेरा दान इख्यारथ मान बीने। प्रा.२। काया तेरी व्होत बणी चगी। पलकमेगी मता भगी। धर्म विन देए तेरी नंगी। विपतमें होए कोण संगी। तप जप किरया नावरी। खाया ताजा माल। कर्म उदे जब आवसी। थारा नरका पडे हवाल। अंधे. तेरी देय अलूणी चेतना। तेरा चेतन अलूणा दया बिना। प्रा. ३ भटकतो त्रिया कतद। पूत पर-

वार और भाइ । खानेमें सब भेला थाइ । संकटमें होए कोण साही । तेरा कीया तूं भोग ले । मन कर आरद ध्यान । अवसरमें चेत्यो नहीं । थारो गयो हीयाको ग्यान । अंधे. तेरा ग्यान इख्यारथ भजन विने । तेरा भ. समज विने । ग्रां.४ । जुलम तुं व्होत किया भाइ । जरासी जंदगीमांइ । अब तुं चेत जागेला । देत हे सतगुरुजी हेला । १६ सें एकावने । फागण होली चोमास । जैपुरमांए जडावजी । करी लावणी तास । अं. तेरा जन्म इख्यारथ धर्म इख्यारथ धर्म विने । ग्रां. ५ ।

## सज्झाय लीख्यंते

देसी जिलारी छे । वारे वारे मति भटको हो । जिवांजिवो । आवो ग्यान घरमांए । सु० ग्यानी थाने कया समजाउं हो मना । आंकडी ।१। हिंसा परित्यागो हो । जि० । दान दया सुखदाय । सूरख०।२। झुठमति भाखो हो । झुठारी दूर जाय ।सु० ३। चोरी मती कीजे हो । जि०। दोन्यु भव दुख दाए । सू०४। परनारीसुं डरीए हो । जि०। पंचामें पत जाए ।सु०५। ममता नहिं कीजे हो जि० समतारे घर आए । हटी० ६ । किरोध मान बूरो छे हो । जि० कपट लोभ द्यो छोड ।सु०७। रागधेग रुलावे हो ।जि० कलो हो कियांपत जाए । सू० ८ । आल देणो सोरो हो । जि० भूगत्यां छूटको थाए ।पा०९। पिसुन पराइ हो । जि०परै २ वाद नहीं भाखे । सु० १० । रत अरत निवारो हो । जि० माया मिरखा नै दाखे ।११। मीथ्या सल साले हो । जि० समगत सेठी राखे ।अ०१२। पाप अठारा खोटा हो । जि० भटकासी भवमांए ।

मू०१३। पापेलुं अच्यो हो। जि० ताग्यां छूटको थाए। मू० १४ निज मन समजावे हो। जि० जेपुग्माए जडाव।मु०१५। एकावन होली हो। जि० जोड करी धर चावे अ.१६।

## स्तवन होलीको

देसी फागणकी। होलीखेलोरे। हारे होली सुमतसुं हित-आणी।हो.१। आं.। सुमत गूपतकी। करो पिचकारी। समवर सील भरो पाणी। हो. २। मन मिरदग सुरत सारंगी। मधुर २ गावो जिन वाणी। हो.३। नेम धर्मका दोए मजिरा। सरदा डोर करो प्राणी। हो. ४। ग्यान गुलाल। अबीर ध्यानको। अबीर ध्यानको। आठ करम करो धूल धाणी। हो. ५। सतस्तार किरतकी भेरी। चरचा चग बजावो ग्यानी। हो. ६। एसो फाग खेलो भव प्राणी। सुखे सुखे जावो निरवाणी। हो.७। जेपुग्माए जडाव कहत हे। फागण शुद चवदस जाणी। हो. ८।

## राग लेइज

मती ढोलोरे। हारे मती.। नीर जलम वीगडे। म. १। आंकणी। नीरसु नीर जगत मन जिते। नहीं लोग दुनीयां अरडे। मती. २। दूध गिरतना दाम लगत हे। पाणी ढोले धारे क्या विगडे। मती.३। गली गली में फिररे भटकतो। धके पडे तो धधा पकडे। मती.४। माए सुणरे थारी वेन लजत हे। मीरडी जिम काइ अरडे। म. ५। रास वेतम् ढोलोरे खेले

मिसटासुं देइ खरडे । म. ६ । धर्म ध्यानसुं सरम आवत है । गाल गीतमें आगे अरडे । म. ७ । जीव असंख्या कया जीन-वरजी । विन मरजादा कइ रेडे । म. ८ । आण वेराग त्याग सुध कीजे । नहीतर जम ले सीस कटे । मती. ६ । एकावन फागण सुद तेरस । सुस करे तो कइ अकडे । म. १० जैपुरमांए जडाव कहत है । जीव दयासुं जन्म सुधरे । म. ११ ।

## राग तेहीज

कीजो २ रे हांरे कीजो २ रे । सुकृत थारे संग चाले । १ । आंकडी । धर्म करे पिण सरम न जाणे । कुलकी रुडलीवीजाले की. २ । धर्मीसुं द्वेष पापीसुं प्रच्यो । ज्याने मारग कुण घाले । की. ३ । मात तात मुतलबका गरजी । सुखमें सीर सवी घाले । की.४ । आयो अकेलो ने जासी अकेलो । पुन पाप थारे संग चाले । की.५ । सतगुरु सीख मानी नही मूर्ख । सो भव भव-मांए साले । की.६ । तरसत देखी परकी सायवी । अव तेरा जोर नहीं चाले । की. ७ । जेपुरमांए जडाव कहत हे । खर्चीं लायो सो खा ले । की. ८ । एकावन फागण सुद पुनम । उतम गरु मारग घाले । की. ६ ।

## राग तेहीज

पीज्यो २ हांरे पीजो २ रे । सुगण समतारा प्याला । १ । आंकडी । ममता डाकण अेत वुरी है । सव जगत खाया लाला पी० ।२ वालपणो हस खेल गमायो । जोवन में त्रियांका वाला ।

पी०३। बूडापे भगवत नही भजीयो। मूंडामें पड रही लाभलां। पी०४। देस प्रदेसांमे फिरेरे भटकतो। भाग विने नहीं मीले गहला। पी० ५। धनके काज अनेक मूवा पछे। छोडेसो सिव सुख लेला। पी० ६। नरभव पायो तूं एल गमायो। आगे जवान कड देला। पी० ७। जेपुरमांए जडाव कहत है। प्रभू भज पार उतरव्हला। पी० ८।

## राग तेइज

लीजो २ रे हारे लीजो २ रे। धर्म धनको लावो। ली०। आंकडी। १। खायो न खुटे चोर न लुंटे। नही लागे राजारो दावो। ली० २। भार नही याको भाडो न लागे। मन आवे ज्यां लेजावो। ली० ३। गले नहीं विरखा रुत आयां। फले घणो हिरदामें वावो। ली० ४। काठ न आवे कीडा न खावे। कुसी पडे ज्या धर जावो। ली० ५। बांट दीयां तिलभर नहीं खूटे। दान देवणको रावो चावो। ली० ६। १६ स एकावन बरसे। फागण सुद पुनम गावो। लो० ७। जेपुरमांए जडाव कहत है। सुखे२ सीवपुर जावो। ली०।

## राग तेहीज

दीजो २ रे हा २ दीजो २ रे। सुपात्र दान सदा। दी० १। आकडी। दानसुं मान वदे इण जगमे। गूणीजन नीत कीरत गावे। दी० १। सेठ धनो श्री हसकवरजी। सालभद्र सुख लीयो सगणा। दी० ३। संख राजा मेघरथ जयनती। गोत तिरथंकर

बांध्यो सुगणा । दी० ४ । मान वडाइमें क्या धन खोवे । दानमें क्रर बरसावो सगणा । दी० ५ दान दीया थारो धन नहीं खुटे । खेत चीणा जीम जाणो सुगणा । दी० ६ । पात्र कूपात्र देखने दीजे । उत्तम फल लागे सुगणा । दी० ७ । जस कीरत तांइ धन खरचे । भावे ज्यांवलजाव सुगणा । दी. ८ । १९ स एकावन जेपुर । फागण सुद पूनम सुगणा । दी० ९ । हित उपदेस जडाव दीयो इम । नर भव सफल करो सुगणा । दीजो दीजोरे । १० ।

## राग तेहीज

मत खावो रे । हांरे मत खावो रे । भवक कांदो मूलो । १ । म.। आकडी । जीव अनंता कया जीनवरजी । परभवको तूं डर भूल्यो । म. २ । फाड चीर आचार वणावे । मांए वोत भरे लूणो । म. ३ । अंतकाय सुखाय मणा वंद । सोगनकर मनमें फुल्यो । म. ४ । वेगण खाय भर्णादो वणावे । पाप उदे जब क्यां सुलो । म. ५ । धर्मी वाजे खाता नहीं लाजे । ज्यांरे सिर पडसी धूलो । म. ६ । कांदो वांदो खाय सरावे । भव २ में होसी लूंलो । म.७ । अभख अनंत कया जीवनरजी । सुणतां २ कइ भूलो । म. ८ । आगे वेराग त्याग सुध कीना । देख देख मन क्यूं डुलो । म. ९ । वास बूरी याको नाम निकामो । खाय खाय चीत क्यां फूलो । म. १० । १९ सें एकावन जेपुर । फागुण शुद उडे धूलो । म. । कहत जडाव जमींकंद त्यागो । नहीं तो निगोदमांए भूलो । म. १२। हित उपदेश सुणी भव जीवां । हीर दारी खीड-की खोलो । म. १३ ।

# राग तेहीज

मत जाणो हारे मती जाणोरे । भरक काया मेरी । म. १ । आकडी । मेरी २ करता व्होत दुख पाया । या कन ही नही हे तेरी ।म. २। काया रंग पतंग मरीखी । उडता नही लागे देरी म. ३। इणसे मोए करे सो मूर्ख । खिणमें होए भसम ढेरी म. ४ । इणमें राचनाच भव २ में । चोरासी में दी फेरी म. ५ । होए निसंक कर्म तू बांधे । भुगतण मे काया न्यारी । म. ६ । पूगी मुद्दत रहण नहीं पावे । बीचमे जम ले घेरी । म. ७ । जब पिछ-तासी कुड छूडासी । नामणन नहीं हे सेरी । म. ८ । तप जप गार जडाव काड ले तो इज्जत रहली तेरी । म. ९ । १९ में एकावन जेपुर । हित सीग्नामण हे मेरी । म. १० ।

# राग तेहीज

मत पीवोरे हारे मत पीवोरे । तमाखु जनम बिगडे म. । आंकडी । १ । हाथ जलरथारोथुकरे कालजो । ग्ररड उगासी आवे सुगणा । म. २ । रुप गयो थारा दात डाडरो । थचका थूक पडे सुगणा । म. ३ । नाकजरे थारा नीमन नीगाडे । डाडी मूछ भरे सुगणा । म. ४ शुद्ध करे तु साथ सतकी । पग्की एंठ पीवे सुगणा । म. ५ । दाम कटे थारो घटन कायदो । वदन बूरो वासे सुगणा । म. ६ । नहट नजार हजार मीनपमे । हूंकाने हुरडे सुगणा । म. ७ । तनक तमाकु मागे मगता जिम । लाज सरम नहीं आवे सुगणा। म. ८ । इण भवमें इतना अवगुण । पचामे

पत जावे सुगणा । म. ६ । मान कयो तु छोड़ तमाखुं । नही तर नरक पड़े सुगणा । म. १० । अगन वरण कर हुको पासी । पीछे घणो पीसतावे सुगणा । म. ११ । १६ सें एकावन जेपुर । फागण सुद चउदस सुगणा । १२ । हित उपदेस जडाव दीयो इम । सुण २ त्याग करो सुगणा । म. १३ । इति संपूर्णं ।

## ढाल चंदरी

रे रंगीला सुडा । सतगुरु दे छे हेला तुं समज २ ने गेला । दिल सुं वीचारोने पेलारे । तीरो भव प्राणी । संसार समुद्र जाणी । ती० । १ । आंकड़ी । परभव निस्ते जाणो । थे लीज्यो धर्मको नाणो । आगे नहीं नाणोरे । ती० २ । मात पिता पर-वारो । सब हे मुतलब का यारो । दुखमें कोई नहीं थारो रे । ३ । सु सबरत किया मोटा । जब जोर पडयो किया खोटा । तू खाय नरक सोटा रे । ति० ४ । पाततणो बोपारी । तुं कर्म कमाया भारी । सतगुरु की सीख न धारी रे । ती० ५ । इंद्रारे बस पडियो । तु भव भवमें रडबडीयो । थारो आतम कार्ज नै सरियो रे । ती० ६ । बेस वणावे भारी । तु तके पराइ नारी । थें घर की नार बिसारी रे । ती० ७ । भांग तमाखु खावे । तूं घर वेस्यांरे जावे । थने लाज सर्म नहीं आवे रे । ती० ८ । राजा जाणे तो डंडे । खर चाढे न सिर मुंडे । थाने न्यात जातमें मांड़े रे । ती० ६ । दया जरा नहीं तेरे । तुं नवकरवाली फेरे । तुं माल वीराणा हरे रे । ती० १० । सतगुरु ग्यान सुणावे । जठ झुक झुक झोला खावे । वाता में रात गमावे रे । ती० ११ ।

आतम काज बीगाडे । तूं न्यात पराया नवेडे । तू पडयो कुतम के डेरेरे । ती० १२ । कुगुरुको मरमायो । थने हिंसा धर्म बतायो । तुं शुध समगत नहीं पायोरे । १३ । अन के अवसर आयो तुं । उतम नर भन पायो । थाने सतगुरु धर्म सुणायोरे । १४ । फागण शुद १६ से । जेपुरमें नीमत्रा बीसे । कांइ जडाव दीयो उपदेसेरे ।

## ढाल

काटो २ करमकी वेडी । जागो २ रे मूर्ख मन मेरा । क्यां सुता होए सवेरारे । जा. आंकडी १ । भजो नाम । प्रभूजिका गेहरा जिणसुं टले भन फेरारे । जा. २ । तूं जाणे एह घर मेरा । पिण हो ए जगल में डेरारे । जा. ३ । काया कपटण ठग २ लावे । नितकां करे नरमेरारे । जा. । ४ । धन धन करतो फिरे भटकतो । पिण निलसे कोड अनेरारे । जा. ५ । कुटम सहु सुतलन का गरजी । अतममे नहीं तेरारे । ज. ६ । आयो अकेलो न जासी एकलो । मेटे मिथ्यात अंधेरारे । जा. ७ । चेत मुधी वानन मे नरसे । तीजे रटी गण चोरयांरे जा. ८ । जेपुरमाए जडाव कहत हे । मान कया गुरु केरारे । जा. ६ ।

## राग तेरीज

लीज्यो २ रे गुरुका सरणाः । ज्यो थाने भनजल तिरणारे । ली. । आ । १ राय सचेती पापी अदेमी । मेट दीया जन्म मरणारे । ली. २ । डीड परीहारी चोर चलायती । सुगरतमें अवतरणारे । ली. ३ । मेघ कवर धनोरिखराया । स्वारथ सीध अव-

तरणारे । लीज्यो० ४ । साल कवरने रिख अवंतो । आतम कारज करणारे । ली० ५ । इम अनेक गया सीवतमें । ज्यांरा सुत्रमें कीया निरणारे। ली० ६ । जेपुरमांए जडाव कहत हे । अब उतम कार्ज कारणारे । ली० ७ ।

## राग तेहीज

रहो २ रे जगतसुं न्यारा । ज्यो चावो नीसतारारे । रहो. आंकणी । १ । बैह रही जन्म मरण की धारा । डुब रया संसारारे । रहो० २ । आदी रातका पुत्र जायो । सरख्या सहु प्रवारारे । रहो. ३ फजर भइ जब गुजर गया है । हाय २ करे सारारे । रहो. ४ । परण्यो निरख हरखने सुंद्र । माने सुख अपारारे । रहो. ० ५ । आयो काल कपट ले जासी । कोई न राखण हारारे । रहो. ६ । चार दीनाकी है चतुराइ । छेवट घोर अंधारारे । रहो. ७ । जेपुर रमांए जडाव कहत है । अब तूं जित जमारारे । रहो. ८ । १६ सत्रावन में वरसे । चेतमास उजियालारे । रहो. ६ । इति संपूर्ण ।

देसी पखवाडारी या बारामासीरी छे । पहेलो आलस करम काठीयो । करे ग्यान की घात । उदम नही किण वातरो सरे । पडयो रहे दीन रात । पसु सरीखी ओपमासरे । दीनी त्रीभुवन नाथजी । तुम समझो प्राणी । बोहत बूरा छे तेरा काठीया । सुण सतगुरु वाणी । दूर तजोनी तेरे काठीया । आंकणी । १ । काया माया बैन भारज्यां । मात पिता सुतभिराता । म्हो मायामें पस रया सरे । नहीं तिरणारी बात । ए सब हे मतलब का गरजी । एक न

चाले साथजी । तुम, २ । अकड लकड सारखा सरे । अब छंडा अननीत । लोड वडाइनगीण सरे । नहीं गुरुसू प्रीत । लोक सउ फित २ करे सरे । प्रभो होय फजितजी । तु. ३ दसमो कालकर्मं कयो सरे । अवनित जहर समान । वचन बोले असुवानणसरे । गरु नहीं देवे ग्यान । कूया कानरी कुकरी सरे । कोय न देवे मान जी । तु ं ४ । मीनप तिरजच ने देवतासरे । अननित दुखिया होए । गलयारगधानी ओपमा सरे दीनी सूत्र जोए । भूख त्रीपा गणी भोगवे सरे । भव २ दुखीया होय जी । तूं. ५ । गोल चाल फेरे नहीं सरे बीगता नाटकी तोल । प्रमादी पापी कीयोसरे । गमेगणी रग गेल । तप मजमरी खप नही मरे । हारो जन्म अमोल जी । तु ं ६ । क्रोधी कुकरनी परे सरे । भृग भूम मामा होय । आप नले परने सतावे । लोक हमनाइ होय । तप मजम सन क्रोध सु ंसरे । नल जल भममी होएजी । तु ७ । रोग क्षरे तन जोजरो सरे । काया होय निकाम । तप सजम न कर सके मरे । रुचे नहीं अनपान । खाट पड्यो टमका करे मरे । गरकाने देवे कानजी । तु ं ८ । जस कीरत के कारण सरे । खरचे घर का दाम । उलटी अप कीरत हुवेमरे । लोक करे अपमान । मातमो अपजस कर्म काठीयो । भाख्यो निरथमान जी । तु ९ । झाल्यो मत छोडे नहीं सेर । लीनी टेक समभाय । मटल्यां पटल्या जे हुवे सरे । कुलने दाग लगाय । पकड्यो पूछ गधा तणो मरे । मुखे दु लाता खाय जी । तु० १० । डरकी नात मुणे ज्यो तिलभर । मै लागे तिण नार । गुरु संगत न कर सके सरे । आवे संक

अवतारो । सु. ६ । १६ सें ४२ ली सहर आ जीयापुर रसाली । हीयो जडाव लवलेसो । निज आतमने उपदेसो । सु. ७ ।

## राग : भांगरा गीतनी

दीनकोर धंधो कर पर नींद्या । सुतो रैण जगावे । मोरा लाल नींद्डली खारी लागे ए भजनमें नींद्डली । परी जाए वेरण यासुं नींद्डली । आंकडी । १ । नींद लेवान प्राणी कुमत बूलावे । थाने भर भर प्याला पावे । मो. नी. २ । करम कथा के डीग नहीं जावे । माने भणतां गुणतां सतावे । मो. नी. ३ । राग रंग में दूरी दूरी जावे । मारा भजनामे भंग पडावे । मो. नी. ४ । ग्यान ध्यानमें आलस आवे । जठ झुक झुक झोला खावे । मो. ५ । चोर चुगल भोगी ने रोगी । जठ जाइ २ वीगर बुलाइ । मो. नी. ६ । द्रव निंद्रांसुं द्रव गमावे । वे तोइण भव में पिसतावे । मो. नी. ७ । भाव निंद्रामें जे नर सुता । थे तो खराये विगूता । मो. ८ । कहत जडाव यातो वोत टगारी । थे तो राखीज्यो हुसीयारी । मो. नी. ६ । अव थांसु निंद्रा कोल्ल करुं । थू तो मारे नेडी २ मती आजे । मो १० । समत १६ सें वरस एकावन । जयपुर सेखे वालो । मो. नी. ११ । नींद निवार सुणो भव प्राणी । भांगरी राग रस लो । मो नी. १२ ।

## ढाल

चेतन चेतोरे चे. । दस वोल जगतमें मुसकल मीलीयारे काया न्यारीरे । का. किम चेतन काया कीनी प्यारीरे । का.

आंकडी । १ निस दिन तु इणके संग भीनो । पूंजी खोइ सारीरे । गइ गइ अब राख रइ । सुण सीख हमारीरे । का. २ । सुमत सखी कर जोड़ कहत है । करमासु एक तारीरे । सुगत म्हलरी स्हल बताउं छे, सुख भारीरे । का. ३ । रात दिवस कुमती घर बेठो । खेले पासा सारीरे । भरा वजारा धाडो पाडयो । कुमत ठगारीरे । का. ४ । इण कायामु ममता करने । डुब्या बहु नर नारीरे । जडाव कहे तप जप करो । सिव रमणी त्यारीरे । का. ५

## ढाल

राग । मोत्यांरो गजरो भूली । कर जोडी सीस नमाउं । नीत गोत मजीरा गुण गाउं । अगनभूती जिन दूता । नीत उठ करो ज्या पूजा । सुण भव प्राणी । गणघर वंद गुणधारी । आकडी । १ । वाय मुनी सुखदाइ । ए तीनुइ सगा भाइ । वीगट मुनीसरनदो । भव भवना पाप निकंदो । सु. २ । सुधर्मा धर्मना दाता । मंडी मोगी जगविगता । अक पीताजी मारा भवसागर तारणहारा । सु. ३ । अचल २ सुख पाया । मेतारज सुगत सीधाया । प्रभाव प्रभवस इगीया । ज्यारा आतम कारज सरीया । सु. ४ । सगलाइ सुगत सीधाया । नित प्रणमु ज्यारा पाया । एकादस सुख वासो । जेपुरमे होनी चोमासो । सु. ५ । वारस सुध परमांयो । जडावजी सीस नमायो । मैं छुं दास तुमारो । सुण लीज्यो अरज हमारी सु. ६ ।

# लावणी लीखंते

चाल गोपीचंदरा ख्यालरी । पखवाडो ली. एकम जीव तुं एकलो सरे । बांधे कर्म कठोर । परभो चिंता वावरोस । थाने माणस कहू कठोर । अशुभ उदे जव आवसी । तुं कांइ करेला जोर । जीव थारो अफल जनमारो जावसो पाछो नहीं आवसी । कुछ सुक्रत कर ले सफल दीयाडो लेखे लागसी । आं० २ । बीज कहे सुण बापडासरे । बेठो किम नीरधार । अवसर बीत्यो जात हे सरे । चेते क्युं नी गीवार । बंधी मूठी आवीयो सरे । जासी हाथ पसार । जी० ३ । तीज कहे तूं त्रिजा प्राणी । बेठ धर्म की जाज । ग्यान दरसण चारीत्र पाठीया खेवे गुरु माराज । भवजल पार उतार सीस । थाने मीले मुगलको राज । जी० ४ । चोथ कहे चारुं गत मांए । रुल्यो अनंती वार । पुन संजोगे पामीयो सरे । मानवरो अवतार । दान सील तप भावनास । कोइ लावो लीज्यो लार । जी० ५ । पांचम कहे सुण प्राणीयासरे । पंच म्हाव्रत धार । पंच इंद्रीने वस करोसरे । पंच प्रमाद निवार । पंच प्रमेस्टी देवनोसरे । ध्यान धरो सुखकार । जी० ६ । छट कहे छकायने सरे । राखो आण समान । पुत्र सरीखी ओपमासरे दीनी श्री बृद्धमान । छ परवी पाप करोस । केइ देवो सुपात्र दान । जी० ७ । सातम कहे सत राखज्यो सरे । सत छोड़े पत जाय । सतसु रीजे देवता सरे सतसू रीजे राय । सतसुं गुरुजी राजी हुवे सरे । सत मुगत ले जाए । जी० ८ । आठम आतम वसकरेसरे । धोवो मिथ्या मेल । आठ मद अलगा करो

सरे । ग्यान गरीनी फेल । आठ कर्म खपायने सरे । करो मुगतकी सहल । जी० ९ । नम कहे नव बोलनो सरे । निपुन करो निरधार । जाणपणे समगत लहसरे । जाय अज्ञान अंधार । तप संजम सफला हुनसरे । समगतरी बलीयार । जी० १० । दसम कहे दुसमण तजोसरे भजो प्रमेस्टी पंच । या समरा पातक जरे सरे । रहन कुमणा रंच । ध्यान धरो एक चीतसुं कह तजो सरव प्रपंच । जी० ११ । इग्यारस रस पी जीएसरे । जीनवाणी अवधार । अंग इग्यारेइ भलासरे । बारे उपंग वीचार । मूल छेदमाए कीयो सरे । वाणीरो निस्तार । जी० १२ । बारस कहे तूं बावलो सरे । जूतो घरके भार । कर्म करे तूं एकलो सरे । खानणमें सन त्यार । सहे नरक में एकलोसरे । जमदूतकी मार । जी० १३ । तेरस कहे तुं तत्पर होजा । आगे नहीं अनसाण । काल मीराण आवीयोसरे । खेंचे तीर कनाण । तक तक मारे जीननेमरे । पलक पलक मे बाण । जी० १४ । चवदस कहे चेते नहीं सरे भूल्यो फिरे गीवार । च्यार दीनाकी चानणीसरे । सेनट घोर अंधार । ग्यान दीपक घटमे नहीं सरे । डुबो कालीधार । जी० १५ । पुनम पख पूरो हुनो सरे । करता छुटी जोड । गड गड सो जाणदो सरे । अनही ढोडो ढोड । पुनम प्रमाण लीला वज्योसरे । पावो आछी ठोर । जी० १६ । पाप धर्म दिन सारखसरे वीत्यो जावे काल । जोग मील्यो दम बोलनोसरे । कीज्यो [illegible] नीचार । पापी पच पचने मुवासरे । धर्मी हुवा निहाल । जी० १७ । १९ सें वरस वानसरे । जेपुर सेखे काल । जोड कर जड़ाव

जीसरे। पखवाडारी ढाल। वइसाख मइनो किसन पखमें सातम मंगलवार। जी० १८।

## राग पणियारिकी

श्री मंधीर जिन सायबा। जिनवरजि हो। अरज करूं कर जोड। जिनवरजि। आंकडी। १। सेवक जाणी आपरो। जि० पूरो हमारी कोड। २। खेत्र विदेह विराजिया। जि० आडा समद अथाग। जि० ३। विखमी मारग छे गणो। जि० नहीं आवणारो थाग। जि० ४। विध्याधर मित्री नही। जिन ल्यावे आप हजूर। जि० ५। मानीज्यो मारी वनणा। जि० पोह उगंते सुर। जि० ६। दुखमी आरो पंचवो। जि० लीयो भरतमें वास। जि० ७। ओर कछु मागू नहीं। जि० राखो तुमारी दास। जि० ८। आपो आपरा दासरी। जि० सव कोइ पूरे आस। जि० ६। हुं सरणो लीयो आपरो। जि० करस्यो केम नीरास। जि. १० ओगणीसें एकावने। जि० जेपुर होली चोमास। ११। वे कर जोड जडावजि। जि० एम करे अरदास जि० १२।

## चोइसी पद लीं०

राग रामे पधारीयाजी ब्रामणः। रिखव अजित संभव नमू। अभिनण जिनदेव। सुमत पदम सुवासजि। चंदतणी करुं सेव। भवक जिन भावसुं वंदो जिन चोवीस। १। आंकणी। सुवध सीतल श्री हंसजि। वास पुज भगवंत। वीमल अणंत धर्म संतजि। जग वरतायो संत। भ० २। कुंथ अरी मल्ली नाथजि। मुनीसो बरत जिनराय। नमी नेम श्री पार्स वीरने। वंदू सीस नमाय

। भ० ३ । विहरमान गणधर सभी । केवली प्रतक कोड ।
जेपुर मांए जडावजि । वदे वे कर जोड । भ० ४ ।
राग । करहा चाले उतावलो । पगडे आइ गण गोर । रिखब अजित
संभव भलाजि । सुण अभीननण अरदास । सुमत पदमसुपासजि ।
कांइ चंद कीयो प्रकासजी । मारे दील वसीया चोवीसजी । ज्यांरे
चरण नमाउं सीस । आकडी । १ । सुवध सीतल श्री हंसजी ।
कांइ वासपुज जिनराय । वीमल अणत धरम सतजि । काइ संत
करी जगमांए । जि० २ । कुंथ अरी मल्लीनाथजि । कांइ
मुनीसोव्रत सुखकार । नेमीसर रीठनेमजि । ज्याने तारी राजुल
नार । जि० ३ । पार्स २ मारखाजि । लोह फरयां कचन होए ।
ए अधिकाइ आपरीजि वीन फरस्या तारे मोए । जि० ४ । विरधमान
चोवीसवाजि काइ सासणरा सीरदार । सरणे आया ज्याने तारी-
याजी । माने भूल गया किरतार । जि० ५ । अव जाण्या प्रभू
आपनेजि । मे छोडया आल जजाल । सरणो लीनो आपरोजी ।
माने तारो दीन दयाल । जि. ६ । चउदस बावन हुवाजि० काइ
गणधर जिन चोवीस । वदू वे कर जोडने । जी कांइ विहरमान
जिन वीस । जी० ७ । १९ से एकावने जी काइ । जेपुर सेखे
काल । चेत महीनो चपसुजी कांइ । जोडी जडावजी ढाल । जी०
८ । इति सपूर्ण: ।

देसी मन मोयो हो जिनेसर । थे छो मारा नाथ । मैं छां
थारा दास । ए देसी । रिखबदत देवानदा । बीरजीनेसर वदवा
। भवक जीन । वेठारे एक रथ मझार । चाल्यारे एम बजार । श्री

## चाल तेहीज

मत करोरे मर्मकी जारी । लागे पातक भारीरे । म० आंकडी । १ । मर्मसु सरम जाए परकेरी । प्रीत घटे होए वेरीरे । म. २ । छे प्राणी मरीया कुवचना हूइ भसमकी ढेरीरे । म० ३ । कहत जडाव जेपुरके मांइ । मीष्ट वचन सुखकारीरे म० ४ ।

## लावणी लीख्यते

चाल जंत्रजीरी लावणी । स्वारथकी सवइ है दुनीयां । विन स्वारथ नही ढीग जावे । मुतलवकी सव प्रीत सगाइ । विन मुतलव नहीं वतलावे । स्वा० । आंकडी १ । वाप वेटाकी इथर सगाइ कनकरथ राजा जाणी । जनम जातने खोड लगाइ । राज रिध ममता आणी । स्वा० २ । पुत्र पिताकी इथर सगाइ । कूणकने कुमती आइ । सेणक राजाने दीया पीजरो । कोस लीवी सव ठकुराइ । स्वा० ३ । चूलणी राणी ब्रह्म दत वेटाने । वालणरी अग्या दीनो । असराम मातासु विरच्यो । लाज सरम सव खोदीनी । स्वा० ४ । वंधव वंधव भरत वाउवल । वारे वरस जगडो कीनो सुरीकंथा निज प्रीतमने । भोजनमांए विस दीनो । स्वा० ५ । सीसेण सामासु गिरध्यो । एक घाट पांचसें नारी । लाख मेहेलमें वाली एकठी । वीसवासघात करन मारी । स्वा० ६ । वहु सासुरी इथर सगाइ ' सुत्र वीपाकमांए देखो । सासु वहु अंजनासु वदली । आल देइ काडी एको । स्वा० ७ । सुसरो वहु सती सुभद्रा । आलदीयो आणी धेको । वहु सुसरो सागर समुद्रमें । घटको नहीं आणी संको । स्वा० ८ । देवर भोजाइ वलैकवरने

। पदमावती कीयो खुवारो । चेडो कृणकनानो दोएतो । मिनख मार कीयो संगारो । स्वा० ६ । मामो भाणजो राय उदाइ । केमी छल करने मारयो । काको भतीजो श्रीपालने । राज भीसट कर नीकाल्यो । स्वा० १० । इत्यादिक में कहु कठा लग । विन स्वारथ सगपण तोडे । उंच नीच केइ मुतलन कारण वीन मगपण ममत जोडे । स्वा. ११ । संतानीक राजा सांइसु जगडो । करदीनाण राजा हारयो । ठाकुर चाकुरसुग्रीनादिक । फूट करी रावण मारयो । स्वा. १२ । सोकरेवती छल कर मारी । बारेइ एकण साथो । रुपदेव मींत्रीसर छलकर । वामदेवनी करी घातो । स्वा. १३ । १६ सें पचानन वरसे । जेपुर मे सेखे कालो । केइ गरंथकी साख देइने । जडाव एह जोडी ढालो । स्वा. १४ ।

## अवनीतकी लावणी लीखंते

चाल गोपीचंदका ख्यालरी । काल दुकाले आवीयासरे । पेट भराइ काज । भेख पहर भारी पडयांमरे । जाणे पायो राज । ग्यान ध्यान री खप नही मरे वण वेठा म्हाराजरे । अवनीत गरुना केरा काडेरे मूर्ख जीनग । आंकणी । १ मीखदीया सामा हुवेसरे । सुसावे जीम साढ । गुरुदेवमुं मरे । वके उगाडा भांड । जैसे कीडानीकासरे । कैसे चासे खाडरे । अव. २ । लोड वडाइ काण कायदो । राखे नहीं अयाण । वतलाया वाका वदेसरे । थें क्युं मूडयां जाण । पडलातो समभ्का नहीं । अव क्युं करो खेंचा ताणजी । अव ३ । गुरु वोले वछ जावो गोचरी । ल्यावो भात ने पाण । मूडा वडाने रोगी गिलानी । तपमी छोडा जाणने ।

ओखद बेखद सुजतो सरे । वेगी देवो आणजी । अव० ४ । थे तो बेठा हुकम चलावो । माने राख्यां दास । इण भवमें दुख दीसतारे । कसी मुगतरी आस । खासी सोइ ल्यावसी मरे । मेंतो करस्यां वासजी अव० ५ । हीवडा तालो जडीयो होसी । वगत अदूरी थाय । दिन आयो नही पेरसी सरे । काले सुता खाय । वीना वगतरी गोचरी । समेल्यावा कठासुजाएजी । अव ६ । श्रावक थारा सुमडा सरे । वाता में विलमाय । वायां तो वोले नही सरे । जीमे आडो जुडाय । मूंडा देखी तीलक करे सरे । छती वस्त नट जायजी । अव० ७ । श्रावग भगता आपरा सरे । जोवे थांरी वाट । थे तो बैठा वात वणावो । मे गोकां सुत्र पाठ । थे कइ वेठा बद जास्योस । भारचां मारो पाटजि । अव० ८ । दोरो सोरो जावे गोचरी । मन भावे ज्युं लाय । सरस दाबनीचे धरे सरेस निरस उघाडे आय । कपटी कपट गुरांसुं करने मन गमती मील खायजी । अव ९ । अणगमतो आगे धरे सरे । गमतो देवे छिपाय । जाणे देसी ओरने सरे । अथवा आपलीराय । वीनेवंत वाजे लोक में सरे मरने दुरगत जाएजी । अव १० । अच्छो भावे आपने सरे । मांरो ल्यायो न आवे दाय । मीलसी जैस्यो ल्यावस्यांस । कांइ धरणा बेठा जाय । ज्यो भावतो खाय ल्यो सरे । नहीतर ल्यावो जायजि । अव० ११ । गुरु जाणीने करां वंदगी । थे नहीं देवो जस । ग्यान ध्यान आणो रयोस । वल नहीं जीभमें रस । नास कठी जावा अगाडी । पडीया थांरे वसजी । अव० १२ । जावां तो जावण नही देवो । थे कइ खरच्यां दाम । बेठा बेठा वात वणावो । मांसु करावो काम । भायांन भेला

करल्यास्यूं । विगड जावली मांमजी। अव-१३ । ग्रसतीसुं प्रच्यो गणो सरे । चूक दीवी मरजाद । रोल मसकरी । वातां विगतां । करे ग्यान कुण याद । भारी कर्मा मेला हुइने । उपजावे असमाद जी । १४ । रागीश्रोगुणने गणसरे । सीख न देवे ताण । पख करे अवनीतनो सरे । होरया जाण अजाण । डर नहीं गुरुदेव नीसरे । किणरी राखे काणजी । १५ । कुसिख पाचसें वरक आचारज । छोड हुवा एकंत । सगलाइ हुवा सारखा सरे । नही एकमें तंत । वस राखे निज आतमा सरे । सोइ साध महंतजी । अव० १६ । छात फटीने कारी लागे । फाट गयो असमान । एक टले तो संका आवे । विगडयो सघलोइ थाण । किण २ ने ओलंवा देवे । कूवे पड गइ भांगजी । अवछंदारी नहीं आवरु । दोन्यू भव दुखदाय । ठास ठाम सुत्रमें चाल्यो । वांचो चित लगाय । आंक फरक वातां विगतासुं । भोलाने भरमायजी । अ० १८ । आप अकेला कइ कर लेस्यो । मारे गणारी पूठ । सारे नहींछा थाप रेस । में कालेइ जास्यां उठ । जाणे रामदेवका कावा । माडी चांटा चुंटजी । अव० १९ । सगला मारी करे चंदगी । थांने लागा जहर । त्यारो जोली पात्रासरे । मारा पाना देदो हेर । न्यारी करस्यां गोचरीस । कोइ नही छे थांरो स्हरजी । अव० २० । सीखावण इणमें हीतकारी । वांचो आण विवेक । विनेवंत हीरदामें धरज्यो । सुत्र मांए देख । अवनीताने नहीं सुवावे । सुण सुण करसी धेखजि । अ० २१ । अवछंदांसु जीतसके नहीं । मूनकरी भगवंत । जमाली घोसालो देखो । मत चलायो पंथ । धणीया वेठा धाडो पाडयो । रुलसी काल अनंतजी । २२ ।

१६ सें साठो सुखदाइ । जेपुरमांए जडाव । वीती जेसी जोड सुणाइ । नहीं धेपरा भाव । आयो वेतो मिछामी दुकडं । ग्यानी आगै न्यांवजी । अ० २३ ।

## श्री मंधिरजीरो स्तवन

देसी मोए अपनी कर राखो । मोए चरणामें राखो । में सरण लीयो छे थांकोजी । मो० आंकडी । १ । पुदगलको रस पाको । मैं जनम मरण कर थाकोजी । मो. २ । प्रभू श्रीमंधीर श्रीस्वामी । मोए तारो अंतर जामीजी । मो. ३ । लख चोरासी फिर आयो । जठे जैन धर्म नहीं पायोजी । मो. ४ दुलभ नरभव पायो । मैं तप कर तन नही तायोजी । मो० ५ । पुन खजानो ल्यायो । सब एले साथ गमायोजी । मो. ६ । कुमतीकी संगत भेली । आलसमें आतम गालीजी । मो० ७ । मायामें ममता फेली । चारुं गत चोपड खेलीजी । मो० ८ । प्रभू थे मुगत्यांरा गामी । मैं निठ २ समगत पामीजी । मो० ९ । मारो कुमत न छोडे केडो । थे अब तो न्याव निवेडोजी । मो. १० । प्रभू ज्यो मोए राखो नेडो । भवदु खरो पाउं छेडोजी । मो. ११ । प्रभू आप वडा उपगारी । करणीमें कसर हमारीज़ी । मो. १२ । प्रभू कर्मनकी गत न्यारी । कोइ लख न सके नर नारीजी । मो. १३ । प्रभू अब के ओसर आयो । मैं धर्म तुमारो पायोजी । मो. १४ । प्रभू ममता में मुरजायो । मैं फिर २ ने पिसतायोजी । मो. १५ । प्रभूरीजसरुभरपाइ । करमनकी कथा सुणाइजी । मो. १६ । प्रभू

१६ सें वरसें साठे। हुया धर्म ध्यानरा ठाठेजी। मो. १७। आसोज मास वद आठे। में वरसे सरणाठेजी मो. १८। जडाव जेपुरके मांइ। करमनकी कथा सुणाइजी। मो. १६।

## कका वतीसी लीख्यंते

जडावजी महाराज कृत। दोहा। अरिहंत सिध समरु सदा। सरसती लागूं पाय। वरण वतीसी में करूं। स्हानिध कीज्यो मांय। १। कका करणी कीजीए। कर वरसावो दान। समत राखीने रहे। होजा करण समान। २। खखा खिजमत कीजीए। गरुदेवनकी खूब। जवइतिरणो होयगो। नहींतर जासी डुव। ३। गगा गरव न कीजीए। सुत सम्पतकुं देख। जोवो कीसन मुरारजी। रया एकका एक। ४। घघा घेरो कर्मको। लागो तेरी लार लख चोरासी जुणमें घूमत फीरे गिवार। ५। चचा चर्चा कीजीए। ग्यानी गुरके पास। घटमें कर दे चानणो। होय भरमरो नास। ६। छछा छेय न लीजीए। होजा जाण अजाण। करणी जासी आपरी। मत कर खेंचाताण। ७। जजा जीवन जात हे। जेम नदीको पूर। पोट धरी सिर पापरी। भूंभारी घर दूर। ८। झझा झटपट चेत जा। म्हो निद्रां मत लेए। चोड दोडे चोरटा। चोकी सतगुरु देंए। ६। ञञा नरभव पायने। भज्यो नहीं किरतार। च्यार कीनाकी चानणी। सेवट घोर अंधार। १०। टटा टाटी धर्मकी देले अपणी पूंठ। करम किराणो वेचने। लावो लेलो लूट। ११। ठठा ठाली होयने। जासी भ्रभव मांए। कांइ खासी वापडा। खरची लीनी नांय। १२। डडा

डरजा पापसु । सुखीयो होसी सेण । हंस्यारा फल पाडवा । रोसी भर भर नेण । १३ । ढढा ढील करो मती । दान दयाके मांए । काल अचाणक आवसी । पछे गणो पिसताए । १४ । णणा नीरणो कीजीए । देव गुरुने धर्म । सरदा राखो नरमली । छोडो मिथ्या भरम । १५ । तता तिरणो दोयलो । विन सतगुरुकी संग । तिरसी सोइ तारसी । देदे अपणो रंग । १६ । थथा थिर कर आतमा । ग्यान गरीवी जेल । थोडा दीनकी जाजली । पछे मुगतकी स्हल । १७ । ददा देणो दोयलो । साध सुपात्र दान । लाखा खरचे लाजमें । राखे आपणो मान । १८ । धधा धनसु भरी । तरसे निरधन लोए । पावे सो खावे नहीं । एह अछंवा मोए । १९ । नना नाकारो कीयां । कीरत फेले नांय । भूंजी वाजे लोकमें । पूंजी प्रले जाए । २० । पपा पांचू वस करो । चुगल चोरटा जाण । ठग ठग खावे ठीक विन । चतुर करो पिछाण । २१ फफा फिर २ आवीयो । लख चोरासीमांए । फिर नहीं फीरणा लालजी । जैसो करो उपाव । २२ । ववा वणजा वावलो । होजा जाण अजाण । आरंभ कारज पूछतां । मत वण आगीवाण । २३ । भभा भारी होत हे । आतम आलसमांए । किण विधा तिरसी जीवडा । भव दधी भरयो अथाय । २४ । ममा मान वडाइ छोडने । सवहीसु हित राख । दुसमन अपनी आतमा । ममता रसने चाख । २५ । या लायो या ल्यावस्यु । या मारी घरनार । याया करतो मर गयो । खडो रयो परवार । २६ । ररा राजी होयने । आरंभ कीया अनेक । वदले देतां दोयलो । म्यांदपूगा फल देख । २७ । लला लाज न

राखीए । दान दयाके मांए । नफो लेता जस घणो । दोन्यूं भव सुखदाय । २८ । बव्वा विनकुं कीजीए । राखे सबकी लाज परका प्राण उबारके । आपणा सारे काज । २९ । ससा समपत पाएने । खाइ खरची नांय । लारे पिण नें ले चल्यो । घर गये धरती मांय । ३० । षषा खायो खरचीयो । दीयो नहीं दो हाथ दीयो घरमें चानणो । दीयो चाले साथ । ३१ । स्हा सफेद कर्मकी । करता और न कोय । दोस न दीजे रामकुं । वांक आपणो जोए । ३२ । हाहा इण संसारमें । जनम मरण की जोड । जाउं पिण आउं नहीं । एगी चाउं टोड । ३३ । १९ से अठावने । फटलामांए पडाव । ककावतीसी करी । जेपुरमांए जडाव । ३४ ।

## पुजजी म्हाराजरा गुण लिख्यते

देसी पंथीडारी छे । मूरत हो मोवन गारी पूजनीरे । जाणे पुनमचंदरे । भवि जीन हो भविक चकोर निहारनेरे । पामे परम आणदरे । मूर्त । १ । आंकणी । जंबूरे जंबू दीपरा भरतमेंरे । मरु धर देस मझाररे । सोवन हो सोवन थली सुंवावणीरे । उंडा नीर अपार रे । मू. २ । स्हर जरे स्हर फलोदी दीपतो रे । हिंदवाणी तप तेजरे । श्रावक हो २ लोक वसे तिहारे । देव गुरांसुं हेजरे । मू० ३ । ओमजरे ओम वंसमें सोमतारे । पुंगलीयां वड जातरे । रंभारे २ जी उर उपन्यारे । प्रतापचंदजी तातरे । मू. ४ । तण कुल हो २ मांहे जनमीयारे । सुभ वेला सुभ वाररे । उज्वल हो २ बहु विद साचव्यो रे । हरख्यो नो परवाररे । मू. ५ । वंधव

हो २ च्यारसे हो धरु रे । वेन एक माल रे जनम्यां हो जनम्यां पांचू अनुक्रमेरे । मात तात कीयो क्षालरे । मू० ६ । आया हो २ पाली स्हरमेंरे । वहन पटंगो जाणरे । करवा हो २ पेट अजीवकारे । च्यारु चक्रसु जाणरे । मू. ७ । मीलीया हो पूज कजोडी-मलजीरे । पूरव पुन पसायरे । वंधवहो दोन्यू ए ममतो करीरे । दीनो जग छिटकायरे । मू. ८ । गरु मुखरे गरुवीने अराधेनेरे । भणीया ग्यान रसालरे । पछेरे विरोह पड्यो लगु भिरातनोरे । पडो कसाइ कालरे । मू. ९ । थाणे हो २ पूज वीराजीयारे । अजिया पुर सुभ ठामरे । तप जप हो २ करी सलेखणारे । पुज पधारया धामरे । मू. १० । पाटज हो पाट विराज्या पूजनेरे । वड वंधव विनेचंदरे । लायकरे नायक चारु सिव नारे तोडे कर्मना फंदरे । मू० ११ । समतरे १९ से पंचावनेरे । जेपुर सेखे कालरे । दीज्यो हो दीज्यो द्रस जडावनेर । कर किरपा किरपालरे । मू० । १२ ।

## ढाल

गजरारा गीतरी छे । जी घणा कालसु वीचारतां । भला पदारयां आप । मनवंछीत पासा ढल्या । पूज तणे प्रताप । म्हाराजा थांरी वाणी प्यारीजी । समज पडे सब न्यारी न्यारी न्यारी । माने लागे प्यारीजी । आंकडी । १ । जी संग सरव सेवा करे । धर्म ध्यानरा ठाठ । च्यारु जोड़े दीपता । पूज वीराजे पाट । म्हा० । २ । जी स्वमत परमत धारणा । भिन २ करो वखाण । रागद्वेष नही उपजे । छो अवसरका जाण । म्हाराजा थारी । ३ । जी हीए वीराजे सरसती । सुसर कंठ सुपियार । सुण फुले पुरखदा

वरसे इमरत धार । ४ । जी इतनी मानो वीनती । कनीरामजीरा सिस । होली चोमासो कीजीए । जेपुर बिसवा वीस । मा० ५ । जी घणा परीसा देखने । दरसण दीया दीयाल । मारवाडमें मन वस्यो । परालब्धरो ख्याल । महा. ६ । जी तपस्यां करवा आपरे । चाया थइ उजमाल । अर्ज करे जडावजी । मानो दीन दयाल । म्हा० ७ ।

## चवदा नेमरी ढाल लीख्यते

चवदा नेमें चीतारो । आंकडी । प्रथम सचीत तणी मरजादा । भिन २ कीज्यो वीच्यारो । द्रव्यादिक तिणमांए । अनंता । खावण पीवणरो परीहारोरे । प्राणी । चवदा० । १ । पांच वीगे रोजाना नेलीजे । कोइ एक टालो कीजे । पनी पावडी मोजा वगेरे । गिण-तिसु धारीजेरे प्राणी . । च. २ । मूछल जात तम्बोल पांचवे । निणरी करो मरजादे । छटे कुसम सुगंधरी गीणती । कीजे मती प्रमांदरे । प्राणी. । च. । ३ । वहण गाडी नाव असवारी । दिन प्रते गिण लीजे । महण सेजा मुडां कुरसी । रोजीना संख्या कीजेरे । प्राणी. । चवदा. । ४ । वस्त्र वेसमे पांनुइ कपडा । कीमत वरण वीचारो । गिणती कर मरजादा बांदो । वे गनिरो संसारोरे । प्राणी. । ५ । वल्लेपणमें कांजल केसर । टीकी आरिसे निहालो । मरदन पीडी चन्नणमादी । आवण फुलारी मालोरे । प्राणी० च. ६ । बंभ इग्यारमें सील पालीजे । दिग मरजादा कीजे । चवदेइ राजरी इवरन रोको । नरभव सफल करीजेरे प्राणी । च. ७ । नावण धोवण ढेग मरयदां । त्यागो

गिणजी आणी । ते श्रावग भव सागर तिरसी आण ज्यूं जाणे पाणीरे । आणीरे । आणी. । च० ८ । आत पाणी मरजादा तो लीने । समवेइ पेट प्रमाणे । उतम करसी नेम चीतारी । ते धर्मरो मर्म पीछाणोरे । आणी. । च. ९ । १९ सें जडाव जेपुरमें सावण वद बावने । दिन दस मीने जोड सुणाइ । नेम चितारे सोःधने रे । आणी. च. १० ।

## श्री म्हावीरस्वामी को सिलो लीखंते

चाल शिलोकारी । अरिहंत सिद्धारे पाए नित लागु । गुरु ग्यानी पासे बीघाजी मागूं । महावीरस्वामीरो कहस्यूं शीलोको । एकण चित करने सुणज्यो सव लोको । २ । मरीछे भवमें तपस्यां कर भारी । थावे श्रादेसर हुंडी सीकारी । ३ । था सिरखो होसी छेलो अवतारी । इतनी सुण मनमें फूल्यो अपारी । ४ । मारो कुल मोटो बोले अहंकारी ; फालदे कूदयो उंचो कुलहारी । ५ । कर्म नीकाचित बांध्यां तिणवारी । तेनो फल कहस्यूं सुणज्यो अगाडी । ६ । कालंत्र तिहा समकित पाइ । गिणती मेली ना भवसताई । ७ । थानक वीसुं इ पहले भवमांइ । सेव्या तिर्थंकर गोते उपाइ । ८ । दसमा सुरगमें उपना जाइ । वीसे सागरनी पूरण तिथपाइ । ९ । सुर सुख विलसी चविया जिनराय । मान प्रभावे मागण कुल आया । १० । देवानंदारी कूखे उपना । मातजी देख्यां चवदे सुपना । ११ । वेठा सभामें सुरपत वीच्यारे । कठ प्रभूजी लीनो अवतार १२ । अवदे प्रजूंजी इयाफोदीनो । नीसचे करीने सांसो मन कीनो । १३ । त्रीभूवन स्वामी तीरथे नाथो ।

बामण कुल आया इचरज बातो । १४ । उपजे कदापी जनम न थावे । देव सकतीसु सारन करावे । १५ । हीरणगमेपी ले कर आयो । बदलो काडीने सुखसाता पायो १६ । खत्रीकुंड सिवारथ राया । राणी तिसलारे कुंखां पदार्या । १७ । हाथ जोडीने सीस नमायो । सारो फेरो कर सुरग सिधायो । १८ । देवानंदा मन आरत आवे । सुपना हमारा कूण ले जावे । १६ । माता तिसलारो भाग सवायो । विन माग्यो पुत्र से जाइ आयो । २० । म्हल जरोकामोत्यांरी जाली । लटके लूंमाने सेजे सुंवाली । २१ । पोढ्यां तिसला दे ढलती सीरेंणी । थोडीसी निंद्रा जागे मिरग नैंणी । २२ । चव देइ सुपना उत्तम देखे । जव कैसो जागी हरक विसेखे । २३ । याद करीने हीरदामें धारे । देव गुरुने धरम चीतारे । २४ । उठ्यां सेजाथी धीमा पग ढाले । गज गती चाले जाणे मराले । २५ । घणी उमाइ पिव पासे आइ । पोढ्यां जाणीने पगाथे जाइ । २६ । जिणेसर प्रभाती राग सुणावे । निंद्रामे सुता कंथ जगावे । २७ । हाथ जोडीने उंबी निज मिंद्र । पूछे महाराजा किम आइ सुंद्र । २८ । बेठो सिंघासण बीसरामो खावो । खेद टालीने काज फुरमावो । २६ । आद्र पामी निज आसण बेठो । विनो करीने बोले मुख मीठो । ३० । इचरनकारी सुपना मैं दीठा । सुणतां स्वामीजी लागे अत मीठा । ३१ । बोले म्हाराजा विध सेती भाखो । सरवे सुणावो संका मत राखो । ३२ । मलकंतो मंगल अम्बाडीमांते । दूजो विरखबनेसिंव भाख्यां ते । ३३ । चोथे लिछमीजी भांक ज माला । पांचे वरणरी पुसपारी माला । ३४ । छट्टे उगंतो ससि हर होवे । सैस किरणसुं सुरज सोवे

। ३५ । आठमें धजा आकासां लेखे ।.नवे संपूरण कलसे त्रिसेखे । ३६ । पदम सीरोवर कवला कर छायो । खीरे समुद्र हीलो-ला खायो । ३७ । देव वीमाण देवा वीराजे । रतनारी रास तेरमी छाजे । ३८ । निरधु अगनी चवदमें देखे । जल हरती जाला चिउदीस लेखे । ३९ । इणविद स्यामीजी सुपना मैं पाया । हरखीने बोल्या सिधारथ राया । ४० । तिरथंकर के चकरीसर नाणी । कूखमें आयो उत्तम प्राणी । ४१ । तहत करीने सीस चढावे । सीख केइने निज मिंद्र जावे । ४२ । उगंते सुरज सिधारथ राया । मंजण करीने सभामें आया । ४३ । इग्याकारीनें हुकम दीरावे । आठे भद्रासण आगे रचावे । ४४ । पसवाड़े एक प्रेचे खंचावे । नमो राणीरो आसण बीछावे । ४५ । मरजादा सेती महाराणी आवे । श्रीफल सुपारी हाथामें लावे । ४६ । हल वेगा जावो पिंडत तेडावो । चवदे सुपनारो अर्थ करावो । ४७ । हुकम पाइने नगरीमें जावे । सुपना पाट कनें ततखिण ल्यावे । ४८ । नीरखी हरखीने राय वदावे । आद्र करीने आगे बेठावे । ४९ । अणुक्रमें सुपना सरवे सुणावे । सास्त्री देखीने अरथे करावे । ५० । त्रिलोकीनाथो तिलक सरीखो । आय उपन्यो म्हाराणी खूंखो । ५१ । दोय कुल तारक सूरज सामानो । अन धन लीछमीसुं भरसी खजानो । ५२ । भरत खेत्रमें उदयोते करसी मंजम लेइने सिवरमणी वरसी । ५३ । सला करीने बोले छ जोसी । उत्तम सुपनारो चो फल होसी । ५४ । राजा राणी सुण माणद पाया । दान देइने घरे पूछाया । ५५ । श्रीफल सुपारी पानांका बीडा । बांटे सभामें करता बहु कीडा । ५६ । जीमणकं

वेल्यां भोजन कीना। लौंग सुपारी मूछ्ण लीना। ५७। नित नवला पहरे वस्त्र भूषण। गरभ प्रतीपाले टाले सव दूषण। ५८। पुनय प्रभावे उपजे सुभ डोला। पूरे म्हाराजा करती रंगरोला। ५९। ग्याने प्रभावे गरभ आलोचे। वीनो करीने अंग संकोचे। ६०। माता दुख पावे करती वीचारो। हाले न चाले गरभ हमारो। ६१। राजा राणीजी झुरंता वेहू। जीवे जठालग संजम नहीं लेउं। ६२। मिल २ करती आंसुडा नाखे। पग फुरकायो हरख विसेषे। ६३। वांटे भदाइ हुवो आणंदो। दिन २ वाधे जीम दूजनो चंदो। ६४। चैते सुदीने आदीसी रातो। तेरसने जनम्या श्री जगनाथो। ६५। छपन कुंवारी मंगल गावे। चोसट इंद्र मिल मेरु पर ल्यावे। ६६। तीरथ मेलीने पाणी मगावे। भर भर कलसा उपर पदरावे। ६७। इंद्र सगलाइ अणुकंप ल्यावे। वालक वय प्रभूजी असाता पावे। ६८। तिण वेल ततखिण परच्यो दीखावे। चटी चांपीने मेरु कंपावे। ६८। ग्यान प्रभूभी सुरपत वीचारी। जाणी प्रभूजी सकती तूमारी। ७०। अनंत वलीने सांसण धीरो। सक इंद्र नाम दीयो म्हावीरो। ७१। उछव करीने निज मिंद्र ल्यावे। सुंपी मातने सीस नमावे। ७२। देवी देवा मिल दिव लोक जावे। विचमें अठाइ उछव करावे। ७३। दिन उगे दासी दौडीने आइ। पुत्र जनम्यांरी दीनी वधाइ। ७४। सोनारी झारीसु माथो नवावे। दासीपणाने दूरे करावे। ७५। मुकट वरजीने आवण सारा। वरसे म्हाराजा कंचन धारा। ७६। पुत्र जनमारे हरक करावे। चंद्रमा देखी आनन्द खुलावे। ७७। छटे दिन उगा सूरज पूजावे। दसमे दिन सुतक दूर करावे। ७८।

ग् कलसे त्रिसेखे

भाइ बेटा ने न्याती बूलावे । डसोटण करस्यां द समुद्र हीलो- । बांमण बचकसण कंदोइ ल्यावो । विविध भांतीरारी रास तेरमी । ८० । कुटुंब कबीलो स्हरका सारा । जीमण । जल हरती न्यारा । ८१ । आदर करीने चोकी बीछावे । सोनाशा मैं पाया दीरावे । ८२ । पहली मीठाइ पछे पकवानो । पुरसे चकरीसर दे दे सनमानो । ८३ । लाडु पेंडा ने घेवर ताजा । भीणा सीस ने खांडरा खाजा । ८४ । बरफी कलाकंद मीश्रीरो मावो । पछ दूजाने पहलीयो खावो । ८५ । तइथडा ने जलेबी फीणी । गहरी गलेफी खांडज चीणी । ८६ । पेठा डोठा ने तुंगतीरा दाणा । पुरसें माडेणी भरीया छे भाणा । ८७ । गूंजाइमरती सकरपेरा । कर कर मनवारा पुरसें छे गहरा । ८८ । चदकलाने चूरयो चकचकतो । सगला सरावे जीमण जुगतो । ८८ । मालपुवा ने खीर बणावे मीश्री ने मेवामांए रलावे । ९० । सीरो साबूनी भरभरती लपसी । दूध राबडीयां पीवेला तपसी । ९१ । लुची पूडीने सोटे सुंवाली । छावा ले उबी पुरसणे वाली । ९२ । फीणा बटीया ने पतलीसी पोली । पूरण पोली घिरत जबोली । ९३ । दाल सालने केसरीयां भातो । भिणाज भडीयारो जीमें सब सातो । ९४ । सुतक तोलीझीजीम खाणा । लोइतिल्ली ने कसकसका दाणा । दाख बीजोरा खारक खीजुर । काची गीरीने केला अंजीर । ९६ । कीसमिस चारोली बीदाम पिसता । नुकले पचरंगी खावे सब हसता । ९७ । पूवा बडाने कचोरी ताजी । पापड फलीयासे सब कोइ राजी । ९८ । दाल सेवाने मोगर

वेल्यां भोजन फेज्यां पकोडी सबनेइ भावे। ६६। चीणा चवला ने नवला पहरे वस्त्र। और तरकारयां पुरसे छे केती। १००। पुनय प्रभावे उा खीज्यां खारोडी। पापडकी गोल्यांने तिलवारा। ग्याने प्रभा१०१। घोल वडा ने राइता ल्यावे। ज्यूं २ मीठाइ माता दुख मिटावे। १०२। आवे अथाणो केरीजीपाको। मागे राजा रलाइ पुरसणतो थाको। १०३। खडी चावलने पतली पैलेवो बिल मीठा पर खाटी सब कोइ लेवे। १०४। ओला पतासा मीश्रीरा पाणी। झारी भरल्याए गिंदोदक छाणी। १०५। जीम्यां जूटीने चलुजी कीना। विवद प्रकारना मूळण लीना। १०६। वैन सुवासण भुवाजी आवे। कुडता टोपी ने सांतीया ल्यावे। १०७। गावे मंगल बाजे बाजा। नाम दीरावे सिधारथ राजा। १०८। नालारी जागा प्रगट्यो निदांनो। गुण निप्पन्न नाम दियो विदमानो। १०६। वस्त्र भुषण ने रुपैया रोको। देइ वीदाय सरवे संतोको। ११०। पांचे धायां मिल पाले नानडीयो। पोढे पालणीए गावे हालरीयो। १११। छटे महीने खावो सीखावे। चोटी पटारांकेरा रखावे। ११२। हस खेलने गुडोल्या चाले। थडी करावे आंगलीयां झाले। ११३। कडा मोती नें चांदलीयो छाजे। कंठी दोरा ने हार बीराजे। ११४। कडीयां कंदोरो गुगरीयां घमके। पाए जाजरयां चाले छे ठमके। ११५। जगा टोपीने सुतण सोवे। वैठगाडोले सगलाइ जोवे। ११६। ताती जलेबी मीश्रीने मेवा। दद माखण एं मागेकलेवा। ११७। आडो माडीने रूसणो लेवे। माग मनावे मागे जो देवे। ११८

। चक्री भवराने ख्याल तमासा । देखी मांताजी पूरे मन आसा । ११६ । लाड़े लडावे वैनड सुवा । आठे वरसरा जाभेरा हुवा । १२० । बेला पुल देखी भणवा बैठावे । हुसें करीने जोसीजी आवे । १२१ । चांदीरो पाटो सोनारो बरतो । लिख लिख पाहाडा मुख आगे धरतो । १२२ । खोट जाणीने कोद चढावे । खोसी पाटो ने सामा डरावे । १२३ । ऊंउंकारनो अर्थ करावे । सुणने जोसीडो इचरज पावे । १२४ । याकी बुधीरो पार नै पावे । ऐसी तो विद्या हमने नहीं आवे । १२५ । थर थर धुजंतो उठीने भाग्यो पोथी लेइने मार्ग लाग्यो । १२६ । जोग जाणीने कीनी सगाइ । पुत्र परणायो वहु घर आइ । १२७ । दास दासीने डाइजो ल्याइ । पंचइंद्रिना भोग विलसे सदाइ । १२८ । पीव द्रसण नामें बेटी एक जाइ । परणी जमाली जोग जवांइ । १२८ । मात पीताजी बारे व्रतधारी । लीनो अणसणने दोषण सब टाली । १३० । काले करीने उंची गत पाइ । सुरगे बारमा उपन्यां जाइ । १३१ । उठासु चवसी अनुकरमे दोइ । खेत्र वीदेहमें सिव गत होइ । १३२ । पछे प्रभुजी संजम लेवे । बडा भाइजी आग्यानै देवे । १३३ । मात पितारो पडीयो बीजोगो । तूं कांइ भाइ लेवे छे जोगो । १३४ । धीरज राखीने ठहरोरे भया । वर्स दोए लग निरलेप रैया । १३५ । लोकंतिक देवा तिण वेला आवे । हाथ जोडीने अरजे करावे । १३६ । ओसर आयां संजम लीजे । भरतखेत्रमें उदयोत कीजे । १३७ । इंद्र इंद्रकारी वेसरमण आवे । भरीया भंडारा दाने दीरावे । १३८ । सोला मासारो सोनैयो कीजे । एक कीरोड आठ लाख दान दिन प्रत

दीजे । १३९ । इसडीकोडांरो छमछर दानज दीनो । एकाएकी जिन संजम लीनो । १४० । दिख्या किल्याण उछव करावे । नरनारी पाछा नगरीमें जावे । १४१ । कुटम सहुने पूठज दीनी । देसे अनारज इछाजी कीनी । १४२ । शस्त्र ले सक इंद्र उग्रा ले आगे । कष्ट गणो छे तुरमें सागे । १४३ । हुइ न होवे भगवंत भाखे । कर्म दूजासुं टूटे नहीं लाखे । १४४ । लाड देसमें पादरा आया । जीत्यां परीसा कर्म खपाया । १४५ । बारे छमछर ने साडा खट मासो । छदमस्त रया वर्स ३० घर वासो । १४६ । तपस्या करीने केवल पायो । तीरथ थापीने सांसण वरतायो । १४७ । गोतम आदीने चवदे हजारो । रहस छतीसें साधवयां लारो । १४८ । एक लाखने गुणसट हजारो श्रावक हुवा बार वरत धारो । १४९ । तीन लाखने सहस अठारो । श्रावका हुइ इतनो प्रचारो । १५० । म्हाण कुंडलपुर प्रभुजी आवे । देवा देवी मिल त्रिगडो रचावे । १५१ । सोनारा कोट ने रतनारा छाजा । गाजे अमर ने वाजे छे वाजा । १५२ । आकासे देव-दुंदभी वाजे । देखी पाखंडी दूरासुं लाजे । १५३ । फिटक सिंघासण वीर वीराजे । चवर वीजे ने छत्र छाजे । १५४ । रिखवदत ने देवाजी नंदा । दरसण देखीने हुवा आणंदा । १५५ । फूली काया ने छुटी दूधनी धारा । देखीने पाया इचरज सारा । १५६ । हाथ जोडीने गोतम पूछे । वाइ सु सगपण प्रभुजी सुं छे । १५७ । भगवंत भाखे ए मेरी माता । समणे सुंणीने पाइ सुख साता । १५८ । ऐसा पुत्रनो पडीयो वीजोगो । अब तो

दोन्युंइ लेस्यां में जोगो । १५९ । संजम लेइने करम खपाया । केवल पामीने मुगते सीधाया । १६० । अैसा तो वेटा जनम्यां प्रमाणो । मात पीताने मेल्यां निरवाणो । १६१ । गावां नगर ने अनारज देसो । पावापुरीमें चरमें चोमासो । १६२ । राजा पिरजाने देवीजी देवा । निसदिन सारे प्रभुजीरी सेवा । १६३ । देस अठारांरा राजाजी आवे । चवदस पखीरा पोसाजी ठावे । १६४ । वैठ विमाण सक्र इंद्र आवे । देइ प्रदिखण सीस नमावे । १६५ । इतनी प्रभुजी किरपा करावो । । थोडीसी उमर और बधावो । १६६ । भसम गिरहरो जोर हट जावे । दया धर्मरो उद्योत थावे । ६७ । हुइ नै होवे ए धातां भुटी । टूटी उमर के नहीं लागे बूटी । १६८ । होणा पदारथ निसचेइ होइ । टाल सके नहीं सुरनर कोइ । १६९ । कतीवुद अमावस आदीसी रातो । मुगत पदारयां श्री जगनाथो । १७० । सिंघचारासें हुओ छे सोगो । मोटा पुरसारो पडियो वीजोगो । १७१ । पछे भूरंता गोतमजी आया । मोवणी जीत्यां केवल पाया । १७२ । सुधर्मा स्वामी पाटे वीराजे । तीरथ चारांमें सिंघ ज्यूं गाजे । १७३ । सातसें साधु एक हजारो । च्यारस उपर महा सतीयां लारो । १७४ । करणी करीने कारज सारयां । केवल पामीने मुगते पधारयां । ७५ । वर्स चोसठ लगा केवली रया । पाटोधर तीनू मुगत्यां मगया । ७६ । वरत्यो केइ वस्ते वरतण हारो । सासण चाल्यो वरस एकीस हजारो । ७७ । केइ कथाले सुत्रमें धारी । शिलोको कियो ओछी बुध मारी । ७८ । इधको ओछो ने

अकसर हीणो । लीज्यो सुधारी पंडत अगिणो । १७६ । ग्यानी भाख्यो सो तहत करीजे । झूठारो मिछामी दुकडं दीजे । १८० । भणो गूणो ने सीखो सगलाइ । मूडे जैणा कर वाचीजो भाइ । १८१ । समत १६ स साठरी सालो । सावण वद तेरस जैपुर चरसालो । १८२ । रतन मुनीरी समदाए छाजे । पूज विनेचंदजी पाटे वीराजे । १८३ । वे करजोडी जडावजी वंदे । म्हर राखीजे वीर जीणंदे । १८४ ।

## कलस लीख्यते

महावीरसामी मुगत पामी । दीन जाणी दुख हरो । सिधारथ नंनण । जगत वंदण सिंघमें सानिध करो । प्रभु सेवगने साता करो । १ । मन वचन काया । पद्द पाया । सीसपें दो कर धरी । अरज एती करुं केती । सेवा चाउं आपरी । प्र० । २ संसार सागर । तिरण तारण । विरध ऐसो जाणने । जग त्याग दीनो सरण लीनो । तार करुंणा आणनें । प्र० । ३ । काल आद अनाद रुलीयो । चार गत उजाडमें । नवघाट खोटा खाए सोता । अब आयो बाजारमें । प्र० ४ । प्रपंच पसीयो । कर्म कसीयो । राग धेग बंधण करी । मोए बाध सेठो । जीवदेटो । दुखणरी करणी करी । प्र० ५ । २२ साय मोरी बंध तोडी करम फ्लेसी मारने । देउ जीत डंका । होय निसंका । कदिय न जाउ हारने । प्र० । ६ । ले ग्यान ध्यान । खजान साथे । समकित आगे रावसुं । धर्म जाभ बेठी । धार सेठी । अजर अमर सुख चावसुं । प्र० ७ । दोहा । एह मनोरथ मायरा । पूरो श्री भगवंत ।

बालक हट हाती चढु । नही जाखे घरचंत । १ हुं बालक तुम आगले । हट कर बेठो सु वास । माएत बिरद बीचारने । दीज्यो सुगत सुकास । २ । बिन करणी तिरणो नही । ए झुठी अविलाप । खोटो हीरो बेचतां । कैसे पावे लाख । ३ । सुख दुख करता आतमाने संचे पुनने पाप । तेसाइ फल भोगवे । साखी धर छो आप । ४ । सिध साधिक सीलीया विना । विद्या सिध न कोय । कांइयक प्राक्रम हुं करुं । सो पूठ तुंमारी होय । । मन घोडा तनताजणा । चुप कर लीजे ताण । तीनूंइ बस राखतां । पावे पद निरवाण । जनम जरा मरणो नहीं । अविछल सुख अनंत । क्या जाणुं कद पामस्युं । अखे गुमतरो पंथ । ७ ।

## चोइसी लीख्यते

देसी होली काफीरी छे । रिखव अजीत समभव अभिनंदन । भव जीवनके मन भाया । वंदो नित नित चोइसइ जीनराया । वं० । आंकणी । १ । सुमत पदमसुपासचंद प्रभु । हरक हरक परणमूं पाया । वंदो० २ । सुवध सीतल श्रीहंस वास पुज । सीव रमणीसें चित ल्याया । वंदो ३ । वीमल अणत धर्म संत जीनेसर । संत करी सहु सुख पाया । वं० । कुंथ अरि मल्ली मुनि सो-व्रतजी । जनम मरणासुं कंपाया । वं० ५ । नमीए नेम पारस महावीरजी । सिवपुर मारग दीखलाया । वं० ६ । चोवीसें गुणधार नमूं नित । वहरमान निसदिन ध्याया । वं० ७ । १६ स एकावन जेपुर । फाग रागमें गुण गाया । वं० ८ । बे कर जोड जड्डाव नमे नित । जिन चरण चीत लपटाया । वं० ६ ।

## छंद अडीयल

रिखब अजीत संभव अभिनंदन । सुमत पदम प्रभु । पाप निकंदन । । सुपारसचंद । सुवध सीतल भज । हंस वास पुजे पद पंकज । २ । वीमल अणंत धर्म संत सहायक । कुंथ अरि जीन त्रिभुवन नायक । ३ । मलीनाथ मुनि सोव्रत सामी । नमी नेम पारस सिव गामी । ४ । चोइसमा श्री विरख्यात । सांसण नायक मुगती दाता । ५ । गोतम आद नमुं गुणधारी । वहरमान वीस उपगारी । भाव सहत वंदो नरनारी । ६ । १९ सें ५९ सुख वासो । जेपुरमांए पोस सुद मासो । ७ । तिथ तेरस रवीवार सुणीजे । वेकर जोड जडाव भणीजे । ८ । भणो गुणो सीखो सुखदाइ । ज्यां घर कूमी रहे नहिं कांइ । ९ । कलस । अरिहंत सिध आचार उपाध्यां । साधु सकल गुण मालए । जपू जाप मन वचन काया । त्रिकरण सुध त्रिकाल ए । । नवकार सार संसारमांइ । ओर सरव जंजाल ए । पस्यो जीव मुज भूल निज गुण । जग छेर वाजी ख्यालए । २ ।

## कजोडीमलजी माहाराजरा गुण लीख्यते

राग हरीजीरो रासो भरोसो भारी । पंच परमेसटीरा पद प्रणमुं । गण गिरवा गुण धारी । पूज कजोडीरा गुणरी माला । गुंते गल हारी । पूजजीरो ध्यान धरो नरनारी । आंकडी । पंच महाव्रत निरमल पाले । खट काया सुखकारी । विचरत गांव नगरपुर पाटण । भव जीवां हितकारी । पू० २ । सत्रभेदे संजम पाले । तपस्या कठण करारी । दोप वयालीस टाल भली परल्यो

निरदोसण अहारी । पू० ३ । सम्प्रदाय आठसें जुगत वीराजो । गुण खटतीसें वीचांरी । रतन हमीरेकी गादी दीपावो । आचारज पद भारी । पू० ४ । स्वरसती कंथीराजे आजे । भवियण त्रिदमें जारी । दिन किर्ण परदेइ दीपे । देख देह जाउं वारी । पू० ५ । वाणी सुधारस इमरत धारा । वरसे निरमल वारी । पीतां तपत मीटे भव भवकी । सुण समजे नरनारी । पु० ६ । ससि जीम सीतल वदन तुमारो । भविक चकोर निहारी । सनमुख बोल सके नही कोइ । अतसें आपरी भारी । पू० ७ । सिख सरोवण सारा पूजरा । एक एक इदकारी । विनेचंद जिम सरद पुनमको । मूर्त मोवनगारी । पू० ८ । सिंघ सहुनें साताकारी । जोग मुद्रा ज्यारी भारी । पाटवी चेला पुजरा कहीए । वालपणे विरमचारी । पू० ६ । जसराज जीरो जस अतिभारी । मरुधर देस मझारी । त्यागी बेरागी समतारा सागर । ममता कुमत विदारी । पू० १० । सोभाचंदजीरी सोभा जगतमें । विने तणा भंडारी । अंगचेसदा यषपूजरी । अहोनिस अग्यांकारी । पु० ११ । इदकी म्हर रही सुख सागर । भर पाइरी जवारी । निज कर जाणो कुरणा आणो । में छुंदास तुमारी । पु० १२ । एक जीभ सुं कडुं कठालग । महमा इदक तिहारी । तुम गुण सिंधु मुज बुध विंदू । कहतां न आवे पारी । पू० १३ । सेखे काल वीचरता आया । पीपाड सहर मजांरी । फागण सुद पख होली चोमासी । वारससि सुखकारी । पू० १४ । समत १६ सें वरसें चोत्तीसें । रंभाजी उपगारी । ज्यारे प्रसाद जडाव कहत है । चाउं नित किरपा तुमारी । पु० १५ ।

## लावणी ती

देसी । करम रेख नहीं टले करो कोइ लाखा चतुराइ । साल ६२ की अब आइरे सा. । मत घबराओ धीरज राखो । धर्म करो भाइ । धर्म भव भवमें सुखदायरे । धर्म० चोरासीका फेरा टाले । मुगती कीसाइ । साल० आंकडी । १ । सालका क्या डर है भाइरे । सा० पुन पापका जोडा जगतमें । भुगते सगलाइ । छुटको नहीं होवे कोइरे । भव भवमांए साथे चाले । निज कृत कमाइ । सा० २ । नीत अछी राखो भाइरे । नी० अनित जगतमें बोहत बूरी है । बणी बिगड जाइ । नीत सु रिजक व्होत थाइरे नी० पांचु पंडव राजा हरीचंद गइ संपत पाइ । सा० ३ । पापसें दूर रहो भाइरे । पा० दान सीयल तप भाव । पुनकी खरची सुखदाइ । खाय करमती खोवो यांहीरे । खा० कहत जडाव जेपुर के मांइ । कुछ डर है नांही । सा० ४ ।

## पार्सनाथजी की लावणी

देसी कलाली भर ल्याये प्याला । कासी देस बडो नीको । आस्वसेिण भोमांको कीको । सोभ रयो अवनी सिर टीको । प्यारो प्रांण हमजीको । तुंम माता तुंमही पीता तूं मित्री तूं भिरात । तुं सरणागत सायबा जग तारण जगनाथ । मरणमें सरण आप केरो मर० पास जिन आसरो तेरो । १ । जरा को तीर लग्यो तीखो । भजन नही होय सके नीको । विषम रस पुदगलको पाको । जीवको जोर कीयो भांको । घेरो लागो कर्मको । प्रबल चार कषाय । च्यारु गतरा चोकमें । भूल्यो चेतन राय । चिटे क्रिम चोरासी फेरो । मिटे । पा० २ । राग मोय बाथ लीयो सैंठो । द्वेषको

होएने । पूरो हमारी आस । सु. वे० ३ । आप निरागी हो समता रा सागेरु । मोय ममत दीयो छोड । सु० पिणमुज मनडो होए रयो लालची । तुम सेवारो कोड । सु. वे० ४ । कीनो चोमासो हो चेलारी चायसुं । फिर नही कीनी संभाल । सु० हमतो गरजी हो अरजी कर होस्यां । मानो दीन दयाल । सु. वे. ५ । होड न होवे हो जेपुर स्हरनी । चेला हुया थारे पंचे । सु. मनरी घूंडी खोलो नाथजी । किम लीनो मन खंचे । सु. वे. ६ । भूलचूकने हो अविनय असातना । करीए कराइ कोय । सु. पखीये चमोसी होती जी छमछरी । खमीएमाएत होय । सु. वे. ७ । चंद चकोरां हो मोरा मेहज्युं । त्रस रया मुज नेण । सु. वरसे नीर हो धीरे धरे नहीं । सवण सुणणकुं वेण । सु. वे. ८ । मनरा मनोरथ पूरो नाथजी । दूरो गणो तुम वासे । सु. पग पिण वेरीवो आगा खिसे नहीं । लवद नही मुज पास । सु. वे. ९ । समन १९ सें हो वरस पंचावने । भादरवा वद बीज । सु. जेपुर-मांए हो द्रस जडावने । दीजे कीजे रीज । सु वे १० ।

## ढाल

रे पनजी मूडे बोल । भांग तमांखुं अमलतिजारो । इणको संग निवारोरे खरच अणुंतो कांइ फायदो । हीए वीच्यारोरे । वीसन नीवारोरे । वीस. दुलभ मीनष जमारो यूं मती हारोरे । वी. आंकणी । १ । रंग रुप कइ स्वाद न दीसे । खातां मूडो खारोरे । नही मीले जब कइय न सुजे । करत पूकारोरे । त्रि. २ । माल मीले जब मोज करो । बहु मन भाव ज्यूं खावरे । कसर पड़े जद

नींद न आवे । मन पिछतावेरे । वि. ३ । एक जवानी पैसो पले । तीजे संगत खोटीरे । ऐस करतां विसन लगाया । कांइ अकल फूटीरे । वि. ४ । आछो भावे नहीं कमावे वेठो दंम जगावेरे । सब घरकाने खारो लागे । प्राणी घुररावेरे । वि. ५ । नसा वादरो नहीं कायदो । बोलत २ चुकेरे । जाव कूजातरो भिन नहीं । मरजादा मूकेरे । वि. ६ । इण भवमांये इतना अवगुण । परभव पाप उगाडेरे । विसन विगूंता होय फजीता इम नरनारीरे । वि. ७ । १९ सें एकसट भाद्रवो । पांचम पख उजवालोरे । जेपुर-मांए जडाव जुगतसुं । कहूं हितकारोरे । वि. ८ ।

देसी । फाटकारीया तेरा काटी. जी वालपणो हसखेल गमायो । जोवन त्रिया वसको, बूढापामें जरा सतावे । खातां पीता टसकोरे । बुडापा वैरी किण विद थासी थांसुं छूटको । बू. १ । आंकडी । जी जोत भइ नेणाकी मंदी । दांत पडया सब ढीला । नाक झरे सुणवामे घाटो । केस भया सब पीलारे । बू. २ । जी घोडां हाथ देइने उठे । कमर करडी कीनी । डांग पकडने डिगतो चाले । सुद वुदने खो दीनीरे । बू. ३ । जी वहुवा छोडयो कांण कायदो । कद मरसी तूं डाकी । खाय सका नहीं पहर सका नहीं । हीडा कर कर थाकारे । बू. ४ । जी बोलातो बोलण नहीं देवे । सीख न माने घरका । साठी वुद नाठी कहसरे पडयो रदनी झरखारे । बू० ५ । जी दोय पेटकी हांडी मांए । खीर रावडी होवे । बेटा सवडे खीर खांडने । वावो डगमग जोवेरे । बू. ६ । जी बेठा खावो हुकम चलावो । पर दम जगावो । पुरसां

जेस्यो खायल्यो सरे । नहीतर जाय कमावोरे बू० ७ । जी पीसा-पोवा करां रसोइ । टावर टूबर रोवे । जाय पुकारो बेटा आगे । माछुं काम न होवे । बू. ८ । जी बेटा वात सुणे नहीं तिल भर बैरांरा भरमाया । घरमें बेठा माला फेरो । कांइ कमावणा आयारे बू० ९ । जी अठी उठीरा धका लाग्यां । पूरो हो गयो कायो । कुण सुणे किणने कहसरे । जाणे काग उडायोरे । बू. १० । जी एकत खाट पिछोकडे पटकी । कोय न आवे नेडो । कूरां कूरां करमूड पचावे । डोसांने मत छेडोरे । बू. ११ । जी वरसुं रोटी करडी आवे नरम खीचडी भावे । दांतासुं चावी नही जावे । मन दीलगीरी ल्यांवेरे ; बू. १२ । जी दोरो खरच चलावां घरको । टाबरया अणाणा । थाने माल मसाला भावे । माने भाग नही खाणोरे । बू. १३ । जी सीख्यो ग्यान गयो गेबाउ । पड़े ध्यान में घाटो । भरा वजारा धाडो पाडयो । लूंट लीयो सब लाटोरे बू. १४ । जी पूरवपूंजी खाय खुटाइ उमर लंबी पावें । जमदूत जब घाटी पकड़े अंतमसे पिस्तावेरे । बू. १५ । जी पाप करीने माया जोडी । घरका फिर फिर जोवे । रोग असाता उदे होय जब आप अकेलो रोवेरे । बू. १६ । जी रोया गरज सरे नहीं भोला । हुंसीयारीका काम । भव भवमां ए साथे चाले । प्रभूजीरो नामर । बूस १७ । जी ग्यानी होय सो गत सुधारे । मूरख मरणा बिगाड़े । बाल मरणने पंडीत मरणो । केइ जीते केइ हारेरे । बू. १८ । जी आयां जाया सगा सनेइ । चित नहीं देवे परणी । दोस नहीं देणो । किसीने । जोवो आपरी करणीरे । बू.

१६ । जी जीवतडारी सार न पूछी । विदविद पाडयां वेला । मोवा पाले जात जीमावे । रोवे दे दे हेलारे । वू० २० । जी शिप सुवनीत सुवात्र वेटा । विरला जुगमें पावे । जीतव मरण सुधारे दोन्यूं तेउसरावण थावेरे । वू० । १६ स एकसठ भाद्रवे । गो गानमी वखाण । जैपुरमांए जडावनोंसरे । जरा कीयो नुकसाणरे । वू० २२ ।

## श्री मंधीरजीरो स्तवन लीख्यते

देसी लंजा सीपाइकी । खेत्र विदेह वीराजीयाजी । श्रीमिंद्र-स्वामी । होजी मारा अंत्र जामी । हुं इण भरत मोभारे । सीवगत गामी । आंकडी । १ । विन देख्यां मन हुलसें जी । श्री० हो० जीम चात्रिक जलधार । सो २ लवद विद्या नहीं मा कनेजी श्री० हो० पांख नहीं तन मांय । ३ । विद्याधर मित्री नहीं जी । श्री० हो० गिण विद मेलो थाय । सी० ४ । दूर दीसावर आपरोजी श्री० हो० विचमें विखमी वाट । सी० ५ । आडा डुंगर वने गणाजी । श्री० हो० नदियांओ घटघाट । सी० ६ । इण भव आय सकुं नहींजी । श्री० हो० वनणा उगंते सूर सी० ७ विन रुजगारनी चाकरीजी । श्री० हो० राखो कयूंनी हजूर । सी० ८ । भवसागरमें भरमनाजी । श्री० हो करी अनंती वार । सी० ६ । अब तो न्याव निवेडदोजी । श्री० हो जी० भमत भमत गयो हार । सी० १० । मायत जावे जीमवाजी । श्री० हो० वालक किम रहलार । सी० ११ । आप तो मोन पदारस्योजी श्री० हो० मानेह पार उतार । सी० १२ । भवि ए छुं अभवी छुं जी ।

श्री० हो० सो तुं म देवो वताय । सी० १३ । धीरज घर करणी करुंजी । श्री० हो० मनको भरम मीटाय । सी० १४ । पूरवघर दृष्टि धराजी । श्री० हो० जघन साधुजी सो कोड । सी० १५ । चरण लागी सेवा करे जी । श्री. हो. हुं नहीं करुं जारी होड । सी. १६ । दूरे रइ दर्शण करुंजी । श्री. हो. एसो कीजे उपाव । सीव. १७ । वार वार करे विनतीजी । श्री. हो जैपुरमांए जडाव । सी. १८ ।

## बीजे कवरजीरी लावणी लीख्यते

दे धन धन जंबू कवरजी जोवनमें समता लीनी । कछ देस कसुंबी नगरी । देखंता सव मन भावे । सेठ धनावो धगकर दीपे । बीजे कवरजी सुत थावे । बाल ख्याल कर जोवन वयमें । सतगरुकी संगत पाइ । सर्व व्रतामें सील वखाण्यो । विजेकवर सुण हरखाइ । किसन पखरा त्यागज कीना । उत्तम काम कियो हदरी । भर जोवनमें सील आदर्यो । बीजे कवर विजया कवरी । आंकडी । १ धन सार वलि सेठ दूसरो । तिणहीज नगरीकमाइ । सुंदर मंदीर रिध संपदा । पुनवंत पुत्री जाइ । चोसट कलावती सुलक्षण ।रूपवंत वहु चतुराइ । पूरव पुन संजोग धर्मरो । सतियांरी संगत पाइ । सील प्रसंस्यां सुणी निज सरवण । सुकल पख सोगन सवरी । भर० २ । माहो माइ करी सगाइ । मात पिता सहु सुख पाया । जान मान दे वहु आडंबर । प्रण पात निज घर आया । रुपा रेल केल कंवाड्युं । नमन करी सव पाए पडी । सज सोला सिणगार सुहागण । पीउ मिंद्रमज आय खडी ।

जोवन जोर घटा चढ आइ। अमरमें चमके विजरी। भ० ३। सीस राखडी काना कुंडल। नक वेसर चूपा चलके। मुख तंबोल मांग भर मोती। कांचूं हार हीये हलके। रतन जडत चूडा अरु कांकण। बाजूबंद जवियां जव के। दुलडी तीलडी चोसरमाला बीच बीच हीरा दमके। करमें मुदडी। ओडण चुंदडी। लिलवट बिंदली रइकवरी। धन धन श्रावक पुन प्रभाव। बीजे कवर। वि० ४। रिचक झिमक घुवर वमकाती। ठमक ठमक पगलां भरती झणण झणण कैकट मेकल। गज गति चाल चली जाती। वदन दीपाती मन ललचाती। मदन दीपाती मदमाती। काजल रेख देख नेत्रांमें। कामीकी छाती थरराती। सांगोपांग सरग चोथानी। मुख आगे ठाडी अमरी धन० ५। लटक लटक करती बहु लटका। मुलक मुलक मुखडो मोडे। मधुर मधुर बोले मन गमती। प्रीतमसेथी नेह जोडे। खडी खडी कवकी अरहारी। व्होत कठण तुमरी छाती। हुकम करो तो लेउं विसरामो। नहींत्र पाछी घर जाती। श्रांट न खोलो मुखे न बोलो। करकाया कनकासयरी। धन. ६। इम वतलाती। कंथ रीजाती। हे जवर हीये हुंलसाइ। विजे कवर कहे काम नहीं मुज हे सुंदर तुं किम आइ। जाव जाव मैं किसन पखरा त्याग कीया मन डिडताइ। तीन दिवस तो दूर रहो तुम। पीछेसें जाणी जाइ। ट्रटी आस भइ निरासा। अब कुण सार करे हमरी। धन. ७। विलख वदन देखी कवरी को। वतलावे मीठी वाणी। दिलको दर्द कहो हम सेती। हे सुंदर किम कुमलाणी। जाव जीव में सुकल पखरो सीलव्रत लीयो हित आणी। अवतो मारे हुवा

मन वंछत पूरीजेरे । म. १३ । इतनी गरज अरज मैं कीनी । सायत विरद धरीजेरे । म. १४ । सेवा चाउं न किण विध आउं निस दिन तुम गुण गाउंरे । म. १५ । प्हो उठीने ने कर जोडी । चरणा सीस नमाउंरे । म. १६ । कर्म कलेसी करत बखेरा । सो तुंम दूर हटावोरे । म. १७ । समरथ सायब साय करीने । पुद्गल फंद मीटावोरे । म. १८ । ससत १६ न ने म्हा महीने । दूजन पख उजवालोरे । म. १६ । नेपुरमांय जडाव कहत है । वीनतडी अवधारोरे । म. २० ।

## आलूंणकी ढाल लीख्यते

देसी जंबुजीरा तावनरी छे । हो नाथजी पाप आलेउं आपरा । केइ भांतरा । दिन रातरा । उंलालो । किया पच इंदी वीणास । सारयां गल देइ पास । घणा खाया सद्मांस । दीनानाथजी । सुणो वातजी । जोड हाथजी । आंकडी । १ । हो नाथजी । लुटयां छ कायरा प्राणने । केइ जाणने । केइ अजाणने । उ० नहीं जाणी परपीडा । चाप्यां कंथवा ने कीडा । चाव्यां पाना हंदा बीडा । दी० २ । हो वनासपती तीन जातेरी । केइ भांतरी । छमकी हाथेरी । उ० छेद्यां पत्र फल फूले । सेक्यां गाजर कंद मूले । खाया भरी भरी लूणे । दी० ३ । हो० आचार कीना हाथसुं । चीरयां दातसुं । गणी खांतसुं । उ० माय गाल्या है मुसाला । खाया भरी भरी प्याला । आया उलणयाका जाला । दी० ४ । हो० पाणी अलुच्यां तलावरा । कूवा वावरा । नदी नावरा । उ० फोडी सरवरीयारी पाल । तोडी तरवरीयारी डाल । वरफ घडा दीयागाल ।

दी ५ । हो० अदर आकांसारा जेलीया । भर भर मेलीया । उना ठंडा मेलीया । उ० अरथ अनरथ दीया ढोल । कीनी अणआखी अंगोल । मांए मांडी भैसारोल । दी० ६ । हो० मातासु पुत्र वीछोड़या । वणा रोड़या । दूधा दूहया । उं० कोस्यां नानडीया सा बाल । अपेटा पाडी झाल । तोडयां पंखीडारा माल । दी० ७ । हो० जू माकडने मालीयां । रोकी राखीयां ' रस्ते नाखीयां । उ० तडकै माचा दीया मेल । मांए उना पाणी ठेल । आगे होसी घणी हेल । दी० ८ । हो० सीयाल करी खीरा भरी । चोडे धरी । उ० मांए पटपड मरीया जीव । पाप कीया मस दीव । दीनी नरकारी नीव । दी ९ । हो० उनाले बाव वीजोवीया । फुल वीछावीया । जल सिंचावीया । उ० कीनी वागामांए घोट । खाया चूरमा ने रोट । वांदी पाप तणी पोट । दी० १० । हो. चोमासे हल हाकीया । वेल भूखा राखीया । मारयां चावख्यां । उ० फोडया लमी तणा पेट । मारयां सांप सप लेटे । दया नहीं आणी टेटै । दी० ११ । हो० जुना नवा कर वेचीया । सुलीया संचीया । नही सोचीया । उ० अण जोया लीया पीसे । हल्यां मारी दसवीसे । आगे रोसी देह चीसे । दी० १२ । हो. दूध दइ आछचालेना । सरवत दाखेना । केरी पाकना । उं० गलि गीरव न तेले । दीया उगाडाइ मेले । कीडयां थाइ रेला पेले । दी १३ । हो० कुड कपट छलवा किया । छाने राखीया । नही भाखीया । नही भाखीया । उ० मुख बोले गवी कुठ । धाडा पाडे लीया लुट । जंत्र मंत्र मारी मूठ । दी० १४ । हो. परनारी घन चोरीयां । खेली होरीयां । गाढ़ डोरीयां । उ०

देख्यां तमासा नेती जे ताल्यां पीटी होइ हीजे। घाल्यां गाइ घणी रीजे। दी० १५। हो० अवगण वाद गुरां तणा। वोल्यां गणा। असुखा वेणा। उ० दुख दीया में अग्यानी। निंद्या कीनी ज्ञानी ज्ञानी। नही धास्यो अन पाणी। दी० १७। हो. भोजन भली भली भांतरा। आदी रातरा। खावा सातरा। उ० पीया अण छाण्यांइ पाणी। मन कुरणा नहीं आणी। पर पीडा न पीछाणी। दी० १७। हो. सासु सोक सुवासणी। पाडोसण भणी। संताइ घणी। उ० मुख वोली माठी धाल। केइ दिया कूडा आल। तपसी रोगी वुडा वाल। ज्यारी नैकरी संभाल। दी० १८। हो. शंशय कीया में मोटका। कोइ छोटका। हुवा खोटका। उ० करी छाने राख्यां पाप। सो तो देख रया आप। मारे थेइ साय वाप। दी० १६। हो. स्त्रीसुं भांता पडावीया। गरय गलावीया। जीव जलावीया। उं० मारी जूं ने फोडी लीख। वेठो पापीरे नजीक। नहीं मानी गरु सीख। दी० २०। हो. थापण राखी पारकी। केइ हजारेकी। साउकारेकी। उं० देता कीया सीट पिट। माग्यां तुरत गया नट। लीया सामूलाइ गिट। दी. २१। हो. तप जप संजम सीलरी। देता दानरी। भणतां ग्यानरी। उं. दीनी मोटी अंतराय। तेतो भुगती नहीं जाय। पडियो करसी हाय हाय। दी. २२। हो. मात पिता गुरु देवा तणो। अवीनेपणो। कीयो घणो। उं. वसीयो चोरासीरेमांए। ज्यांसु कीयो वेर भाव। खमो खमो चित चाव। दी. २३। हो. सार करीने संभालज्यो। मती विसारज्यो। पार उतारज्यो। उं समत ओगणीसें वासठ। भांको

मती करो हट । द्रसण दीज्यो अवे भट । दी. २४ । हो. आले-
वणा इम कीजीए । मिछ्यां दुकडं दीजीए । करम छीजीए । उ.
जेपुरमांय जडाव । आणी उजल भाव । ढाल कीनी धर चाव ।
दी. २५ ।

## धन्नाजिरी लावणी लीख्यंते

राग । गोरी तो चाली सासरे । तुम कवीतो फिर आना ।
कवी तो फि आता । देसी इणमें मीलती छे । आद श्री अरिहंत
सिध सरव साधु । सिध. मैं नमन करु निज सीस भावसें वांदू ।
इण जंबु दीपमें । नगरी का कैंदी सोवे हो । नगरी. तिहां भद्रा
नामे । सुवारथ वाइ होवे । एक धन्नानामे । पुत्र रतन जिण जायो
रतन. प्रभुता है पूरी बतीस । कोड धरमायो । दिलकर दीपे
ससि जिम सुरत सोभागी हो । सु. । धन धन्नाजी महाराज वडा
वैरागी । १ । आंकणी । ज्यारे म्हल वयालीस मोम । भीगमिग
जोती । भी. घणा जाली जरोका । घोप लटकता मोती । सुख
लैणी सुद्रबतीसें परणाइ । नारी परणाइ बहु दत डायजो । अन
धन लीछमी ल्याइ । ज्यारे सेज सकोमल । चंद्रवे चतुराइ । घणी.
सुख विलसे धन्ना । दोगंध कमुर नाइ । कहुं जोगतणो विसतार
। दसा अब जागी । दसा. धन. २ । लीयो जोवन वयमें जोग ।
भोग तज दीनो । भो. महावीर समीपे । पंच म्हा वरत लीनो ।
मुनी जाव जीव छट भगत । अबिगरो लीनो । अबि. नित पाणीमें
अन्न घाल । पारणो कीनो । ज्यां कंकर करदी देह । नेए तज
दीनो । नेह. कर तप जप काडयो सार । मरणसे बीनी । एक मन

वच काया । सुरत मुगतसे लागी । मुग. धन. ३ । मुनी भण्यां इग्यारे अंग संग थेवरने । संग थेवरने । संग. ए सह परीसासुर । मार निज मनने । सव क्रिोध मान मद लोभ । कपट डिढ समगत समजमें सील । सुधारस पीनो । श्री वीर संघाये । उगर वीहार करंता । वीहार घणा घणा गिराम नगरपुर । पाटणमें विचरंता । रया राजगरीने वाग । अनुग्या मागी । अनुग्या । धन. ४ । जव गइ वधाइ । सेणक मन आणंदा । मन. वहु हरक धरीने । भेटयां वीर जिणंदा । राय सुणी देसना पूछे । सीस नमाइ । सीस. सगला संतनमें । कुंड इधक मुनी थाइ । जीन भाखे सेणक साध सिरोमण सारा । सिरो. पिण रजमांएतज । धन धन्नो अणगारा । कहो कारण सामी । सुण वानी रुच जागी । इछा. धन. ५ । नाखे अन हाणी । एवो जाणी काग कुता नही वंछे । लेवे हित आणी । जीत्यां इंद्री पंचे । सुण समरण राजा । मुनी गुण-ताजा । धना मुनीपै जावे । मुनी. दे प्रदिखणा । खुल सीस नमावे । तुम धन हो स्वामी । अंतर जामी । गुणरो पार न पावे हो । पार. प्रणाम करीने । आया जिण दीस जावे । द्रसण अवि-लाखे । फिर फिर जाके । जैन धर्मरो रागी । धर्मनो. । धन. ६ । नव महना सारे । मास संथारे । स्वारथ सिध अवतारो हो । लीयो. चव जासी मुगते । खेत्र विदेहमें जाणो । १९ सें ६२ तिथ तेरने । म्हा महीना मांही । महीना. । आ करी लावणी । जेपुर शहर सवाइ । जडाव कहे जिनराज लाज हे तुमने । लाज. अब वेगी कीज्यो । सांर तारज्यो हमने । अछती वंछे छती रिध तुम त्यागी हो । रिध. ध. । ७ ।

# जंबूजीको सत ढाल्यो लीख्यते

नमस्कार नव पद भणी । होवे उगंते भाण । कथा पइना साखसुं । करस्युं सील वखाण । १ । पाटोधर श्रीवीरना । श्री सुधरम गणधार । तेहना सिष्य हुवा दीपता । श्री जंबू अण-गार । २ । चरम केवली भर्तमें । इण चोइसी अंत । इणमें संका छे नहीं । भाख गया भगवंत । ३ । बाल बिरमचारी परणने । त्याग दीवी प्रभात । कुटम सहु प्रतबोधने । लीयो आपनी साथ । ४ । सांभलज्यो सहु को सभा । बिकाथा आलस छोड । बिरला होसी जगतमें । जंबूरी जोड । ५ ।

## ढाल पहेली

देसी सीलवंतीराचे । जंबुदीपरा भरतमें । देस मगध सुखकार । मवीयण राजगरह अति दीपतो । देवलोक अनुहार । भवी. सुणज्योजी चीरतसुवावेणो । आंकणी । १ । वाग वगीचा वावडी । गढमिंद्र बाजार । भ. सेठ वसें सन्यापती । लीछमीरो अवतार । भ. सु. । २ रीखवदत एक सेठ छे । सोनैया छिलमें कोड । भ. भवनादिक रिध सोभती । और नहीं उण जोड । भ. सु. ३ । सेठाणी छे धारणी । सुती सेज मोझार । भ. सुपनो पूछे भरतारने । होसी पुत्र उदार । कुल मंडण कुल दीवडो । सुणने हरक अपार । मुद्र । सुं. ५ । दोपण टाले गरभना । देती दान बिचार । भ. पूरे मासे जन्मीयो । जाणे देव कुंवार । भ. सु. ६ । जन्म म्होछव मांडीयो । खरच्यो धन अपार । भ. कुटम सहुनी साखसूं । जंबू नाम कुंवार । भ. स. ७ । बाल

ख्याल पुनवंतना । कहेतां न आवे पार । भ. कला व्होत्र पुरुषनी । सीख थयो हुंसीयार । भ. सु. ८ । आठ सगायां सांवठी । देखी सरीखी जोड । भ. कीनी म्होरत जोयने । पूरे मनरा कोड । भ. सुण. ९ ।

## ढाल दूजी

देसी पनजी मूडे बोल । धरम ऋारू चढ सुधर्म स्वामी। राजगिरीने फरसेरे । घर घर मांए रंग वदाइ । हिवडो हरसरे । आज रंग वरसेरे । आ. मारा सतगुरुजीरा दरसण करसांरे । आंकणी । १ । वहु नरनारी । सज सिणगारी । होडां होडी जावेरे । सुण जंबुजी आणंद पायो । मन उमावेरे । आ. २ । मात पिताने पूछ कुंवरजी दरसन करवा आवेरे । हाथ जोड गुणगिराम करी । निज सीस नमावेंरे । आ. ३ । वनणा करने सनमुख वैठा । जुडी प्रखदा भारीरे । साध साधवी श्रावक श्रावका खुली केसर क्यारीरे । आ. ४ । पाट वीराजे घन जीम वाजे । वाणी इमरत वरसरे । स्वात बूंद जीम सारी पुरखदा । श्रवणे फरसेरे । आ. ५ । भिन भिन दे उपदेस मुनीसर । दुर्लभ नर भव पायोरे । तप जप खरची लावो ले ल्यो । अवसर आयोरे । आ. ६ । दस बोलरो जोग मील्यो है करणी हो सो कर जारे । दान शील तप भाव भगत कर पार उतर भरे । आ. ७ । तन धन जोवन आउंख छीजे । मूरखने नहीं सुजेरे । पुदगल ढंग पतंग रंग ज्यूं । को वीरला वूजे रे । आ. ८ । माता पिता सुत वेन भारज्या । सुवारथसुं सब प्यारीरे । विन मतलब कोइ बात

करे तो । लागे खारी । आ. ६ । पाव पलकरी खबर नहीं । हुंसीयार हुवे सो जागो । मोह निंद्रामें गाफल मत रहो जाय सतगुरु सागोरे । आ. १० आधी रातरा पुत्र जायो । हरक वधावा गावेरे । फजर भई जप गुजर गया । क्यां सुपना आयारे । आ० ११ । इत्यादिक उपदेश सुणीने । थर हर मन कंपावेरे । कर वनणा जिण दीसथी आया । उण दिस जावेरे । आ. १२ । धरतां दरवाजो पडियो । मिंत्री दब गयो हेटेरे । अदविच सुं पाछा फिर आया । जाय सत गुरु मेटेरे । आ० किरपा कीजे खरची दीजे । वरत करावो चोथोरे । मित्री मरण अजाणक पाम्यो । हे जग थोथोरे । आ. १४ । धन हो स्यामी । अंतरजामी । काटी जमरी फांसी रे । नमस्कार कर घरकुं आया । वदन उदासी रे । आ. १५ ।

दोहा । मरण सुण्यो मिंत्री तणो । कह माताजी एम । पुन्याइ वडकातणी । तूं आयो कुसल चेम । १ । घावे हरख वधावणा । वांटो गुल भर थाल । जन्म म्होछव कीजीए । वरत्यां मंगल चार । २ । ओछव कहो किण कारणे । खिण खिण छीजे आव । समे समे मरणो कयो । ग्यानी भीणा भाव । ३ । तप जप संजम सीलनी । खिण एक सफली थाय । काल अनंतो वह गयो । आरंभ मगरा मांए । ४ । धन साधु धन साधवी । धन अरु जैन धर्म । और सहु जंजालने । छोडी मिथ्या भर्म । ५ ।

## ढाल त्रीजी

देसी वेरागी थयो मारो जामण जायो वीरोरे । हे माइ सरव सत छे रे । वीर वचन प्रमाण । पिण आपणथी किम

निमेरे लग रइ घर ले तांणोरे। वेरागी थयो मारो जायो जंबू क्वारोरे। ते किम राखीए। प्यारो प्राण आधारोरे। वे. १। आंकणी। कुण वरको कुण पारकोरे। सुतलनकी मनवार। पुत्र मिलण मिंत्री मरण। थांरएकण सातोरे। वे. २। इम सुणता संका पडीरे। डव डव भर गया नेण। हे जाया किम बोलतोरे। आज ओपरा वेणरे। वे. ३। भवसागर में भटकतांरे। मिल गया सुद्रसरेण। वचन अपूरव सांमल्यां रे। खुल गया अंतर नेणोरे। वे. ४। सुणवो ते तो सत छे रे। करवो अवसर देख। सुं जाणे तूं नानडयांरे। बोलो आण विवेकोरे। वे. ५। जाणुं छुं सही मातजीरे। मरणो पग पग लार। नहीं जाणुं किण थानकेरे। किण वेला किण वारोरे। वे.। ६। सगपण सहु संसारनारे। मील्या अनंती जीवार। धर्म सामग्री दोयलीरे। दुलव ए आचारोरे। वे. ७। हित वंछो ज्यो पुत्रनोरे। द्यो संजमरोजी साज। काल तके सिर उपरेरे। ज्युं ज्युं तीतर उपर वाजोरे। वे. ८। चित चमक्यो ठमक्यो हीयोरे। आजनिहेजोरपूत। जाणुं किण भरमा-वीयोरे। किम रहसी घर सुतोरे। वे. ९। खबर नही छे आज-रीरे। कुंण करे कालरी बात। करणी जासी आपरीरे। कुण बेटो कुण मातरे। वे. १०। इम सुणतां धसको पडयोरे। धरणी ढली ततकाल। जांणीज्यो जाणसीरे। दोरी पेटनी झालोरे। वे. ११। घाल्यो सीतल वायरोरे। चेतनता थइ माए। कां सिरजी नही वास्कडीरे। बिलख वदन बिल लायोरे। वे. १२। धीरज राखो मातजीरे ग्यानी वचन वीचार। मरता जाता नै रहेरे।

हुन्नर होय हजारोरे। वे. १३। बोली टटकी सायनेरे। अमरख आणीरे रीस। हिरगज जावा दुं नहींरे परणो बीसवा बीसोरे। वे. १४। पुत्र एक जन्मा पछेरे। करजो थांरी जीदाय। पोतो गो खीलायनेरे। वहुए लगावो पायोरे। वे. १५।

दोहा। हे माता प्रणायने कसी पूरस्यो हुंस। चोथो व्रत मैं आदरो। जाव जीव करसुंस। १। तो पिण मनरी काढवा। सवने दीयो जताय। व्याव रचाउ पुत्रनो। ज्यो आवे थारी दाय। २। निज २ वात मणी कहे। पुत्र चत्रसुं जाण। जंवूजी विन ओर। प्रणवारा पछखाण। ३। मात पीता वेह हरखसुं। व्याय कीयो तिण वार। कोइ नन्याणुं डायजो। भरीया द्रव भंडार। ४। प्रण पदारयां पदमणयां। माता करती कोड। अखीरइज्यो लालजी। कान गोप्यांरी जोड। ५। पीलंग पथरणा सांवट्र। चउदिस लटके लुम। वेठा ध्यान लगायने। जोगी जीम घर मून। ७।

## ढाल चौथी

देसी मोल्यांरो गजरो भूली। मिलकर आटूइ नारी। ए तो मन मोले सिणगारी। रिकन भीमकती आइ। जंवूजी नहीं नतलाइ। सुणो रंटीयाला। मुख बोलोनी वचन रसाला। आंकणी। १। सामोइ नहीं भाखे। सव उपी नीसासा नाके। थाइ जेसी नहीं आइ। इम उभी मनमें पिनताइ। सुं०। २। कोइ रीत भात नहीं राखी। थाइ प्रथम कवलमें माखी। वो भोजनरीकांइ आस। सवकीनी आप निरास। सु० ३। हुम घणी ले हमने। सो रैं

गइ मनकी मनमें । चुक नही पिया थारी । करणीमें कसर हमारी सु ं ४ । कोइ सार न पूछी बाती । पिया कठण बोहोत तुम छाती । चुक होवे तो बतावो । बिन कारण किम कलपावो । सु ० ५ । गांठ हीयारी खोलो । म्हा सु ं हसकर मुखडे बोलो । मैंउबी आप हजुरो । अब आस हीयारी पूरो । सं० ६ । बोल्या बिन नहीं सरशे । बतलाया जीवडो बसे । हुकम करो तो बेठां । अब कांइ मरजी थारी सेठां । सु ं ७ । आद्र नही सतकारो । उतमरो नहीं आचारो । में जबरीसु ं नहीं आया । थे पकड हाथने लाया । सु ं, ८ । त्यागें सो किम परणो । मैंतो बेठस्यां थारे धरणे । में लागी थारी लारे । परणोसो पार उतारे । सु० ९ । म्हाने आडाने किम प्रणी । थारे हिवडे कपट कतरणी जोसीड़े दियो वीसवासो । घर हाण लोकमें हासो । सु० १० । मत करो खाचा ताणी । पतली छाछ खमें नहीं पाणी । दातासु ं सुम भलेरो । बेतो उतर देवे सवेरो । सु ं० ११ ।

दोहा । उत्तर पेलो जाणज्यो । मुखड न बोले बेण । सामोइ जांके नही । दूजो उतर पीछाण । १ । इम सुणतां सासे पडी । धारी न रही धीर । रोम २ अ ंग सालीयो । वचन रुपीयो तीर । २ । है सुख लेणी सु ंदरी । भोग रोग सम जान । ग्यानी देवा भाखीयो । विष मीलीयो पकवान । ३ । देवतणा सुख भोगव्या जीव अनंती वार । जिणसु ं दुलब जाणीए । मानवरो अवतार । ४ । त्यांग्या विन तिरपत नही । निसचे ग्यानी वचन । त्रिणोवेतो त्यागदो । डिढ राखो निज मन । ५ ।

## ढाल पांचमी

देसी धन धन साधुजी सहे परीसा। मीलकर सारी न्यारी न्यारी। अद्‌भुत कथ बणायनी। पितमने विलमावा काले। कहेतुं जुगत लगायजी। १ । धन धन जंबू कवर वेरागी। धन ज्यांरो अवतारजी। कनकाचल सम मन वचकाया। कोइ वाजे वाए हजारजी। धन० आं० २। के थाकी कोइ नही रह वाकी। कहवा जोगी हामजी। कायर वे सो तुरत डिग जावे। पिण सुरा जंबु स्यामजी। ३। कहणी वे सो ओर कहीजे। बोलो सुत्रन्यायजी। कु हेतु कोड कह्यो तो। मारी न आवे दायजी। ध० ४। मेंपिण कहुं कोइ कथा अनेरी। ज्यो सुणो चित लगायनी। सगली, सनमुख होय कर जोडी। कहतहत वचन फुरमायजी। ध० ५। हेत दिसटंत केइ जुगत करीने कारण न्याय मीलायवी। रसके कथा ललीतंग कुवरवी सुण मन कंपायवी। सु०। ६। कहतां कहणी गइ वहु रेणी कर विधानो भोरजी। सुवट पांचसें लारे ल्यायो। आयो प्रभो चोरवी। ध० ७। धनरी पेटी बांधी सेठी। मेली गाथा मालजी। जंबू देखी गइ सुध सेती। पग चिपीया ततकालजी। ध० ८। चउदिस पेखे ओर नं देखे। नठा जंबू संतजी। ज्यो मुज पग छटे धरतीसुं। जाय पूछुं विरतंतजी। ध० ९। इम कहतां खटके पग छूटा। चडियो म्हल मेंझारजी। आठुनार यह निंद्रा वस। जागे जंबू कुवारजी। ध० १०।

दोहा। हाथ जोड प्रभो कहे। सांभल किरपानाथ। विद्या जवरी आपरी। में देखी साचात। १। विन कुंची ताला खूले

। भगत निंद्रा थाय । दोय लेइ एक थोभणी । दीजे करी पसाय । २ । रे भोला समजे नहीं । विद्या चलावे कूण । ज्यारे धनरी चायना । ते करसी टासणा टुं'णा । ३ । विद्या सब संसारनी । भावे जाणम जाण । साचा विद्या धरमरी । पावे पद निरवाण । ४ । नारी नागर सारखी । अगरो अनरथ मूल । दिन उगे गृह त्यागसु' । देदो स्यां परधुल । ५ । हे सामी किम छोडस्यो । इचरज वाली वात । ए घर कंचन कामणी । देव भवन साक्षात । ६ । मात पिता प्रथारनी । कुण करसी संभाल । भूर झूरने मरजावसी । दोरी मोहनी झाल । ७ ।

## ढाल छठी

देसी डफकी छे । मातपीता सुन बेन भारज्यां । मुतलब सब लागे पूठोरे । जग भूठो हारे जग० । जाय जनम खूटो । ज० । आंकणी । १ । बिन मुतलब कोइ ढीग नहीं बेठे । दिसोदीस जावे उठोरे । ज० २ । छिन २ उमर जावेरे छीजती । भजन करी भरलो उ'ठोरे । ज० ३ । नारी सारी जब लग प्यारी धन कमाय भरे मूठोरे । ज० ४ । सुखमें सीर पडरे सजनको । दुखमे दूर रहे रुठोरे । ज० ५ । भरयांरे चरसने हरक करजेले । रीतो कर पटके पूं ठोरे । ज० ६ । तन धन जोबन पलकमें पलटे । तप जप कर लावो लु'टोरे । ज० ७ । जमका दूत पकड ले जासी । किणरे भरोसे गाफल बेठोरे । ज० ८ । धन धन करतो फिरे रे भटकतो । घाड धरे धरतीमें सेठो रे । ज. ९ । सुख चावो तो संजम लेलो । चोरासीरो तांतो टूटोरे । ज० १० । इत्यादिक

उपदेस सुणीने । प्रभो सुघट सहत उठोरे । ज० ११ । आप गरु हम सव तुम चेला । राखो चरण सरण पूठोरे । ज. १२ ।

दोहा । इम कहतां आठु जणी । वोली टटकी खाय । परधन लुटे पापीया । वोलंतां न लजाय । १ । चोर अन्यायारे सिरे । न्याय भरे नहीं भीख । आप न जावे सासरे । दे ओरांको सीख । २ । सात पांच विसवासने । मूसा मार मंभार । मक्काजीरो नाम ले । म्याउ २ पूकार । ३ । वाइजी साची कही । मैं पापी निरधार । देखा किण विध राखस्यो । मन मोवन भरतार । ४ । प्रवरोवी आला सवी । ओर पांचसे चोर । सासु सुसरा आद दे । मात पिताजी और । ५ ।

## ढाल सातमी

देसी झुर २ कायर को हिवडो थरे हरेजी । आंकणी । मोटी वणाइ एक सिविकाजी । वेठा छे जंबू कवारजी । वल विसेखे ज्यांरी कामणयांजी । मात पिता परवारजी । झु. १ । वाजा तो वाजे सवद सुहावणांजी । कायर हीयारा वे दिलगीरजी । कठण परीसा स्हण दोयलाजी । केलजू कोमल सरीरजी । झु. २ । जावे जमाली जीम नीसरयांजी । आया छे मज वजारजी । लोक देवे गिरदायन्याजी । चरंजीवो जंबू कवारजी । झु. ३ । चढ चढ घोडां जोवे कामणयांजी । झांके आन्तरामें गूढा गालजी । काले परणीने लारे नीसरयांजी । आठु सुंदर सुखमालजी । झु. ४ । कोइ एक एक नरनारी मुखसु कहेजी । धन २ जंबूकवारजी । वाल विरमचारी नसी परिहरेजी । सफल करे वा अवतारजी । झु. ५ ।

न जाय। केतो सरखो राखल्यो। म्हाराज सुं. म्हा. के मारा मरण मीटाय। जी.। मारा पारस प्रभु कर्म भमावे मोय तार। आंकणी। १। नामी चाकर आपरो मा.। सु. मा.। छोडो किम अंके लगाय। खाना जात गुलाम म्हाराज। सु. मारा. मेटो मारी सव दुखदाय। जी. २। चाकर चूके चाकरी माराज। सुं मा. ठाकर करे निरभाव। अवगुण गुण कर लेखवो। म्हा. सु. मारा. आप छो सरल सभाव। जी. ३। कुण सुणे किणने कहुं माराज। सुं. मारा. कुण आगे करूं ए पुकार। और नही तुम सारखो माराज। सुं. मा. हूंढ लीयोरे संसार। जी. ४। आस करी लीयो आसरो माराज। सु. मा. सरणे आयारी राखो लाज। नर्ष समीपे राख ल्यो माराज। सु. मा. सीजे मारा वंछित काज। जी. ५। मैं अपराधी अनादको माराज। सु. मारा. देख रयाछो जगदीस। तारक विरद वीचारने माराज। सु. मारा अंतरजामी गुनो हे करो वगसीस। जी. ६। १६ सें वरस वासठे माराज। सु. मारा. म्हा वद नोमी गुरु वार। जेपुरमांए जडावनी माराज। सु. मा. वीनतडी अवधार। जी. ७मुक्तयांरा मैंवासी।

देसी। मतकर मान गुमान ए दिन सदा न रहेगे तियार म. प्रभुजीवो पास। जीनेसर तुम गुण अनंत अपार। उल लालो। सुर गुरु निज मुख स्वरसती गावे। तोइय न आवत पार। प्रभु.। आंकणी। १। कमट विडारण नागउवारण। समलायो नवकार। रण इंद्र पदमावती दोन्यूं। मानत तुम उपगार। प्र. २। मैं

मतहीन दीन दुख पाउं । भमत २ गयो हार । दीन दयाल दया कर मोपे । पापी पार उतार । प्र. ३ । पासे पाषाणनांम तुम प्रगट्यो सोत्री सुखदातार । प्रतक तुं रमेपस्वर पारस । भवोदधी पार उतार । प्र. ४ । और न चाउं दरसण पाउं । आउं तुम दरबार । टुक भर म्हर करो अलवेसर । दीज्यो निज दीदार । प्र. ५ । मन मंगल चित चंचल घोडा । दोडत फिरत उजाड । घेर घेर ल्याउं निज गुणमें । ठहरत नहीं हे लीगार । प्र० ६ । १६ सें तेसठ तेरसने । जेपुरमें बरसांल । तुम गुण माल जडाव जपत है । वद पख दीपक माल । प्र. ७ ।

## पार्सनाथजी

देसी । देखो माइजी इण मोरीयारो रूपजी. । भामानंदण पास जिणंदजी । भां. कोइ म्हर करीने सामो जांकज्यो । को. हुं छुं प्रभुजी अधम अनाथजी । हु. कोइ सरणे आयांरी लज्या राखज्यो । १ । कोइ एक ध्यावे बिरमा बीसन महेसजी । को. कांइ मेतो जीकध्याउं प्रभु पासने । कां. कोइ एक मागे अन धन लीछमी चीरजी । कोइ. कांइ अविचलरेक पदवी दीज्यो दासने । २ । कोइ एक नावे गंगा जमना तीरजी । को. मेंतो जीकनाउं निजगुण नीरमें । धोइ मारा भव २ संचित पापजी । धो. कोइ खातोजी खतास्यां प्रभुजीरा सीरमें । ३ । कोइ एकहेरे प्रबत फाडजी । को. कोइ प्रभु विराज्या मसतकलोकरे । थारे मारे आगम पिछाणजी । था. कांइ भोलारे भरमाणा घोपे मोखरे । ४ । कोइ एक थापे घात पाषाणजी । को. कांइ जोत अरुपी आप विराजता

। थेछो प्रभुजी निरंजन निराकारजी । थे. कांइ अखेली अचल सुख सासता । ५ । कोइ एक पूजे दीपक्ष चवर दुलायजी । को० मैंतो जीक पूजू तीकरण जोगसु । कोइ भावे जीक पूजू तीकरण । कोइ एक चोढे पान सुपारी फुलजी । कोइ. कांइ प्रभुजी निरागी विषे भोगसु । ६ । कोइ एक नाचे घुघरीया गमकायजी । को० कांइ प्रभुजील लीन रहे निज ध्यानमें । कोइ एक गावे ताल मजीरा तानजी । को. कांइ प्रभुजी प्रवीण पदारथ ग्यान में । ७ । दूढत २ मीलीयो साचो देवजी । दूं. भव २ जीक सेवा होज्यो आपरी कांइ भ. थेछो प्रभूजी जीवन प्राण आधारजी । थे. कांइ लपटीजी चरणामें करस्यु चाकरी । ८ । १६ स वरस ६३ साल रसालजी । कांइ जेपुरमें कर जोड कहे जडावजी । थे छो प्रभूजी दीन दयालजी । थे. कांइ भव जलरेक डूबत तारो नावजी । ६ ।

## गोतमजीरो स्तवन लीं०

चाल । नित नाम जपो श्रीनो केडो । वसुसुत पिता पृथवी माता । ए तीनुं इ सगा भिराता । पो उंठी नित पाए पडो । श्री गोतमजीरो ध्यान धरो । १ । धर्मध्यान सुकल ध्यावो वली समरणको लीजे लावो । आरत रुद्र दूर करो । श्री. २ चिंतामण चींता चूरे । अरु कलप ब्रिज वंछीत पूरे । कामधेन पय पान करो । श्री. ३ । सोन पोरसो घर आवे । विन सीखी विद्यां सिद्ध थावे । देस विदेसां कांइ फीरो । श्री. ४ । सींघ सर्प सब भे जावे । अरुं चोर धाड अंधा थावे । चीन्ता आरत विघन हरो । श्री. ५ । दान मान राजा देवे । अरु न्यात जातमें जस लेवे । बैरी

दुसमन पाए पडो । श्री. ६ । विस प्याला इमरत थावे । वल रोग सोग वर नहीं आवे । भुत पिसाच नही लागे चेडो । श्री. ७ । गुण इतना इण भव थावे । पछे सुखे सुखे मुगती जावे । संसार समुद्र वेगतिरो । श्री. ८ । १६ सें तेसट वरसे । स्हर जेपुरमांए जडाव कहे । भजन करी भंडार भरो । ६ ।

## सोला सतीयांरो स्तवन लीख्यते

राग गोतम नाम जपोजी प्रभाते । सोला सती समरो सुखदाइ । ज्यां घर आणंद रंग वधाइ । नांव लीयां नव रीद सीध आवे । भव भव संचीत पाप पुलावे । सो. । आंकणी । १ । ब्राह्मी सुंद्र दोन्यूं बाइ । बालपणे सुध समकित पाइ । लीपी अठारा रीखवजी सीखाई । पवीतणीरी पदवी पाइ । सो० २ । सीता कुंथा राजुल नारी । प्रतबोध्या रह नेम कुवारी । सातसें सखीयां संग लेइ सारी । संजम ले चढ गइ गीरनारी । पीव प्हलाइ सीवगत संभारी । सो० ३ । चनणवाला चेलणा राणी । सूत्रमें जिनराज वखांणी । वीर जिणंदनी आद सिपणी । मुगत गइ कर उत्तम करणी । सो० ४ । कोसल्या सेवा प्रभावती । पदमावती चोलादवदंती । चीर फाड वनमें तज पती । सील प्रभावे सिव गइ मतवंती । सो० ५ । सुलसां सुभद्रा सती जाणी । काचे सुत कुवाथी ताणी । चंपा पोल उघाड भली परे । सील प्रभावे थइ सुर वाणी । सो० ६ । मरगावती सती सोलमी जाणी । भाव सहत वंदो भव प्राणी । ओगणीसें तेसठ म्हा महीने । जेपुरमांए जडाव वखाणी । सो० ७ । पोह उठीने कोइ सीस नमावे ।

मन वंछीत सुख संपत पावे । जन्म जरा ने मरण मीटावे । पांचवी गत तणा सुख पावे । सो० ८ । हुइ होवे नै वल होसी । ज्यारा नाव सूत्रमें जोसी । ग्यानी वदे सो मुनीए वखाणे । छदमस्त तो विवहारथी जाणे । सो० ६ ।

देसी । जीला मारी भोहरो उदीयापुर मालेरे । नव घाटी उलंगनरे । प्राणी । पायो नर भव सार । जोग लयो दस वोल- नोरे । प्रा० सो एलो मत हार । चतुर नर चेत जा आछो अवसर जावेरे । लाखां कोडां खरचतां । फिर पाछो न आवेरे । आंकणी । १ । घर धंधारे कारणेरे । उठे आदी रात । सोच करे संसारनो । कोइ नही है तीरणारी वात । च० २ । तन धन जोवन जाएछेरे । प्रा० जेम नदीरो पूर । पोट सीर पापनीरे । सूं भारी घर दूर । च० ३ । काचो कुंभ सीसी काचनीरे । प्राणी तिणरो कीस्यो वीसवास । जतन करंतां जावसीरे । जंगल होसी वास । च० ४ । तेल जल्यो वाती बूजीरे । प्रा० काया में घोर अंधार । एरणा ठवको मीट गयो रे । प्रा० कहां गया बोलण हार । च० ५ । कुटम कबीलो पावणो रे । प्रा० मेलो मडीयो सराय । थित पाकां सब वीखरे । प्रा० जिम आयो जिम जाय । च० ६ । बूडा वडेरा सब गयारे । प्रा० केइ गया छोटा वाल । देखंताइ ले चल्या रे वेरी । ऐसो कसाइ काल । च. ७ । धन माल धरीया रहारे । प्रा. रह गया लेण न देण । इम जाणी धर्म कीजीए । आगे कोइ नही थारो सेण । च. ८ । ओगणीसें वरस तेसठरे । प्रा० जेपुर स्हर मभार । सीख दीनी जडावजी । वसंत पंचमी सुकरवार । च. ६ ।

देसी चीजारी । समद्र वे तो डांकल्यूं । जीवाजी । हारे जीवा भव जल डाक्यो न जाए । कर्म गत वांकडी । जीवाजी । क० । आंकणी । १ । बालक वे तो राखलूं जी. हा. जीवा मन वस राख्यो न जाय । २ । सांकल वे तोड ल्यूं । जी० हा० जीवा त्रिसना तोडी न जाय । क. ३ । घोडो वे तो मोडलुं । जी. हा. जीवा । ममता मोडी न जाय । क० ४ । डोरी वे तो खेंच ल्यूं । जीवा. हा. जीवा० जीवा भवतिथ खेंची न जाय । क० ५ । अन धन लीछमी वैंछ दूं । जी. हा. जीवा आपदा वेछी न जाय । क० ६ । खोटो वे तो टालद्युं । जी० हा० जीवा होत वटाल्यो न जाय । क० ७ । धातुं वे तो गालदूं । जी. हा. जीवा गरव न गाल्यो जाए । क० ८ । बांद्यो वे तो खोलद्यूं । जी० हा० जीवा नेह टूठां खोल्यो न जाए । क. ९ । सोनो वे तो तोल ल्यूं । जी. हा. जीवा न्हे लागो तोल्यो न जाए । क० १० । हीरो वे तो प्रखल्यूं । जी. हा. जीवा न्हे लागो तोल्यो न जाए क० १० । हीरो वे तो प्रखल्यूं । जी. हा. जीवा धर्म न प्रखो जाय क० ११ । पाणी वे तो थाग ल्यूं । जी. हा. जीवा ग्यानरो थाग न पाए । क० १२ । रुस्यो वेतो मनाय ल्यूं । जीवा० हा० जीवा मरता राख्या न जाय । क० १३ । लडीयो वेतो खमाय ल्यूं । जी. हा. जीवा हंस उठो नरहाय । क. १४ । घाव लगे तो भूलीए । जी० हा० जीवा कू वचन भुल्या न जाय । क. १५ । पकड्यो वेतो छोडदूं । जी० हा० जी० हा० जीवा कुलछण छोडयो न जाए । क० १५ वैरी वेतो जीतल्यूं । जी.

दूसण गुण साथे अपार तो । धर्म आचारज मांगल । गुरुणीजी संजम ग्यान दातार तो । ज्यां. ५ । श्री श्रीमिंद्र आद दे । चव- दसे बावन नमुं गुणधार तो । अनंत चोइसी आगे थइ । जेहना केवली सरव अणगारतो । ज्यां० ६ । नालण श्री विधमानरो । वरत्यो छे वरते न वरतण हारतो । केइ मुनी मुगते गया । के एक भव कर जावण हारतो । ज्यां० ७ । चवदे पूरव धर केवली । अवद नांणी मन प्रजव धारतो । थेवर थिर करी आत्मा । तप करी तिर गया भव दधी पारतो । ज्यां० ८ । आद जिणंद आदे करी एकसो पुत्र न पूत्रीजी दोयतो आठ पाट श्री भरतना हस्तीरे होदे माताजी सीध होय तो । ज्यां. ९ । कपील मुनी हुवा मोटका । पांचसे चीलाने दीयो प्रमोदतो । नमीराय नमाइ निज आत्मा । एक समे हुवा च्यारु प्रति बोधना । ज्यां० १० । गोतम तिर गया तीरपे सोलह आपमा सोभे सीरीकारतो । वउ सुरती च्यारु सींवसें । सारण वारण धारण हारतो । ज्यां० ११ । पसमे प्रणाम कीजीए । हरक धरी हरकेसीन पाए तो । चीत मुनीसर चीत धरु । एकु करे आद छउ सुनीराय तो । ज्यां० १२ । आहेडे पर चढ आवीयो । संजेतीराय सेटया गुरु पाए तो । संजम लेइ सुत्र भण्यां । एकले च्यार कीयो मुनी राय तो । ज्यां० १३ । खत्री हो राय चरचा करी । डिड करे समकीत देइ दिस्टंततो । जीन मारगमांए दीपता । कुण २ संत हुं वा महंत तो । ज्यां. १४ । दसाणभदर वीर वंदता । मान गाल्यो सक इंद्र देवतो । संजम लेइ सामा मड्यां । हाथ जोडी करे चरणारी सेवतो । ज्यां.

१५ । राय करकंडूजी आद दे । कारण देखी मने धरयोरे वेरागतो । चकरी से दस मुगते गया । भरीयां भंडार रमण रीध त्यागतो । ज्यां. १६ । आठुंइ करम खपाएने । आठुंइ राम लीयो सुख मोखतो । सोलइ देसारो सायवो । राय उदाइ मन धरयो संतोषतो । ज्यां. १७ । सुगरीव नगर सुवावणो । राज करे बलभद्र-रायतो । मिरगावती पटराणी । पुत्र जायो बहु आणद थाएतो । ज्यां. १८ । जोबननी भय जाणने । ब्यावकीयो देखी सरखीजी जोडतो । महलामें सुख भोगवे । दास दासी राण्यां पूरे मन कोड तो । ज्यां. १६ । एक दिन झांख छे जालीयां । आवता दीठा छ-कायारा नाथ तो । रुप देखी विसमे थया । जाती वो समरण जाणी पाछली जाततो । ज्या. २० । धिक पडोरे संसारने । राग छोडी मने धरयोरे वेराग तो । मात पीताजीसु वीनवे । अनुमत दीजीए । मुज वडा भाग तो । ध. २१ । जाव जमाली जीम नीसरयां । जनम मरण दुख काटवा पास तो । संजम लेइ सुत्र भण्यां । तप कर पामीयो सीवपुर वास तो । ज्यां. २२ । मुनीए अनाथीजी भेटीया । सेणकराय तिहा समकीत धार तो । जंवुजी हुवा चरम केवली । पाछे सु जड गया मोक्ष दवारतो । ज्यां. २३ । और अनेक केइ हुवा । तेरइ ढालामें गणो वीसतारतो । मात पीता जिनराजरा । मुगत गया केइ समकीत धारतो । ज्यां. २४ । नून इदक जे में कयो अलप बुद्धि नहीं अकसर ग्यान तो । माफी करी गुनो वगसीए । ग्यानीरा वचन करुं प्रमाण तो । ज्यां २५ । तेसट साल सुहावणी । गूथी छे मुनीयतणी गुण माल तो ।

जेपुरमांए जडावने । चरणारो सरण होवो त्रिकाल तो । ज्यां०

## दसाणभद्र राजानी ढाल लीख्यंते

दोहा । निमसकार नव पद भणी । होज्यो वारंवार । उत राधेन अढारमें । दसाण भद्र इदकार । १ । कैसु ढाल वणायने । सुणजो चित लगाय । हारचां नही सुरपत थकी । दीनो जग छीटकाय । २ ।

ढाल । कर असवारी राय संचरयांरे । आयो वन मझार हो । सुंजाण नर । विरामण इत उत डोलतोरे । भरमायो निज नार हो । सु० कोइ चतुर बीच्यारी ने चेतजोरे । १ । नरप पूछे तूं किम भमेरे । कहनी थारो भेद हो । सु. हाथ जोडी कहे रायनेरे । रुसगया हम देव हो । सु. को. २ । भेद सुणी नृप चिंतवेरे । देखो इणारो राग हो । सु. तिरण तारण बीतरागनेरे । हुं भुल गयो निरभाग हो । सु. ३ । देव रागी गुरु लालचीरे । खरचे लाखां कोड हा । सु. गाढी इणारे आसतारे वनमें भटके घर छोड हो । सु ४ । नीरागी निर लालचीरे । मारा श्री गुरु देव हो । सु. तो हीव ढील करुं नहीरे । जाय करुं ज्यांरी सेव हो । सु. ५ । चतुरंगणी संन्या सजीरे । अंतेवर लेइ लार हो । सु० आडंबर कर आवीयोरे । करवा जीन दीदार हो । सु. को. ६ । हरक हीएमावे नही रे । धरतो धरमनो राग हो सु. चरण भेटयां जिनरा-

जना हो । मारा मोटा भाग हो । सुजाण नर । को. ७ । सनमुख बेठा वीरनेरे । बोले बे कर जोड हो । सु. माजी मैं किणइन बंदीयारे । कुण २ करे मुज होड हो । सु. को. ८ । सक इंद्र मन चिंतवेरे । फोगट धरे अभीमान हो । सु. गरव गालु हिव एहनोरे । किण वीध रहसी गुमान हो । सु. को. ९ । देवे सीन्यां वीसतारनेरे । आप चाल्या सुर राय हो । सु. आया मानव लोकमेंरे । दल बादल लीयो छाय हो । सु. को. १० । इंद्रतणी रीध देखनेरे । तुरत पाम्यो चीमतकार हो । सु. मान रखे किम मायरेरे । लेश्युं संजम भार हो । ११ । आवो देवा सेवा करोरे । लागो हमारी जोड हो । सु. हुं रीध त्यागू आपणीरे । थावी करो मुज होड हो । सु. को. १२ । या तो सगत न मायरीरे । थे मानी मछराल हो । सु० सूरपणे संजम लीयोरे । गरव हमारो दीयो गाल हो । सु. को. १३ । श्रौंर कहो तिमही करुं रे । थे मुज मस्तक मोड हो । सु. मैं हारयो तुम जीतयोरे । पाए पडयो कर जोड हो । सु० को. २४ । धन श्री गुरु म्हावीरजीरे । धन २ धारी माय हो. । सु. निज अपराध खमायनेरे । आया जिण दीस जाय हो । सु. को. १५ । तेसट साल जडावजीरे । जेपुर सेखे काल हो । सु. प्रथम चेत शुदी सप्तमी करी संमपूरण ढाल हो । सु. को. २६ । श्रोछो इधको जे कयोरे । सुत्र सेती विरुध हो । सु. मीछामी दुक्कडं तेहनोरे । कर्वीजन कीज्यो सुध हो । सजाण. को. १७ ।

## मेगरथराजाकी लावणी लीखंते

देसी गोपीचंदरा ख्यालरी छे। संतनाथ भव पाछले सरे। मेगरथ नाम भूपाल । समगत धारीपर उपगारी प्रजानो प्रतीपाल । सरणे आयो न मूकीए सरे । लीवी प्रग्यां झाल हो। मेगरथ माराजा । पर उपगारी तारी आतमा। धन धन म्हाराजा। जिनपद पायो प्रमातमा । आंकणी । १ । सक इंद्र सोवा करीसरे । धन मेगरथ राजान । जीव दया ज्यारे दिल वसीसरे देवे सुपात्र दान । दोय देव नहीं सरधीया सरे । आया धर अभिमान हो । में २ । एक वणयो पारेवडो सरे । कुजो हंसकथाए । लारे लागो आवीयो सरे। आगे पखी जाय। मै भिरांत मरणा थकी सरे । धसीयो खोला मांय हो। मे. ३ । धुंजतो ढक राखीयो सरे। देथिर मारी ओट । ततखिण आयो पारधीसरे । करवा लागो चोट । हलकारा सामा हुवे सरे । ले हातामें सोट हो । मे० ४। धीर पसु समजाय द्यो सरे । नही जवरीरो काम । ज्यो चावेसो मागल सरे । मत लइणाको नाम । कोल देस्यामू मागीयो सरे । लेले हमपे दाम हो। मे० ५ । भख माहरो पंखीयो सरे। छोडो चक्र सुजाण । गणा कसटसु लावीयो। मारे नहीं दाम सुं काम । भूखा मरता वापजीस । मारी नीकल जायली जानजी । मे० ६ लावो मेवा सुकडी सरे । ओर घणा पकवान । तिरपत होयने जीमले सरे । इम वोले म्हीराण । सरणागत किम दीजीए सरे। ए मुज जीवन प्राण हो । मे० ७ । नही ल्यू मेवा सुखडी सरे। नही भावे पकवान । मंस आहारी कुल आचारी । किम छोडू म्हीराण ।

ज्यो नही छोडो एहने सरे । तज देस्युं मुज प्राणजी । मे० ८ । फांसमंस मगाय दांसरे । छोड हमारी केड । करमा पच थूथायरे सरे । मत कर इणरी छेड । म्हा जीवंता नही मीलस । ज्यू प्रवत आइ तेड हो । मे० ६ । दयावंत तू नाम धरावे । करमेंल्या प्रपंच । मंस परायो धामता सरे ।.खरच न लागे अंस । करुणा कर साचो तुज जाणुं । देनी थारो मंसजी । मे० १० । भली बीचारी भोलीयोसरे । मुज हीतकारी बोल.। ल्यात्रो कटारी पाछणो सरे देउं मंस मुज छोल । हस कर हंसक बोलीयो सरे । लेउं बराबर तोलजी । में. ११ । ल्यावो त्राजूताकडी सरे । पंखीधर दो मांय । काट २ ने मांस आपरो तकडयो दीयो भराय । नमी न डांडी दोलतां सरे । पंखी नीचो जाएजी । मे० १२ । देय हमारी धर दूसारी और नही मुज जोर । स्हर लोक सब भेला हुइने । करवा लाग्या सोर । देथ कान काड घो सरे । ए ठग बाजी चोर हो । मे. १३ । अंतेवर बिल बिल करे सरे । रोवे दासी दास । आयो कठासु पापीयोसरे । करे हमारो नास । सबा लोक सासे पडयास । अब किसी जीवणरी आसजी । मे. १४ । बिध बिध कीनी पारखा सरे । चलीया नही लीगार । देव रुप प्रगट थया सरे । सुरजनो जलकार । हाथ जोड पाए पडयां सरे । धन तुम छो अवतारजी । मे० १५ । सुरपत प्रसंसा करीस । मे मानी नही लीगार । प्रकस्या करवा आपरीस । मैं दीनो दुख अगाद । सुणीया जेसा देखीयासरे । खमो खमो मुज अपराधजी । मे० १६ । देव गया दिवलोकमें सरे । करवा जै जे कार । संगतथी सुधयां

वखाणकीजी । वाणी इमरत रस वरसावे । मुखमुकरमें जीभ द्रसावे । सुण २ रुम २ हुलसावे । व. । आंकणी । १ । संप्र-दाय श्री हुकमपरीजी । श्री श्रीलाल पूज प्रतापी । आतम संजममें थिर थापी । कुमन कलेसतणी जड कापी । व. २ । देवी लालजी दीवाकर लोकमेंजी । ज्यारी सूरत सदासिव मोखमेंजी माणक । माणक ग्यान नगीना । वंधव दोनू मात सगीना । चुनीलाल जडयां जिम मीना । व. ३ । सामी सुमती अराधे । गुपती गोपवेजी । निरमल पंच महाव्रत पाले । दोषण अहार तणा सव टाले । जिन मारगने जोर उजाले । व० ४ । कोई स्वमत परमत धारणाजी । वहुविध आगम अरथ पिछाण । विधसे भिन २ करे वखाण । गाले पाखडयांरा मान । व. ५ । ज्यारी जोग मुद्रा हद सोवणीजी थांरी सावली सूरत मनमोवणीजी । देख भवकजिन आणंद पावे । निरखत नैण तिरपत नहो थावे । सुरगुरु आप हरक गुण गावे । व. ६ । दीपे ससि जिम सीतल आत्माजी । नित ध्यान धरे प्रभातमाजी । गुण गंभीर दया निध धीरा । निज कुल मांय अमोलक हीरा । संत सरव प्यारा प्रभूजीरा । व. ७ । देखो वडीए पुन्याइ जेपुर स्हर कीजी । मीलीया मुनी-वरजीरा व्रिंद । द्रसण मीठा मीश्री कंद । दिन २ वरते इदक आणंद । व० ८ । समत १६ सें चोसठ भलोजी । लाग्यां धर्मध्यानरा ठाठ । तपस्यां वायामें गेघाट जडाव जनम मरण धो काट । व. ६ ।

## मुनीवरजीरा गुण लीख्यते

देसी । प्यारा लागो सुद्रमा स्वामी । मुनी गुण सतावीस धारी । नित ले नीरदोषण अहारी । छती रिध संपदा त्यागी ।

११ । प्यारा लागे संत सोभागी । आंकडी । सतरा भेदी सजम पाले । नीचो देख देहखपग ढाले । परमाण वचावण रागी । प्या० २ । तप तेज करीने दीपे । सामा आयां शीसा जीपे । सुरवीर वडा वेरागी । प्या० ३ । ज्यामें ग्यानादिक गुण भारी । तीरण तारण पर उपगारी । सुभ ध्यान धरे म्हाभागी । प्या० ४ । जडाव जेपुरमें गावे । सुण भविकजीवारे मन भावे । मैं तो मुगत रीजमें मागी । वाला० ५ ।

## देवीलालजीरा गुण ली०

देसी । पनभी मूडे बोल । वडी पुन्याइ सिंघ सरवनी । वंछित कारज सरसेरे । म्हर करी मुनीवरजी पधारया दीली हुंसद्र-सेरे । आज रंग वरसेरे आज रंग० । म्हारो वाणी सुण २ हीवडो हुलसेरे । आ० आंकणी । १ । पाट वीराजे घन जीम गाज । वाणी इमरत वरसेरे । स्वात बूंद जिम सारी पुरखदा । श्रवण फरसेरे । आ० २ । वाणी प्यारी न्यारी २ जिम दरपणमें दरसेरे । सुण २ श्रावक प्रश्न पूछे । वडी कदरसेरे । आ० ३ । तपस्यां भारी । वहु नर नारी । कर कर काया करसेरे । भव भव संचित करम खपावे । सिव रमणी वरसेरे । आ० ४ । जिन वाणी सुण सुर सुख पावे । भव जल पार उतरसेरे । जेपुरमांए जडाव कहे । जो मन वस करसेरे । आ० ५ ।

## कका वतीसी ली०

दूहा । सोरठो । वे कर जोड जडाव ले सरणो जगनाथरो । करु वतीसी फेर । विगम व्याध दूरा हरो । १ । कका कांइ कर

चल्यो । लेसी कांइ लार । धंधामें धायो फीरे। जासी नरभव हार । १ । खखा खाली जात हे । विगतामें दिन रात । विन मुतलव बोलो मती । याद करो जगनाथ । २ । गगा चुप रहीजी ए । दोष पराया देख । जोवो अपणी आत्मा । ओगण भरया अनेक । ३ । घघा घर तेरो नही । तूं घरको नहीं होय । घर घर करता चल गया । राजा राणा जोए । ४ । डडा रडके कांकरो । आंख डाढके बीच । कूवचन रडके कालजे । कूकर्म रडके नीच । ५ । चचा चतुराइ करे । सावत निभन कोय । छेडो लेतां सींदडी । मूड़ कुत्ती जोय । ६ । छछा छाने राखसी । कितव अपणा कोए । माड़े उगड जावसी । तसकर तुंबा जोए । ७ । जजा जुलम करो मती । दुरबल दुखीया देख । थिर नहीं समपत सायबी । वैरी होए अनेक । ८ । झझा झक मारो मती । गली गलीकमांए । लंपट बाजे लोकमें । इजत रहवे नांय । ६ । नना निजपर आत्मा । एक सरीकी जाण दुख किणने देणो नही । दया भाव दिल आण । १० । टटा टालो किजीए । नीच कुपात्र देख । मत छेडो पत जावसी । ओगण होय अनेक । ११ । ठठा ठग ठग खात हे । माल पराया आण । भारी पडसी आतमा । जम लेसी विच ताण । १२ । डडा डायो होएने । कीनी काय सयाण । पूंजी खोइ पाछली । नवी न करी अयाण । १३ । ढढा ढिग बैठा नहीं । सत संगतमें जाय । धुकतो तोले वाणीयो । ए ओखाणो थाय । १४ । णणा नेणा भुलायने । सब जग लीनो मोए । समपत वेस्यां सारखी । सुध बुध देवे खोय । १५ । तता तिरणो अपणे हाथ है । ज्यो सब राखे मन । सतगुरु साखीदार हे पावे सिव

सुख धन । १६ । थथा थानो उतावलो । खिण २ आउ जाय । करणो वे सो अवही करले । पाणी अद्बीच नाव । १७ । ददा दोरीनांकरे । देइ तप जप मांए । खाणे पीणे पहरणे । सारा पहली जाय । १८ । धधा धनके कारणे । भटके वेर कुवेर । मारे ठग न चोरटा । पटके उंडी फेर २० । नना नोपत मरणकी वज रइ च्यारुं खुंट । वेरो लाग्यो कर्मको । किण विधि जासी छुंट । २१ । पपा पीडा पारकी । सुखी न जाणे कोय । पीते सोइ वेदहे । अलखरु ल्यो जोय । २२ । फफा फाटा फुटरा । वादल चीणी अनार । तीन् फाटा अतवुरा । नेत्र कटक कुनार । २३ । ववा वणजा वावरो । ज्यांइ वधे कलेस । सेंणो वोले समज जने । देवे हित उपदेस । २४ । भभा भारी होत है । निस दिन आठुं कर्म । हलको करले आतमा । ज्यो राखी चावे सर्म । २५ । ममा मुरजी राखीए । मातपिता वड भिरात । तीन विसेपे जाणीये । देवगुरु अपणो नाथ । २६ । याया जगमें देखलो । अपणो सगो न कोय । सुखमें सव कोसी रहे । दुखमें दूरा होय । २७ । ररा रेखा कर्मकी । उदे हुवा दुखदाय । राजा रंक फकीर औलीया । सवकुडे भुगताय । २८ । लला लेखो मागसी । कर्म कलेरी जाग । रोयाइ नही छुटसी । लेसी पल्लां ताण । २८ । ववा वडा न वाजीए । स्हरगी पथर चोट । तलसी अदविच तेलमें । फेर काडसी खोट । ३० । समा संका राखने । कीजे काम विचार । विन संका विगडयां गणा । कुसिप कुपात्र नार । ३१ । हाहा हस हस वांधीया । कर्म निका चित खूब । विन भुगत्यां किम

छुटसी । जासी ग्रभव द्रूव । ३२ । १६ सें अठावने । जेपुर कटले वास । कका वतिसी करी । दुतिय सावण मास । ३३ ।

## देवी लालजीका गुण लीख्यते

देसी । मानव भव लादो राज लादो । भूल मत जाज्योजी गुरु माने । विसर म० मैं अरज कराछा थाने । भू. । आंकडी । १ । जी आठ पहर हिरदामें राखु । चित वसीयो चरणामें । जी० म्हर करी मुनीवरजी बेगा । दरसण दीज्यो माने । भु० २ । जी जिनमारगने जोर दीपायो । संपरयो संता में धर्म ध्यानका ठाठ कराया रंग रंग छे थाने । भु० ३ । जी हरक हीयामें जवइ होसी । आयां सुणस्यां थाने । तेइ सरज भलो उगसी । वाणी सुणस्यां काने । भु० ४ । जी दील दरीयो भरीयो तुम ब्रिहे । खारो लागे माने । अंतराइ पूरवली आइ । दोस नहीं कोइ थाने । भु० ५ । जी संत सोभागी मैं निरभागी । याद करे कुण माने । जैपुरमांए जडाव अछता । दीया ओलंवा थाने । भु. ६ । जी खमो २ अपराध हमारा । माफी दीजे माने । खिम्या धर्म तुमारो स्वामी । धन धन सब संताने । भु. ७ ।

## समाइकका बतीस दोषरी ढाल लीख्यते

राग । सुण चंदाजी श्री मंधीर परमातम पासे जावजो । ए देसी । सुणो श्रावकजी दोष बतीसुं इ टाल समाइक कीजीए । चित लायकजी समता रसरा प्याला रुच रुच पीजीए । आंकणी । १ । विना फैम घरसुं चाले । जीवादिकने नही नाले । अे इरज्यां मैं

टोटो घालेजी । १ । सु. विन पूंज्यां आसण वेठे । जीव जंत दव जाए हेटे । ए राजतणी काडे वैंठे । सुं. २ । मोडा आवे सांज समे । इरयावइ नही पडिकमणे । यो पडिकमणो प्रमाद गमे । सु ३ । नाम समाएक पछकलइ । करण जोगरी खवर नहीं । या सामायक किण रीत भइ । सु. ४ विन कारण इत उत डोले । विन भाजन संका खोले । ए विन पुंजी धरती ढोले । सु. ५ । आरत रुद्र ध्यान धरे । धर्म सुकल कुण याद करे । संसार समुद्र केम तिरे। सु. ६ । भणवो गुणवो नही सुवावे । वाता विगता लग जावे । याने सीखंता शंका आवे । सु० ७ । विन समज भाषा बोले । सावज निरवध नही तोले । ए अंवमें कीचड ढोले । ए केसरमें गोवर गोले । सु. ८ । द्रव समाइक सुध नही । भाव समाइक मान लइ । या विन माता वेटी जाइ । या पिता विना पुत्री जाइ । सु. ९ । एक मोरथ नित सुध कीजे नरभवरो लावो लीजे । भला भ्रुगतीरी साइ लीजे । भला दुर्गतरा ताला दीजे । सु० १० । जडावजी जेपुरमांइ । हित सिख्यांरी ढाल कही । थे समज लीज्यो बाइ भाइ । कोइ राग धेगरो काम नहीं । सु. ११

## पालणो लीखंते

देसी । मारी रंगरली । नेणारी नींद किसनजी हरी । जनक सिधारथ । तिसलाजी मांए पालणो वंधाव गणो हरख उछाव । हीरालाल जडयांजी । चुनीलाल जडयो । प्रभुजीरो पालणो । अजव घडयो । आंकडी । १ । रतनारो पालणो न रेसम वाण ।

मांए पोढावे प्रभु जीन आण। हरा. २। सोनारा स'चटा ने मोत्यांरी लूम। किलक २ जाणे तोड लेउ झुम। ही० ३। पन्नारी पनडी न पाटूरी डोर। रीमजिम २ नाच रया मोर। ही. ४। देदे हीडोल्या झुलावछलाल। गाव हालरीयान होय रया ख्याल। ही० ५। धन २ तुं तिसलादेजी मात। गोद खीलाया त्रीभूवन नाथ। ही० ६। जेपुरमांए जडाव कहे। दिन उगे प्रभुजीरा चर्ण ग्रिह। ही ० ७।

## मुनीराजना गुण लीखंते

दोहा। पंच पद प्रणामी करी। गोतमजी गुणवंत। गुण कारवा मुनीराजना। सो मन इदकी खंत। १। देसी। हांरे मारी धर्म जीणंद स'लागी पूरण प्रीत जोए। जाउ'रे हुं जेने घर आसा करीरे लोए। हांरे इण म. मंडलमें पूज श्री रतनेस ज: कुवारे प्रतापी। सुत्र केवलोरेलो। हाज' ज्यांरो नाम सयणो नहीं देख्यां नेण। निहालजो म्हम.रे सण।'। हरके रुआवल.रेलो। १। हांरे ज्यारे पाट वीराजे पूज श्र िनेचंद्रजो। सातल: साभाग: चन्ण त्रनारे लो। हाजो ज्यारी म्हर नोजरसुं मोलाय मुन त्रिंद्जो। दासे रे यो स्हर सदा रलीयावणोरे लो। २। हारे कांइ धन दीहाडो। वडा हमारा भागजो। तीनूंरे संप्रदा समागम एखटोरेलो। हारे एकलेण वीराजे पाट। पुरखदा ठाठजो। स्मतरे सुत्र वेला लाग्यो चोसटोरे लो। ३। हारे कांइ सास्त्रधारा वरसे इमरत नोरजो। पीतांरे त्रिपत नहीं होवे आत्मारे लो। हांरे निज श्रवण सुणतां प्रगटे प्रेम वैरागजो। समकितरे नीरमल। प्रखे प्रमातमा रे लो।

४ । हारे कइ दीपरइ जीम केसी गोतम जोडजो । रवि ससिरे मानु एकण मंडलरेलो । हारे कांइ च्यारु तीरथ बैठ सनमुख आए जो । देखीरे पाखंडी दूरांथी टलेरे लो । ५ । हारे सुणी समोसरणकी चरचा घेत वयानजो । तोपिणरे दीसे थोडीसी वानगी रे लो । हारे कांइ तन मन हुलसे । देख मुनी दीदारजो । वीगसरे अंग कथा सुणी गरु ग्यान ली रेजो । ६ । हारे कांइ जीमी पुरखुदा । उठ सकै नहीं कोएजो । आसारे लगरइ जिम चात्रीक म्हेनी रे लो । हांरे कांइ नंदी सूत्रमें सुरता चवदा भेदजो । चुंगा जीम चूपे रस जाणो जेइनीर लो । ७ । हांरे कांइ सरल समावा । दीसे व्होत मुलामजो । गज गतिरे चावामें आए । फरु कीयोरे लो । हांरे मुनी ग्यान गुफामें करता वोहत उधाजजो । जाणेरे सादूलो सिंघ भद्दकीयोरे लो । ८ । हारे ज्यारी कंठकलासु पीयार ग्यान भंडारजो । वाणीरे सुहाणी कीरज्युंरे लो । हांरे कांइ परमधीर गंभीर गुणरी खानजो । निरमल नीरागी गंगा नीरज्युंरे लो । हाजी थांरो तप जप संजम अखे रहो आचार जो । दीपावो जिन धर्म कर्मसुं जीननेरे लो । हांरे में तो अभिमानी अग्यानी निज कुपात्र जो । जिम तिम जी तारीजे मो 'अवनीतने रे लो । १० । हाजी मेंतो कठ लग गाउं । गुण अनंत अपारजो । सुगरु पोते जो पार न पामीए रेलो । हाजी मेंतो अलप वुधी । अजाण मान मद छोडजो । लूल २ रे कर जोड चरण शिर नामीए रे लो । ११ । हांरे कद जैन धर्मरो सदा अखंडत जोत जो । रहजोरे मुख साता व्यांरु संघमेंरे लो । हांजी कांद जेपुरमांए

जडाव गुंथी गुण मालजो । पहरोजी बुधवंता सोभ अंगमैरलो । । १२ । कलसः प्रसाध श्री गुरुदेवजीको । गुणवंतारी दासए । म्हर कर मुज मुरख उपर । दीजै मुगत निवासए । १ ।

## मुनीराजना गुण लीख्यते

राग पीचकारीनी छे । सुमत सीख हिरदामैं मेली । कुमत कुपात्र दुरी ठेली हो । माराजा थांरी कीरतडी गरणाइहो देसा छाइ वो० आकडीः । १ । कीरतडी थांरी च्यांरु दीस फैली । कोड जुगां जुग रहलीहो । मा. २ । ज्ञान गुपत थांरो ग्यान अपुरव । सीप सुडारुनीफेलीहो । मा. ३ । आतम साधै । प्रवचन अराधः छोड दीयो प्रमादै हो । मा. ४ । संजम पालो सव दोपण टारो । जिन मारग उजवारो हो । मा. ५ । ६४ सालनै भरचोरै भाद्रवो । हरक २ गुल गावै होः । मा. ६ । वे कर जोड जडाव जेपुरमें । चरण सीस नमावै हो । मा. ७ ।

## सभ्काय लीख्यते

देसी । जीव रे तुं सील तणो कर संगः जीव रे तुं मत कर आरत ध्यान । विन भुगत्यां नहीं छूट सीरे ए निश्चे कर जाण । आं. जी. १ । वांधै सोइ भोगवैरे । कर्म सुभासुभ दोए । सुख दुख रेखा आपणीरे । टाली टल्ह न कोए । जी. २ । हस २ कर्मज संचियारे । पर भव जाए वलाए । अव तुं आयो सांकडैरे । नास कठी न जाएजी । ३ । पोषी अपणी आतमारे । प्राण पराया लूंट वदलो लेसी चोगणोरे । किण विद जासी छूट । ४ । कर्म करै तु

एकलोरे। सवही नर सुत्राए। सुखमें सबको सीरछैरे। दुखमें दुरा जाय: जी. ५ । निश्वल जाए निकारणरे। लूटया छ कायारा भाण। सब लपखे संतावसीरे। करसी खाचाताण। जी. ६। रोयाइ छोड़े नहीरे। कर्म कलेसी जाण। काण न राख केहनीरे। लेसी पलला ताण। जी.। ७। बेरकदे आछो नहीरे। उदह हुवा दुखदाय। कएक जाणे केवलीरे। कोइए न आडो थाए। जी. ८। जेपुरमांए जडावजीरे। छासठ वद वैसाख। इम समजाव जीवनेरे। निज आतमरी साख। जीव० ९।

## वीनती लीख्यते

देसी। वेग पधारो म्हलथी। वेग पधारो हो म्हा मुनी। दीजे द्रस दयाल। तारक विरद वीच्चारने। वेगी करजो संभाल। वे० आंकणी।' १। गाज अवाज हुवा थका। हरक दादर मोर। इंद्रके भाव नहीं। युंद्र मचायो सोर। वे० २। कीनो अवीनय असातना। हे छ कायारा नाथ। पखीए चोमासी ने छमछरी। खमाउं जोडी हाथ। वे. ३। मुरख जाण माफी करो। अवस पधारो आप। वालक दुखदाइ हुवे। पटक नही मा वाप। वे. ३। वडा वीचार वडो करे। देखे नहीं परदोप। अवगुण सब अलगा करे। उपजावे संतोप। वं० ४। आवणरी आसा घणी। पेर करे। उपजावे संतोप। वं० ४। आवणरी आसा घणी। पेर चले नही लेर। पर उपगारी आप छो। फरसो जेपुर स्हर। वे० ५। थोडा में गणी वीनती। मानो चत्रु सुजाण। जेपुरमांए जडावने दीजो दरसण आण। वे. ७।

## चनणमलजी म्हाराजाना गुण लीख्यते

देसी प्यारा लागो सुद्रमा सामी । मुनी वीचरत जेपुर आया । सारा संतनकुं संग लाया । कर जोडी पड नित पाया । अब आणंदरंग वरसाया । आंरत । भव जीवांरे मन भाया । आं० १ । म्हाने त्रस २ त्रसाया । इतना मोडा द्रस दीराया । देखी रोम रोम हरखाया । आ० २ सेवग न कइए विसारो । ऐसो विरध नही छे तुमारो । प्रतिपालक नाम धराया । आ० ३ । कीरपा कर वाणी सुणावो भव २ की तपत मीटावो । नरनारी व्होत उमाया । आ० ४ । जडाव जेपुरके मांइ । दरसणकी दोलत पाइ । छासठ साल हरख गुण गाया । आ० ५ ।

## पार्सनाथजको स्तवन ली०

देसी पनजी मुडे बोल । भामा सुत पत राख हमारी । हुं छुं सेवक थारोरे । भव दुख भंजन । नाथ निरंजन । ब्रीद वीचारोरे । १ । पार्स प्यारोरे पा० एक पलक न विसरु नाम तिहारोरे । पा० । आंकणी । तुं हुन आत तात वड विराना तुं मायव सिरदारोरे । तूं प्रमेस सुण अलवेसर । द्रद्र हमारोरे । पा. २ । काटो कर्म भर्मकी बेडी । जीम हुवे छुटकवारोरे । लीनो सरण चरणको प्रभुजी पार उतारोरे । पा० ३ । आठ पहर हिरदामें राखुं ध्यान एक प्रभु तोरोरे । तोइ न रीजे भीजे प्रभु । तुं निपट कठोरोरे पा. ४ कामण गारो । जगतसुं न्यारो । मनहर लीनो मारोरे । ल्हो चमक जिम प्रीत लगावे । कपटि ठगारोरे । पा. ५ ।

पतली छाछ खमे नही पाणी। रह न सके मन मारोरे। जीणथी उंच नीच केइ बोलू। आ संगायत थारोरे। पा० ६। चाकर विन कुंण करे चाकरी। विन चाकर पत केरोरें। इम जाणी मोए हाज राखो। कर काम भलेरोरे। पा० ७। गरु मुख नाम सुण्यो प्रभु तेरो। अब कीजे दीदारोरे। म्हर करी मुज सामी सायव। निजर गुदारोरे। पा. ८। सुध पख सावण पहलो प्रभुजी। जेपुरस्हर मजारोरे। छासठ साल जडाव करे नित। भजन तुमारोरे पा० ६।

## जीवाजीरी ढाल ली०

देसी। मैं काजल रोपण लीयो। हांरे जीवा दीन गमायो खायन। तूंतो रात गमाइ सोएरे। जनम प्रमादे हारीओ। तुंतो वेठो कलंदर होएरे। चेत सके तो चेत जा। थारो चीडीया चुगइ खेत रे। चेत तोने सतगुरु हेला देतरे। चे०। आंकणी। थारो कुटम वण्यो सब स्वारथी। थारो पुन खजानो खातरे। रीतो कर छिटकावसी। थारी कोए न पूछे वातरे। चे० २। हांरे थाने जोग मील्योरे दस वोलरो तुंतो पुद्गल भर्म मीटाएरे। दुलभ नर भव पामीयो। थारे पडीयो पासे डावरे। चे० ३। आतो पाच पची दोइ मीली। तीजा मीलीया छे पाप अठाररे। दगो करी धन लुंटसी। थारी कूण चढला वाहररे। चे. ४। तुंतो वीस कपाए करपातली। तुंतो भावना मन सुध भाएरे। समगत सुध अराध ले। थारो जनम मरण मीट जाएरे। चे० ५ हांरे जीवा मोए निद्रामांए पडो। थारे सतगुरु चोकीदाररे। हेला देए जगा-

वीयो । तूं तो अवइ चेत गीवाररे । चे. ६ । हारे तोने धर्म चिंतामण पामीयो फलीयो कलप विरछ चिता वेलरे । ग्यान दीयो घटमें कीयो । यातो तेल जीतैइ खेलरे । चे. ७ । थारे सरधा सुध परुपणा । यातो किरीयामांए कसुर । तीनूइ सुध अराध ले । थारे सिव सुख नही छे दूररे । चे० ८ । ओगणीस वरस छासटे । वद पख सावणमांएरे । जेपुरमांए जडावजी । इस आतमने समजाएरे । चे० ९ ।

## सुमति कुमतिको चोढाल्यो लीख्यते

दोहा । देव नमु अरिहंतने । सिध सकल भगवंत । आचारज उवभायने । प्रणमूं संत म्हंत । १ । सुमत कुमत दो अस्त्री । प्रीतम चेतनराय । मांहो माइ जगडती । समकित साख भराय । २ । राग । कोयल वीलीजी हजारी ढोला वागमें । घर आवोजी वाइजीरा म्हलमें । ए देसी । सुमती घटमें आवे । या भात २ प्रचाव । पिण मूलदाए नही आवे जीवन । समाजवोजी मारा चेतनराजा जीवने घर लावोजी मनमोवन स्वामी जी. । आंकणी । १ । कुमत सीख नही लागे । या उठ २ ने आगो । या कुमती प्यारी लागेजी । सम. २ । आठ पहर रंग भीनो । ना जाणुं कांइ कीनो । या भव २ में दुख दीनोजी. । स. ३ । छाने २ आवे । या चेतनने भरमावे । आ नरगनीगोद रुलावेजी. । स. ४ । पुन खजानो खाती । या पुदगल कर सराती । आ उलटी चाल चलाती जी० ॥ सम० ५ ॥ या ले कामणगारी ॥ केइ ठगीया नर संसारी ॥ सीखावण दे दे हारी जी० ॥ सम० ६ ॥ धोको दे बिल

मावे ॥ मो मदका प्याला पावे ॥ आ बंदर जेम नचावेजी० ॥ स० ७ ॥ कुमत लपेटा लेती ।मुगतीसु घाले छेती ॥में देउ सीखावण केतीजी० ॥ सम० ८ ॥ कुमत कपटनी कुंडी ॥ या पटके दुरगत उंडी॥आ अकल सीखावे भूंडीजी० ॥सस०६॥ जडाव जेपुरमें गावे ॥निज चेतनने समझावे ॥जीत आतमराम रमावे जी० ॥स० १०॥

दोहा ॥ तकड भडक कुमती कहे ॥ करने आख्यां लाल ॥या कुंण आइ पापणी ॥ तूं बेठो घर में घाल ॥ १ ॥ चाढ मागती आयने ॥ बण बेठी पटनार॥ नीकल मारा घर थकी ॥ नहीतर करुं खुवार ॥ २ ॥ परणी पिंडडो ल्यावीयो ॥ पांच पंचारी साख ॥ जाणुं किरतबथाएरा ॥ किम बोले उंचे नाक ॥ ३ ॥ मुख मीठी हिरद कठण ॥ नही थारी प्रतीत॥ बाप भाइ छोड नहि ॥फिर २ हुइ फजीत ॥ ४ ॥ चेतन कइ सुमती सुणो ॥ कांइ सीखाउ तोए ॥ मत छेडो पत जावसी ॥ खमे सोभा होए ॥ ५ ॥

## ॥ ढाल वीजी ॥

घोडी तो आइ थारा देसमें म्हाराजा ॥ए देसी॥ आइछुं अरज करवा जाणी ॥चेतनजी॥ आप छो चतुर सुजाण हो ॥ गुणवंता ॥ एसो काम न कीजीए मारज ॥ लोक हांसी घर हाण हो ॥गुण० ॥ कुमत संग छोड द्यो चेतनजी ॥ आंकणी ॥ १ ॥ परणी बरणी छोडने ॥ चे० कुमतसु कर रया केलहो ॥ गु० ॥ चित चोरी मन खेंचीयो ॥ म्हा० इणसु रया मन मेलहो ॥ गु० ॥ कु० ॥ २ ॥ या सुंघी घुल पुरसीयो॥म्हा में सुं पुरस्यो तेल हो गु० दोस न दीजे ओरने ॥ पीत० पराएल बदरो खेल हो ॥ मत०॥कु० ३॥

सुण पीता हमारा सु० । आं० १ । मो मछराल दुष्ट इम बोले ।
करने आख्या राती । देख हवाल करुं चेतनमें । धुजावे किम
छातीजी । सुण सुता हमारी मान मोह ए चेतन रायरो । सुण
पुत्री हमारी गरब गालु ए चे० ।२। सात कर्मसु सला बीच्यारी ।
राखीज्यो हुसीयारी । देखो अब तुम हाथ हमारा । केसे करां
खुवारीजी । सुण भिरात हमारा मान मो० ३ । क्रोध मानका दीया
मोरचा । त्रिसना तो पथराइ । पाप अठारा दारु गोला तोपा दीबी
भराइजी । सुण० ४ । राग धेग सिन्यांका नायक । लोब मुसाय
पसारी । कपट उकील तुरत भीजवायो । करो बात सब जारीजी
। सुण० ५ । पुत्री हमारी केम बीसारी । दुजी परण्यां नारी
। सनमुख आवो । चूक बतावो । देवो सबूती सारजी । सुण
चेतनराजा पुत्री प्यारीरे मारा जीबसे । ६ । कुसी हमारी परण्यां
नारी । करस्युं मनको जाण्यो । हुस हुवे तो चडकर आवो ।
चुकूला नहीं टाणोजी । सुण दुत भुतड़ा जाजे सुदोरे कहीजे
स्वामने । ७ । ज्ञानका घोडा घोडा चीतकी चाबक । बीनय लगाम
लगाइ । तप तरवार भावका भाला । खिम्या ढाल बंधाइजी ।
सुण नाथ हमारा हुइरे चडाइ चेतन रायरी । ८ । सत संजमका
दीया मोरचा । कीरीया तोप चडाइ । सम्झाय पंचका दारु सीसा ।
तोपा दी बीचलाइजी । सुण० ९ । राम नामका रथ सीणगारचां
। दान दीयाकी फोजा । हरख भावसे हाथी होदे । बेठा पावो मोजाजी
सुण० १० । साच सीपाइ पायक पाला । संबरकी रखवाला
धर्मराय का हुकम हुवा जब । फोजा आगी चालीजी । सु० ना०

धर्मराए तो आग वाणी । पाछे चेतन राजा । म्होराएकी फोज हटाइ । वाजे जसका वाजाजी । सु० ना० १२ । कायर था सो कंपण लागां । सेठा सुरा धीरा । कुमती कुमलाणी इम बोले । मरयां वाप ने वीराजी । सुण नाथ हमारा । आस टूटी नीसासा नाखती । १३ । तीरथ चारु तीर चलाया । सयण २ सयणाता । मरयो मादलीयो । गोठ वीखरी वरताइ सुखसाताजी । सुण नाथ हमारा जीत हुइरे चेतन राएनी । १४ । पहला हणीयो म्होम्हीपतने। पछे सातु भाइ । धीरप दीनी घरमरायजी । फेरी सरव दुवाइनजी । सुणना. । १५ । करम हणीने केवल पाया । मुगत गया ततकाल । जडाव कहे सुमती चेत नर । वरत्यां मंगल मालजी । थें सुणो भव जीवां । सुमती अरावो गुपती गोपवो । १६ ।

। कलस सुमत कुमत नही वाद कीनो । नही खीजाव्यो पीवए । असत कलपना सवंध जोडी । समजायो नीज जीवए । । स० । १ । छासटसाल । चोढाल जोडी । जेपुर स्हर मजारए ।दुतीए सावण सुध पखनी । तेरसने रवीवारए । ते. २ । अकसर पदकाइ ढाल गाथा । वीना वीचारो कोएये । आयो वे तो तियरण जोगे । मीछयां दुकडं मोएये । मी. ३ ।

## ॥ राखीको स्तवन लीख्यते. ॥

देसी । गोपीचंदरा ख्यालरी छे । समगत साची वेन भाणजी । केवल लोछ्यो वीर । तीज राखडी आवसी । मारे ल्यासी लल्यां चीर । सतका सातु वाटसु । जीमाउं खाजा खीररे । मारा केवल वीरा हस २ वांदू थारे राखडी । णांकणी । १ । रख्यांकी

द्यामें भाखीयो । भव जीवारे सेठो हीयामें राखीयो । अणु कंपारे समकित लकसण जाणीए । करुणा करे धर्मी पुरस पीछाणीए । लीजे पोखधरे कीजे खतम खामणा । च्यारु सरणारे पलक पलकमें लीजीए । अभए सुपात्ररे । सब प्राणीने दीजिए । उ. अभए सुपात्र दान मोटा । केवली भाख्यां दोएए । जेपुरमांए जडावकु । सरणा नित नित होए ए । स. १ ।

## श्री मंधीरजीरो स्तवन लीख्यते

देसी गुजराती तागारी. । धन धन खेत्र वीदेह प्रभुजी जडइ वीराजे सायब श्री मींद्र हो राज म्हाराजा । जठ. वारे पुरखदारा ठाठ । प्र. नाटक नाच देव पुलंदरु हो राज । म्हा. १ । सीरपर वीरख आसोक प्र. फीटक सिंघासण पगतल छाजतो हो राज । म्हा. २ । वाणीरा धुकार । प्र. जाण भाद्रवो गहरो गाजतो राज म्हा. २ । सुण समज भव जीव । प्र. देखी पाखंडी दूरासु ला-जता हो राज । म्हा. छोडी मूल मीथ्यात प्र. हाथ जोडीने सेवा साजता हो राज । म्हा. । ३ । दरसणरी अत्रीलाख । प्र. वाल्ही सुणवाने असे जीवडो हो राज । म्हा. । हु छु अधम अनाथ । प्र. भाग वडाने मीलसी पीपडो हो राज । म्हा. ४ । नही जाणु तुम माग । प्र. सनन मुख आइने सेवा किम करु हो राज । म्हा. मारग ओगट घाट प्र. नदीए पूराणी । पाणी किम तीरु हो राज । म्हा. ५ । वालम रया परदेस । प्र. सार सेवगनी वोलो कूण करे हो राज । म्हा. हाजरने दीया तार प्र. दूर रहेसो कोनी किम तीरे हो राज । म्हा ६ । इच्छा हमारी एम । प्र.